

द्रव्यगुणः

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
कल्याण बम्बई

॥श्रीः॥

द्रव्यगुणः

वैद्यमहामहोपाध्याय-श्रीमच्चक्रपाणिदत्त-

विरचितः

कात्यायनगोत्रोत्पन्नपण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्र-
कृतहिन्दीटीकाविभूषितः

संशोधितश्च

मुद्रक व प्रकाशकः-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.

संस्करण–सन् १९९०, संवत् २०४७

मूल्य २० रुपये मात्र

मुद्रक और प्रकाशक-
मे० खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष-श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई-४, के लिये
दे० से० शर्मा, मेनेजर, द्वारा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी, बम्बई-४ में मुद्रित।

DRAVYAGUNA

A

HINDU SYSTEM OF MEDICINE

BY

DOCTOR CHAKRA DUTT

TRANSLATED BY

PUNDIT JWALAPRASAD MISRA

HEAD PANDIT OF KAMASHWAR SANSKRIT PATSHALA

MORADABAD

GANGAVISHNU SHRIKRISHNA DASS,

KALYAN–BOMBAY

भूमिका

मनुष्यों की आरोग्यता के निमित्त वैद्यकशास्त्र की बहुत ही आवश्यकता होती है, कारण कि, द्रव्यों के गुण दोष जानकर उनका व्यवहार करने से शरीर में सहसा रोगों का सञ्चार नहीं होता है, खानपान के यावत्पदार्थ हैं सभी में गुण दोष विद्यमान हैं, इस कारण जो उनको जानकर भोजनादि में प्रवृत्त होता है। वह सुखपाता है, वैद्यकशास्त्र तीन मार्गों में विभक्त है, निघण्ट, निदान, और चिकित्सा निघण्ट में द्रव्यों के गुण दोष, निदान में रोगों के लक्षण और चिकित्सा में रोगों का निवारण औषधियों द्वारा वर्णन किया है, यद्यपि तीनों भाग बड़े ही उपकारी हैं परंतु इनमें पहला "द्रव्यगुण" सबके उपयोगी और वैद्यकशास्त्र में प्रवेश होने का द्वार है। प्रथम औषधी आदि के गुण दोष जानकर फिर निदान से रोग निश्चय कर उसकी दूर करनेवाली औषधी प्रदान की जाती है। इस कारण सबसे प्रथम निघण्ट का अनुशीलन करना उचित है और केवल वैद्यों ही को नहीं गृहस्थ मात्र को निघण्ट का जानना उचित है, जिसे जानकर अहितकारक वस्तुओं का सेवन न करके रोग से बचकर पूर्ण आयु भोग सकता है।

प्रथम ही जब वैद्यकशास्त्र की प्रवृत्ति हुई थी, तब इस भारतवर्ष में महात्मा ऋषियों ने वेदानुसार अनेक ग्रन्थ निर्माण कर इस देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया था, कालक्रम से जब अनय तत्पर यवनों ने इस देश को आक्रमण किया तब सहस्रों ग्रंथ संस्कृत के अग्नि में जला दिये गये, तब इग्लैण्डीय पुरुषों ने उनको पराजित कर यह भारत भूमि कुछ स्वस्थ की और बहुत खोजकर प्राचीन ग्रन्थों का उद्धार किया और पश्चात् इस देशनिवासियों ने भी अनेक यंत्र स्थापित कर प्राचीन ग्रन्थों को खोजकर पुनरुद्धार करना निश्चय किया है और बहुत खोजकर विविध विषयक ग्रंथ प्रकाशित किये जाते हैं।

परंतु सहस्रों वैद्यकशास्त्रों के ग्रन्थों में अभी तक सैकड़ों ग्रंथ भी प्रकाशित नहीं हुए हैं, इस कारण देशभाषा के सहित सर्वसाधरण के उपकार के निमित्त वैद्यक के ग्रन्थ प्रकाशित होने की बहुत ही आवश्यकता है कारण कि, सर्व साधारण को संस्कृत का ज्ञान न होने से शास्त्रों का मर्म समझ में नहीं आता, इस कारण भाषान्तरकर उनको शास्त्रों का आशय समझना बहुत उचित है, जिससे वे अपने पूर्वजों के परिश्रम को देखकर लाभ उठावें।

यही विचार कर हमने वैद्यवर महामहोपाध्याय श्रीमच्चक्रपाणिदत्तविरचित "द्रव्य गुण" का हिन्दीटीकाकर वैश्यवंशावतंस गुणग्राहक "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्राधिपति श्रीयुतसेठखेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशय को सब प्रकार के स्वत्वसहित समर्पण कर दिया है। यद्यपि यह टीका सर्वसाधारण के उपकार के निमित्त ही प्रकाशित किया है परंतु भाषाद्वेषी जो कि भाषा को "मूर्खमनोरंजनी" कहकर भी अपने यावत्कार्य भाषा में ही निर्वाह करते हैं वे महाशय कदाचित् इससे संतुष्ट न होंगे कारण कि ऐसे ही महात्माओं के वसनों में बँधी हुई संस्कृत की अनेक पुस्तकें उपजिह्वकाओं का आहार हो गईं। शेष में पाठक महाशयों से प्रार्थना है कि, आप यदि इसमें कोई भूल चूक पावें तो अपनी उदारता से क्षमाकर हंस के समान गुणग्राहि हों यह ग्रन्थ आपके उपकार के निमित्त ही प्रकाशित किया गया है।

आपका–पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र,
मोहल्लादीनदारपुरा–मुरादाबाद.

श्रीः

अथ द्रव्यगुणानुक्रमणिका

इति द्रव्यगुणानुक्रमणिका समाप्ता

जो शब्द वैद्यक में ऐसे आये हैं कि उनका पर्याय नहीं लिखा है उनको लिखते हैं।

मण्ड–शुद्ध चावलों को चौदह गुने पानी में डालकर औटावे जब चावल सीज जांय तब मांड़ निकाल ले यह शुद्ध मण्ड है।

फांट–एक पल औषधी लेकर अच्छी रीति से कूटकर सोलह तोले जलपात्र में भरकर धरे जब गरम हो जाय तब कुटी औषधी डालकर खूब औटावे फिर उस पानी को कपड़े से छान ले यह फांट है।

मंथ–फाट का भेद है।

जौका मंथ–साबित जौं को भुनाय चून पिसवाले उसे शीतल जल में इस प्रकार मिलावे जिससे न बहुत पतला हो न बहुत गाढ़ा फिर उसमें घी मिलाकर पिये।।

अभिष्यन्दि–जो द्रव्य अपने पिच्छल गुणों के भारीपने से रस ले जानेवाली नाड़ियों को रोककर शरीर को भारी करता है वह अभिष्यन्दि (स्रोतस्रावी) यथा–दही।

प्रमाथी–जो मुख नासिका आदि छिद्रों से कफादि दोष संचय को निकाले वह प्रमाथी है (वच)।

बाजीकरण वीर्य की प्रवृत्त करने वाली औषधी खरैंटी, शतावर, व्यवायी अपक्वही सब देह में फैलनेवाली।

रसायन–जो देह की वृद्धावस्था और ज्वरादि रोग को नाश करे यथा गिलोय रुदन्ती।

स्तम्भन–जो औषधी रूक्षगुण करके शीतवीर्य करके और कसैले रस-युक्त होने से पाक में हलकी हो बादी को उत्पन्न अग्नि को प्रदीप्त करे वह पाचन है यथा नाग केशर और जो दोनों कार्य करे वह दीपन पाचन है यथा चीता।

स्रंसन–जो पीछे पाक होने योग्य वातादि दोष कोष्ठ में आश्रित हुओं को विना ही पाक करे नीचे के भाग में लाकर गुदा के द्वारा निकाले वह स्रंसन यथा-अमलतास का गूदा।

अनुलोमन–जो वातादि दोषों के कोप को शांतकर परस्पर बद्ध वा अवद्धों को करे वह औषधी स्तंभन है यथा कुड़ा और स्योनाक ग्राही जो अग्निदीप्त कर और आमादि का पाचन करे और उष्ण होने से जलस्वरूप कफादि धातुओं के दोष और मल को शोषण करे वह ग्राही यथा गजपीपल सोंठ जीरा।

लेखन–जो रसादि धातु और वात दिदोष को सुखाकर देह से बाहर निकाल दे उसे लेखन कहते हैं यथा वच शहद।

भेदन–जो औषधि वातदि दोष से सूखे मल को पतलाकर गुदा के द्वारा निकालती है वह भेदन है।

रेचन–जो पेट के अन्नादि का उत्तम

पाक होने अथवा कच्चे होने पर अन्नादि तथा वातदि मलों को पतला करके अधोभाग में प्राप्तकर गुदा द्वारा रेचन करै वह रेचक है यथा-निशोत।

संशोधन–जो स्वस्थान में संचित मलों को ऊपर भाग में लाकर मुख नासिका द्वारा निकाले और अधो-भाग में ले जाकर गुदा लिंग द्वारा बाहर निकाले वह संशोधक है। यथा-वंदाल।

छेदन–जो परस्पर मिले कफादि दोषों को अपनी शक्ति से तोड़ पृथक् कर दे वह छेदन है यथा कालीमिर्च शिलाजीत।

वमन–जो पक्वदशा को न प्राप्त हुए पित्तकफ को बल से मुख के मार्ग को निकाले वह वमनकारक है-यथा मैनफल।

दीपनपाचन–जो आम को न पचाकर अग्नि को प्रदीप्त करे वह दीपन है यथा सौंफ और जो आम को पकाकर फिर भिन्न भिन्न कर नीचे गिरावे अथवा वात मूत्रपुरीषादि से बद्ध कोष्ठ को स्वच्छ करके मलादि को गुदाद्वारा प्राप्तकर बाहर निकाले वह अनुलोमन है यथा हरड।

संशमन–जो औषधी प्राणीके भोजन किये पदार्थ को न वमन द्वारा निकाले न दस्त करावे किंतु दोषों में मिलकर उन्हें वहीं शांतकर दे वह शमनसंज्ञक है यथा गिलोय।।

श्रीगणेशाय नमः

द्रव्यगुणः

हिन्दीटीकासमेतः

मंगलाचरणम्

शंकरं शंकरं देवं गिरीशं गिरिजापतिम् ।।
गणेशं विघ्नहर्तारं वन्देऽहं कामदं प्रभुम् ।।१।।
रचितश्चक्रदत्तेन यो द्रव्यगुणसंग्रहः ।।
मया ज्वालाप्रसादेन तस्य व्याख्याभिधीयते ।।२।।

प्रायः पृच्छन्ति यत्रेशास्तद्द्रव्यगुणसंग्रहः ।
धारणस्मरणोन्मुखो यथा स्याल्लिख्यते तथा ।।१।।

वैद्यराज श्रीचक्रदत्तजी सर्व साधारण के ऊपर कृपादृष्टि कर द्रव्य गुण वर्णन करने की इच्छा से कहते हैं कि, मधुरादि रस और यावत्पदार्थ हैं वे सब द्रव्य कहलाते हैं। उन सब द्रव्यों में गुण दोष रहते हैं। वे गुण दोष जानकर प्राणी उनका धारण स्मरण करे तो परम सुख पाता है, आरोग्यता होती है। इसी कारण मैं यथायोग्य उनको लिखता हूं। तात्पर्य यह है कि जब द्रव्य गुण के पूछने पर उसे जानकर अनुकूल आहार विहार करने से मनुष्य चिरकाल तक आरोग्य रह सकता है। इस कारण उसकी जिज्ञासा करना सबको उचित है उन सबके उपकार के निमित्त न बहुत विस्तार और न बहुत संक्षेप से मैं द्रव्यगुण लिखता हूं।।१।।

अथ मधुररसगुणाः

मधुरो धातुविवर्द्धन आयुबलवर्णतृप्तिकृत्कण्ठ्यः ।
सन्धानकृन्मुखादिह्लादकरः स्निग्धगुरुशीतः ॥२॥

सम्पूर्ण रसों में आयुष्यादि के गुण योग से मधुररस प्रथम उच्चारण किया है, इस कारण पहले उसी के गुण कहे जाते हैं। धातु का मधुररस, धातु का बढ़ानेवाला, आयु बल वर्ण का करनेवाला, कण्ठ का हित करनेवाला, घ्राण जिह्वा कंठ ओष्ठका तथा उरक्षत मुख का संधान करनेवाला, चिकना, भारी और ठंडा है, इस कारण वात पित्तका भी जीतने वाला है, शीतलपन इसमें स्वाभाविक है, कहीं उष्ण भी हो जाता है, सो संयोग से होता है, जैसा चरक में लिखा है 'मधुरं किञ्चिदुष्णं स्याद्यथाचानूपमामिषम्' मधुर रस अनूप देश के मांस की समान कुछ गरम है। यद्यपि निर्गुण होने से रसों में गुण नहीं, परंतु उपचार से द्रव्यगुण ही रसों में निर्देश किये जाते हैं॥२॥

अम्लोरुचिदीप्तिकरो मनइन्द्रियबोधनो हृदयतर्पी ।
वातार्जवकृद्बल्यः कण्ठदहः स्निग्धलघुरुष्णः ॥३॥

अम्लरस रुचि करनेवाला, दीप्तिकारक, मन इंद्रियको बोधन करनेवाला, हृदय को तृप्तिकारक, पवनका अनुलोम करनेवाला, बलकारक, कण्ठ में दाह करनेवाला, स्निग्ध लघु और उष्ण है॥३॥

लवणः क्लेदनः पाचनो दीपनो विच्छेदनः सरस्तीक्ष्णः ।
कफनिष्यन्दी रुचिकृत् स्निग्धगुरूष्णो मुखविशोधी ॥४॥

लवण रस क्लेशकारक, पाचक, दीपन, भग्नकारक, छेदन करनेवाला, सारक, तीक्ष्ण, कफस्रावक, रुचिकारक, स्निग्ध, गुण, उष्ण मुखका शोधन करनेवाला है, सैंधे में शीतलता जल की अधिकता से है और 'कट्वम्ललवण आग्नयाः' इति सुश्रुतोक्तेः॥४॥

कटुरास्यंशोधयति घ्राणाक्षिविरेचनः क्रिमीन्हन्ति ।
रसनोद्वेगकृदुष्णोलघुरूक्षःकुष्ठहारी च ॥५॥

कटु रस मुखशोधक नासिका नेत्रका विरेचक, क्रिमिहारी, जिह्वा को उद्वेग करनेवाला, उष्ण, लघु, रूखा, कुष्ठ हरने वाला है॥५॥

तिक्तोनरोचते स्वयमरोचकघ्नो विषघ्नश्च ।
दीपनपाचनशोधनरूक्षः शीतोलघुश्चापि ॥६॥

तिक्त रस स्वयं नहीं रुचता है, परंतु अरुचि और विषको दूर करता है। दीपन, पाचन, शोधन करनेवाला, शीतल और हलका है॥६॥

तुवरोहिमगुरुरूक्षः स्तम्भीशमनश्च पीतनोग्राही ।
व्रणपाकार्तिक्लेदान्निहन्ति कण्ठंचबध्नाति ॥७॥

कषाय रस ठंडा भारी रूखा स्तम्भन करनेवाला, शमनकारक, ग्राही, व्रणपाक, दुःख, क्लेदको दूर करनेवाला और कण्ठको बांधने वाला है और 'रूक्षः शीतो लघुश्चेति' ऐसा जो चरक में लिखा है और यह गुरु लिखा है सो विरोध नहीं आसक्ता अकारका प्रश्लेष करने से अलघु होकर भारीका ही अर्थ होता है, वाग्भट्ट में भी लिखा है "कषायःकफपित्तघ्नो गुरुबस्तिविशोधनः" हरीतकी को जो उष्ण लिखा है और भेदक लिखा है वह अपवादतासे जानना उत्सर्गतासे नहीं॥७॥

शीतं कफमारुतकृद्वीर्यं गुरुपित्तनाशनं बल्यम् ।
उष्णंकफवातहरं पित्तकरं लघुवृष्यं च ॥८॥

रसके गुणोंके अनन्तर वीर्य कथन करते हैं वीर्य मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रुक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदों से आठ प्रकारका है, किसी किसी के मत में शीत और उष्ण इन भेदों से दो प्रकार का है, शीतरस कफ और पवनका करनेवाला है। गुरु पित्तनाशक तथा बलकारी है, उष्ण रस कफवात का हरनेवाला, पित्तकारी, लघु और बल्य है॥८॥

शीतं वीर्येणयद्द्रव्यं मधुरं रसपाकयोः ।
तयोरम्लं यदुष्णं च यच्चोक्तं कटुकं तयोः ॥९॥

जो द्रव्य वीर्य में शीतल है, वह रस पाक में मधुर है और उन रस और पाक में जो अम्ल है, वह वीर्य में उष्ण जानना और जो द्रव्य रस पाक में कटु है, वह वीर्य में उष्ण जानना॥९॥

कटुर्विपाकः शुक्रघ्नोबद्धविड्वातलोलघुः ।
स्वादुर्गुरुः सृष्टमलोविपाकः कफशुक्रलः ।
पाकोऽम्लः सृष्टविण्मूत्रः पित्तकृत् शुक्रनुल्लघुः ॥१०॥

अब विपाकका स्वरूप निरूपण करते हैं। जठराग्नि के योग से जो रस

का परिणाम होता है। उसे विपाक कहते हैं। कटु विपाक वीर्यका नाशक, विष्ठा का बांधनेवाला, पवन का करनेवाला तथा लघु होता है, मधुर पाक गुरु, मलनिस्सारक, कफ और शुक्रकारक होता है। अम्ल पाक विष्ठा का निकालने वाला मूत्रसारक पित्त करनेवाला शुक्र का नाशक और लघु होता है।।१०।।

शालयोमधुराः शीता लघुपाकाबलप्रदाः ।
पित्तघ्नाल्पानिलकफाः स्निग्धबद्धाल्पवर्च्चसः ।।११।।

शालि धान्य मधुर, शीत और परिपाक में लघु बल देनेवाले पित्तनाशक थोड़ा सा वात और कफ करनेवाले स्निग्ध मलबंधक और अल्पमल बढ़ाने वाले हैं।।११।।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नश्चक्षुष्यः शुक्रमूत्रलः ।
तृष्णाघ्नोबलकृत्स्वर्य्यो हृद्यस्तदनुचापरे ।।१२।।

रक्त शालि त्रिदोष दूर करनेवाले चक्षुको हितकारक मूत्र तथा वीर्य के करनेवाले, तृष्णानाशक बलकारी स्वरकारी हृदय को हितकारी हैं, दूसरे धान्य गुणों में इनसे हीन वीर्यवाले हैं।।१२।।

षष्टिकोमधुरः शीतो लघुवृष्यस्त्रिदोषहा ।।१३।।

सांठीके चावल ठंडे मधुर हलके वीर्यकारी और त्रिदोषनाशक हैं।।१३।।

मधुरश्चाम्लपाकश्चव्रीहिः पित्तकरोगुरुः ।
बहुमूत्रपुरीषोष्मा त्रिदोषस्त्वेवपाटलः ।।१४।।

व्रीहि मधुर अम्लपाकी पित्तकारी और गुरु हैं, बहुत मूत्रपुरीषके करनेवाले उष्ण त्रिदोषकारी उष्ण वीर्य करनेवाले पाटल धान्य हैं।।१४।।

धान्यं शरद्ग्रीष्मभवं पाकेऽम्लं पित्तकृद्गुरु ।।१५।।

जो शरद् और ग्रीष्म में होनेवाले धान्य हैं वे पाक में अम्लपित्तकारी और गुरु हैं।।१५।।

धान्यं सर्वं समातीतं पथ्यं लघ्वन्यथानवम् ।
ततःपरं लघुतरं रूक्षं वातप्रकोपणम् ।।१६।।

और एक वर्षके पुराने होकर सब धान्य पथ्य और लघु हो जाते हैं नवीन धान्य इससे विपरीत गुणोंवाले होते हैं और इसके उपरान्त अधिक पुराने और भी लघुरूक्ष और वातके कोप करनेवाले हो जाते हैं।।१६।।

दग्धायामवनौजाताः शालयोलघुपाकिनः ।
कषायाबद्धविण्मूत्रा रूक्षाःश्लेष्मापकर्षिणः ॥१७॥

दग्ध पृथ्वी में उत्पन्न हुए धान्य शीघ्रपाकी होते हैं कसेले विट्सूत्र के बांधनेवाले रूखे, श्लेष्मा को दूर करते हैं॥१७॥

स्थलजाः कफपित्तघ्नाः कषायाः कटुकानुगाः ।
किञ्चित् सतिक्तमधुराः पवनानलवर्द्धनाः ॥१८॥

जाङ्गल भूमि में उत्पन्न हुए कफपित्तको दूर करते हैं पचने में चरपरे किंचित् मधुर बात तथा अग्नि के वढ़ानेवाले हैं॥१८॥

रोप्यातिरोप्यालघवः शीघ्रपाकागुणोत्तराः ।
अदाहिनोदोषहरा बल्यामूत्रविवर्द्धनाः ॥१९॥

जो एकवार लगाकर फिर दूसरी जगह लगाये जाते हैं वे लघु शीघ्र पाक होनेवाले गुणों में श्रेष्ठ दाह नहीं करते दोषोंको हरनेवाले बलकारक और मूत्रके बढ़ानेवाले हैं॥१९॥

शालयश्छिन्नरूढायेरूक्षास्ते बद्धवर्च्चसः ।
तिक्ताःकषायाः पित्तघ्नालघुपाकाः कफापहाः ॥२०॥

जो धान्य एकवार छिन्न करके फिर बढ़ाये गये हैं वे रूखे और मलवर्द्धक हैं तथा तीखे कसेले पित्तनाशक लघुपाकी कफनाशक हैं॥२०॥

गोधूमःस्थैर्यकृद्वृष्यः स्निग्धःशीतः सरोगुरुः ।
सन्धाता बृंहणोबल्यो जीवनोवातपित्तहा ॥२१॥

गेहूं स्थिरता करनेवाले शुक्र बढ़ानेवाले, स्निग्ध, शीतल, सारक और गुरु हैं सन्धान करनेवाले बृंहण बलदायक जीवनदायक वातपित्त के हरनेवाले हैं॥२१॥

यवः स्वादुः कषायश्च कफपित्तहरोहिमः ।
व्रणेषु सर्वदापथ्यस्तिलवत् पाकतः कटुः ।
बहुवातपुरीषश्च मेदोवाततृषापहः ।
वृष्योबल्योवद्धमूत्रस्थैर्याग्निस्वरवर्णकृत् ॥२२॥

यव स्वादु कसेला कफपित्त हरनेवाला ठंडा है। व्रणों में तिलकी समान सदा पथ्य है जैसे व्रणके ऊपर तिलका तेल वातकफ में हितकारी है इसी प्रकार यव भी सब अवस्थाओं में व्रण में हितकारी है जैसा कहा

है "तिलवत् यवकल्कं तु केचिदाहुर्मनीषिणः । अविदग्धंतु शमयेद्वि-दग्धं पाचयत्यपि ।। पक्वं भिनत्ति मन्यं च शोधयेद्रोपयेदपि" यवका कल्क तिलकी समान है ऐसा किन्ही महात्माओं का मत है यह अविदग्ध व्रणको शान्त करता है विदग्धको पचा देता है पक्के को फोड़कर शोधन रोपण कर देता है कोई व्रण पर यवका मण्ड सदैव अच्छा समझते हैं इसी कारण सुश्रुत में हित अहित व्रणहित वर्ग में यवका पाठ किया है। कोई इसको पाक में कटु कहते हैं कटुपाकित्व होने से लघुत्व कहा है कुत्सित बहुत वात और पुरीषका करनेवाला मेदकी वात निवारण में समर्थ, तृषानाशक, वीर्यवर्द्धक बलकारक, मूत्रका बांधनेवाला स्थिरता अग्निको और स्वरवर्ण का करनेवाला है।।२२।।

श्यामकः शोषणोरूक्षो वातलः श्लेष्मपित्तहा ।
तद्वच्चकङ्गुनीवारकोरदूषाः प्रकीर्तिताः ।।२३।।

श्यामक (समा) सोखनेवाला, रूखा वातकारी श्लेष्म पित्तका हरनेवाला है और इसी के समान गुणकारी कगनी निवार कोदौं भी हैं।।२३।।

मुद्गःकषायोमधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः ।
ग्राहीशीतः कटुः पाके चक्षुष्योनातिवातलः ।
प्रधानाहरितास्तत्रबल्या मुद्गरसाः स्मृताः ।।२४।।

मूंग कसेली मधुर कफपित्त रक्तकी नाशनेवाली लघु है मलरोधक शीतल पचने में कटु नेत्रों को हितकारी किञ्चित् वातवर्धक है उसमें हरी मूंग प्रधान हैं और मूंगका रस बलकारक है।।२४।।

मसूरोमधुरः शीतः संग्राही कफपित्तहा ।।२५।।

मसूर मधुर शीत सग्राही और कफपित्त हरनेवाली है।।२५।।

माषोबहुमलोवृष्यः स्निग्धोष्णमधुरोगुरुः ।
वातनुद्बृंहणोबल्यो मेदोमांसकफप्रदः ।।२६।।

उड़द बहुत मलके करनेवाले वीर्यवर्द्धक स्निग्ध उष्ण मधुर गुरु हैं वातको दूर करनेवाले पुष्ट करनेवाले बलदायक भेद मांस और कफके बढ़ाने वाले हैं।।२६।।

राजमाषः सरोरुच्यः कफशुक्राम्लपित्तनुत् ।
तत्स्वादुर्वातलोरूक्षःकषायोविषदोगुरुः ।।२७।।

राजमाष सारक रुचिकारक कफवीर्य तथा अम्लपित्तके दूर करने वाले हैं सो पाक में मीठे वातकारक रुखे कसैले रसके प्रकट करनेवाले गुरु हैं।।२७।।

चणकोवातलः शीतः कफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत् ।।२८।।

चना वात करनेवाला ठंडा है कफ रुधिर पित्त और पुरुषता नाशक है।।२८।।

सतीलावातलारक्तपित्तघ्ना बद्धवर्च्चसः ।।२९।।

मटर वादी रक्तपित्तका नाश करनेवाली, तथा मलको बांधने वाली है।।२९।।

तुवरी कफपित्तघ्नी कलायश्चातिवातलः ।।३०।।

अरहर कफपित्तनाशक है और कलाय अधिक वात करनेवाली है।।३०।।

मकुष्ठः शीतलोग्राही कफपित्तज्वरापहः ।।३१।।

मोठ शीतल ग्राही कफ पित्त और ज्वरको हरनेवाली है।।३१।।

कुलत्थः कफवातघ्नोग्राह्युष्णस्तुवरःकटुः ।
शुक्राश्मरीगुल्मकासश्वासानाहान् सपीनसान् ।
हन्त्यर्शोमेदसोहिक्कां रक्तपित्तकरश्चसः ।।३२।।

कुलथी कफवातनाशक ग्राही गरम कषाय कटु है वीर्य की पथरी, गुल्म, कास, श्वास, आनाह, पीनस, अर्श, मेदरोग, हिचकी इन्हीं को हरती है तथा रक्तपित्त को करनेवाली है।।३२।।

वन्यः कुलत्थस्तद्वच्च विशेषान्नेत्ररोगनुत् ।।३३।।

इसी प्रकार वनकी कुलथी है वह विशेषकर नेत्ररोगको दूर करती है।।३३।।

काकाण्डोमात्मगुप्तानां माषवत् फलमादिशेत् ।।३४।।

शूकशिम्बी कौंचशिम्बीका भी फल उड़द की समान है ऐसा जानना।।३४।।

ईषत्कषायोमधुरःसतिक्तः संग्राहकः चित्तकरस्तथोष्णः ।
तिलोविपाके मधुरोबलिष्ठःस्निग्धोव्रणालेपनएव पथ्यः ।
दन्त्योग्निमेधाजननोऽल्पमूत्रस्त्वच्योऽतिकेश्योऽनिल्हा
गुरुश्च ।।३५।।

कुछ कसेला मधुर तीखा संग्राही पित्तकारक उष्ण और विपाक में

मधुर ऐसे तिल होते हैं, यह बलकारक, स्निग्ध, व्रण लेपन में पथ्य, दांतों को हितकारक अग्नि और मेदाको उत्पन्न करनेवाला थोड़ा मूत्र लानेवाला त्वचाको और केशों को हितकारी वातहर और गुरु है।।३५।।

तिलेषु सर्वेष्वसित:प्रधानं मध्य:सितोहीनतरास्त-थान्ये ।।३६।।

सब तिलों में काले तिल प्रधान हैं, श्वेत मध्यम और पीत हरित रंग के गुणों में इससे हीन हैं।।३६।।

शिम्बास्तुविविधारूक्षाबलघ्ना: स्वादुशीतला: ।
विदाहिनोग्निशमनाविज्ञेया: कफनाशना: ।
शुक्रदृष्टिक्षयकरा: कटुपाका: प्रमाथिन: ।।३७।।

और नाना प्रकारके शिम्बीधान्य रूखे बलनाशक मधुर और शीतल होते हैं, यह विदाही अग्नि के शान्त करनेवाले और कफनाशक जानने, वीर्यविकार क्षय करनेवाले पाक में कटु और दोषों को निकालनेवाले हैं।।३७।।

सितासिता:पीतकरक्तवर्णाभवन्तियेऽनेकविधास्तुशिम्बा: । यथोदितस्तेगुणत: प्रधानाज्ञेयास्तथोष्णा रसपाक-योश्च ।।३८।।

श्वेत काले पीले लाल वर्णके अनेक प्रकारके शिम्वी धान्य होते हैं, वे यथोक्त कहे हुए गुणसे प्रधान हैं वे रसवीर्य विपाक के गुणों से एक दूसरे से श्रेष्ठ हैं अर्थात् काले से श्वेत पीले से लाल और काले से पीले गुण में श्रेष्ठ हैं, और रसपाक में उष्ण हैं।।३८।।

सहाह्वयं मूलकजाश्चशिम्बा: कुशिम्बवल्लीप्रभवाश्च-शिम्बा: । ज्ञेयाविपाके मधुरारसे च बलप्रदा: पित्तनिब-र्हणश्च ।।३९।।

मुद्‌गपर्णी माषपर्णी मूलकशिम्बी कुसुमवल्ली से उत्पन्न हुए शिंब यह विपाक में मधुर रसवाले जानने, बल देनेवाले तथा पित्तके दूर करनेवाले हैं।।३९।।

विदाहवन्तश्च भृशं विरूक्षा विष्टभ्य जीर्यन्त्यनिलप्रदाश्च । रुचिप्रदाश्चैव सुदुर्जराश्च सर्वेस्मता वैदलिकाश्च शिम्बा: ।।४०।।

यह विदाही अत्यंत रूखे देर से जीर्ण होनेवाले, वातवर्द्धक रुचि कठिनता से जीर्ण होनेवाले, वैदलिक अर्थात् जिन्हों की दाल बनाई जाती है शिम्बी धान्य इतने गुणयुक्त हैं।।४०।।

षष्टिकायवगोधूमा लोहितायेच शालयः ।
मूद्गाढकीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ।।४१।।

सांठी जौ गेहूँ लाल चावल मूंग अरहर मसूर यह धान्यों में श्रेष्ठ कहे हैं।।४१।।

कफवातहरस्तीक्ष्णः सिद्धार्थोरक्तपित्तकृत् ।
स्निग्धोष्णः क्रिमिकुष्ठघ्नः कटुकोरसपाकतः ।।४२।।

कफवात को हरनेवाला तीक्ष्ण रक्तपित्त को करनेवाला श्वेत सरसों होता है, यह स्निग्ध उष्ण कृमि और कुष्ठ को दूर करनेवाला, रसपाक में कटु है।।४२।।

तद्गुणाराजिकावाच्यात्तद्गुणोऽन्योपिसर्षपः ।
रसेपाकेच कटुकःकुसुम्भः कफनाशनः ।।४३।।

वही गुण राई में है यही गुण दूसरे प्रकार के सरसों में होते हैं कुसुम्भ रस पांक में कटु और कफनाशी है।।४३।।

अनार्त्तवं व्याधिहतमपर्य्यागतमेवच ।
अभूमिजं नवंचापिनधान्यं गुणवत् स्मृतम् ।।४४।।

वे ऋतु में उत्पन्न हुए व्याधि से मारे हुए कच्चे ऊपर अपत्यकादि विषैली भूमि में उत्पन्न हुए और नये धान्य गुण वाले नहीं होते हैं।।४४।।

यवगोधूममाषाश्च तिलाश्चाभिनवाहिताः ।
पुराणानीरसारूक्षानतथार्थकरामताः ।
विदाहिगुरुविष्टम्भिविरूढं दृष्टिदूषणम् ।।४५।।

इति धान्यवर्गः

जौ गेहूं उड़द तिल यह नये अच्छे होते हैं यह पुराने पड़कर नीरस सूखे होकर उतने गुणयुक्त नहीं रहते हैं, और अंकुरित हुए धान्य विदाहि भारी मलरोधक, तथा दृष्टि को दूषित करनेवाले हैं।।४५।।

इति धान्यवर्गः

अथ मांसवर्गः

सर्वं वातहरं मांसं वृष्यं बल्यं स्मृतंगुरु ।
प्रीणनं बृंहणं हृद्यं मधुरं रसपाकयोः ॥१॥

संपूर्ण मांस वातहारक, पुष्टिकर्त्ता बलवर्द्धक तृप्तिकारक भारी पुष्टिकर्त्ता हृदय को हितकारी रस तथा पाक में मधुर हैं॥१॥

हरिणः शीतलोबद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः ।
मधुरोमधुरः पाके सुगन्धिर्दोषनाशनः ॥२॥

हरिण का मांस शीतल मलबंधक मूत्ररोधक दीपन लघु है, मधुर है पाक में भी मधुर सुगन्धि का करनेवाला त्रिदोष का नाशक है॥२॥

कषायोमधुरोहृद्यः पित्तासृक्कफवातहा ।
संग्राहीरोचनोबल्यस्तेषामेणोज्वरापहः ॥३॥

काले हिरण का मांस कसेला मधुर रक्तपित्त निवारक कफ निवारक, हृदय को हितकारी संग्राही रुचि कारक बलदायक ज्वर का हरने वाला है॥३॥

शशःस्वादुःकषायश्चलघुः पित्तकफापहः ।
नातिशीतलवीर्यत्वाद्वातसाधारणोमतः ॥४॥

खरगोश का मांस स्वादिष्ठ, कसैला, लघु पित्त और कफ का हरनेवाला है अत्यंत शीत वीर्य होने से वायु को नहीं बिगाड़ता वात में साधारण है॥४॥

नातिशीतंगुरुस्निग्धं मांसमाजमदोषलम् ।
शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दिबृंहणम् ॥५॥

बकरे का मांस अधिक शीतल नहीं है, भारी स्निग्ध और दोषरहित है, मनुष्य के शरीर के सदृश धातुओं की समता के कारण अभिष्यंदि नहिं उत शरीर को पुष्ट करनेवाला है॥५॥

मेषस्य मधुर मांसं पित्तश्लेष्महरं गुरु ॥६॥

मेंढ़े का मांस मधुर पित्त और श्लेष्मा का जीतनेवाला है भारी है॥६॥

मेदः पुच्छोद्भवं वृष्यमौरभ्रसदृशं गुणैः ॥७॥

मेदपुच्छ नाम मेष का मांस हानि दुम्बे का मांस अर्थात् पुच्छ देश में

लम्बायमान मांसपिण्ड पुरुषत्व का बढ़ानेवाला, गुणों में बकरे के समान है।।७।।

माहिषं तर्पणं वृष्यं स्निग्धोष्णं मधुरं गुरु ।
निद्रापुंस्त्वबलस्तन्यवर्धनंमांसदार्ढ्यकृत् ।।८।।

महिष का मांस तृप्तिकारक, वीर्य वर्द्धक स्निग्ध उष्ण और मधुर तथा भारी है, निद्राकारक पुरुषता बल और स्तनों में दूध बढ़ानेवाला है, तथा शरीर के मांस को दृढ़ करनेवाला है।।८।।

शुष्ककासश्रमात्यग्निविषमज्वरपीनसान् ।
कार्श्यं केवलवातांश्च गोमांसं स नियच्छति ।।९।।

सूखी खांसी श्रम अग्नि विषम ज्वर पीनस कृशता और केवल वात रोगों को गो मांस दूर करता है।।९।।

हयमांसं बलकरमुष्णं मारुतनाशनम् ।।१०।।

घोड़े का मांस, बलकारक, उष्ण वात का नाश करनेवाला है।।१०।।

गवयस्यापिमांसं तु स्निग्धंकासनिबर्हणम् ।
रसेपाके च मधुरं व्यवायस्यतुवर्द्धनम् ।।११।।

गवय का मांस स्निग्ध और कास रोग को दूर करनेवाला है रस और पाक में मधुर तथा मैथुन शक्ति बढ़ानेवाला है।।११।।

खड्गिमांसं कफघ्नं तु कषायमनिलापहम् ।।
पैत्र्यंपवित्रमायुष्यं बद्धमूत्रविरूक्षणम् ।।१२।।

गैंड़े का मांस कफनाशक कसैला अनिल को दूर करनेवाला है, पितरों का हित कारक यानि पितृकर्म में पवित्र अवस्था स्थापक, मूत्ररोधक और रूखा है।।१२।।

वराहपिशितंबल्यंरोचनंस्वेदनंगुरु ।
स्नेहनं बृंहणंवृष्यं श्रमघ्नमनिलापहम् ।।१३।।

वराह का मांस बलकारक रोचक, स्वेदकारक, भारी है स्नेहन, पुष्टिकर्त्ता, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, श्रम और वातनाशक है।।१३।।

लावोलघुःकटुर्ग्राहीस्वादुःशीतस्त्रिदोषनुत् ।।१४।।

लवा पक्षी का मांस लघु कटु ग्राही स्वादु शीतल और त्रिदोष को दूर करनेवाला है।।१४।।

तित्तिरिः सर्वदोषघ्नग्राहीवर्णप्रसादनः ।
ईषद्गुरूष्णमधुरोवृष्योमेधाग्निवर्द्धनः ॥१५॥

तीतर का मांस सब दोष को दूर करनेवाला ग्राही और वर्ण का प्रसन्न करनेवाला है, कुछ मांस भारी गरम मधुर वीर्यवर्द्धक बुद्धि और अग्नि का बढ़ानेवाला है।।१५।।

पित्तश्लेष्मविकारेषुसरक्तेषु कपिञ्जलाः ।
मन्दवातेषु शस्यस्ते शैत्यमाधुर्यलाघवात् ॥१६॥

कपिञ्जल (गोरा तीतर) का मांस पित्तकफ के विकार में रक्तविकार में तथा मन्दवात में शीत मधुर और लघु होने से हितकारी है।।१६।।

ईषदुष्णागुरुस्निग्धाबृंहणावर्त्तकाः स्मृताः ॥१७॥

कुछ गरम और भारी स्निग्ध और बृहण वर्तक का मांस होता है।।१७।।

क्रकरालघवोहृद्यास्तथाचैवोपचक्रकाः ।
वातपित्तहराबल्या मेधाग्निबलवर्द्धनाः ॥१८॥

क्रकर लवा की समान कुछ स्थूल उसका मांस लघु, हृदय को हितकारक होता है, चकवा और उपचक्र के मांस भी इसी प्रकार वातपित्त के हरनेवाले बल के बढ़ानेवाले बुद्धि अग्नि के बढ़ानेवाले हैं।।१८।।

बर्हीदृक्श्रोत्रमेधाग्निवयोवर्णस्वरायुषाम् ।
हितोबल्योगुरुश्चोष्णोवातघ्नोमांसशुक्रलः ॥१९॥

मोर का मांस दृष्टि श्रोत्र बुद्धि अग्नि वय वर्ण स्वर आयु का बढ़ानेवाला हितकारी बलदायक भारी उष्ण और वातनाशक और वीर्यवर्द्धक है।।१९।।

पारावतोगुरुः शीतोरक्तपित्तहरःस्मृतः ।
रसेपाके च मधुरःकषायोविषदोपि च ॥२०॥

कबूतर का मांस भारी शीतल रक्तपित्त हरनेवाला है, रसपाक में मधुर कसेला तथा विषद स्पष्ट होता है।।२०।।

तेभ्योलघुतराःकिञ्चित् कपोतावनवासिनः ।
शीताःसंग्राहिणश्चैव स्वल्पमूत्रकराश्चते ॥२१॥

जंगली कबूतर के मांस का गुण कुछ उनसे न्यून हैं, वे ठंडे संग्राही

और स्वल्प मूत्रकारक हैं। जंगली पाण्डु वर्ण का कपोत (गयदास का मत) कसैला स्वादु और नूनखरा है लोकमत में जङ्गली कबूतर का मांस अत्यंत उष्ण है और रंगीन कबूतरों का मांस कुछ न्यूनोष्ण है। यह प्रत्यक्ष मांस भक्षियों का कहा हुआ है।।२१।।

कषायः स्वादुलवणा गुरुःकाणकपोतकः ।।२२।।

जङ्गली पांडु वर्ण कपोत का मांस कषैला, स्वादु, खारा और गुरु है।।२२।।

कुक्कुटोबृंहणो वन्यः स्वेदस्वरबलावहः ।
स्निग्धोष्णोनिलहावृष्योग्राम्यस्तद्वद्गुरुस्तुसः ।।२३।।

जङ्गली मुर्गे का मांस पुष्टिकर्त्ता स्वेद, स्वर और बल को देनेवाला है और ग्राम्य मुरगे का मांस स्निग्ध उष्ण वातनाशक वृष्य और भारी है।।२३।।

कुलिङ्गोमधुरः स्निग्धः कफशुक्रविवर्द्धनः ।
सन्निपातहरोवेश्मकुलिंगस्त्वतिशुक्रलः ।।२४।।

कुलिंग यानि (बटेर) चिड़ैया का मांस मधुर स्निग्ध कफ और वीर्य का बढ़ानेवाला सन्निपात का हरनेवाला है और घर का कुलिंग अधिक वीर्य करता है।।२४।।

शुकमांसं कषायाम्लं विपाके रूक्षशीतलम् ।
शोषकासक्षयहितंसंग्राहिलघुदीपनम् ।।२५।।

तोते का मांस कसैला अम्ल विपाक में रूखा और शीतल है श्वास रोग, खांसी, क्षय में हितकारक संग्राहि लघु और दीपन है।।२५।।

गुरूष्णस्निग्धमधुराः स्वरवर्णबलप्रदाः ।
बृंहणाः शुक्रलाश्चोक्ता हंसाः पवननाशनाः ।।२६।।

हंसों के मांस भारी स्निग्ध मधुर स्वर वर्ण बल के देनेवाले, बृंहण वीर्य वर्द्धक वात के हरनेवाले हैं।।२६।।

शरारिबककादम्बबलाकाः पवनापहाः ।
स्निग्धाःसृष्टमलावृष्या रक्तपित्तहराहिमाः ।।२७।।

शरारी और बक कलहंस बलाका का मांस वातजित् स्निग्ध मलसारक शीघ्र शुक्र जनक रक्तपित्त हरनेवाला और शीतल है।।२७।।

कूर्मादयः स्वादुपाकरसाबल्यानिलापहाः ।
शीताः स्निग्धाहिताः पित्तेवर्चस्याः श्लेष्मवर्द्धनाः ॥२८॥

कुर्मादिक स्वादु पाक रसवाले बलकारक वातजित् शीतल, स्निग्ध, हितकारी, पित्त में हितकारी मलकारक श्लेष्मवर्द्धक हैं॥२८॥

कृष्णः कर्कटकस्तेषां बल्यः कोष्णोऽनिलापहः ।
शुक्रसन्धानकृत् सृष्टविण्मूत्रोऽनिलपित्तहा ॥२९॥

काला कैंकड़ा बलकारक कुछ उष्ण, वातजित् वीर्य का संधान करनेवाला विष्ठा मूत्र को लानेवाला वातपित्त हरनेवाला है॥२९॥

गोधाविपाकेमधुरा कषायकटुकारसे ।
वातपित्तप्रशमनीबृंहणी बलवर्द्धिनी ॥१॥

गोधा (गोय) का मांस पाक में मधुर कसेला है रस में कटु है वातपित्त का शांत करनेवाला बृंहण और बल को बढ़ानेवाला है॥ १॥

शल्यकः स्वादुपित्तघ्नोलघुशीतोविषापहः ॥२॥

शल्यक (सेही) का मांस स्वादु पित्त का नाश करनेवाला लघु शीतल और विषका नाशक है॥२॥

मूषिकोमधुरःस्निग्धोव्यवायीशुक्रवर्द्धनः ॥३॥

मूषक का मांस मधुर स्निग्ध सब शरीर में व्याप्त होकर पकनेवाला तथा वीर्य का बढ़ानेवाला है॥३॥

दुर्नामानिलदोषघ्नाः क्रिमिदूषीविषापहाः ।
चक्षुष्यामधुराःपाके सर्पा मेधाग्निवर्द्धनाः ॥४॥

दुर्नाम (बवासीर) वात दोष का हरनेवाला, कृमि दूर करनेवाला, गरदोष (संयोगज) विष का नाशक है, नेत्रों को हितकारी पाक में मधुर बुद्धि और अग्नि का बढ़ानेवाला सर्प का मांस होता है॥४॥

जंघालावातपित्तघ्नास्तीक्ष्णावस्तिविशोधनाः ।
कषायमधुराश्चैव लघवोबलवर्द्धनाः ॥५॥

मांस दो प्रकार के होते हैं, जाङ्गल और अनूप, जाङ्गल वर्ण आठ प्रकार का है। जंघाल (शीघ्रगामी हिरण आदि) विष्किर (चोंच चरण से बखेरकर खानेवाले, वतक मोर मुरंगा आदि) प्रतुद (बहुत प्रकार प्रहार करनेवाले मैना भृङ्गराज तोते आदि गुहावासी) (सिंहव्याघ्रादि)

प्रसह्य (हठ से खैंचकर खानेवाले काक कुरर कङ्क गृध्रादि) पर्णमृग (पत्तेवाले वृक्षों में विचरने वाले वानर वनमानस आदि वृक्ष सूषिक आदि) विलेशय (शल्यक गोयमूसा आदि) ग्रामचराः (गांव में रहनेवाले छागमेषादि) और अनूप पांच प्रकार का है कूलचर (पानी के समीप में फिरनेवाले, हाथी गवय महिष आदि) प्लव (जल में तैरनेवाले हंस सारस क्रौञ्च चकवा चकवी आदि) कोषस्थ (कोष में स्थित होनेवाले शंखशुक्ति शम्बूक आदि) पादवन्ताः (चरणवाले कूर्म कुंभीर कर्कट आदि) और मत्स्य प्रसिद्ध हैं जाङ्गल जीवों का मांस वातपित्त का दूर करनेवाला तीक्ष्ण तथा बस्ती का शुद्ध करनेवाला है, कसेला मधुर लघु और बल का बढ़ानेवाला है॥५॥

विष्किरामधुराः शीताः कषाया लघुपाकिनः ॥६॥

विष्किर जीवों का मांस मधुर शीतल कसेला लघुपाकी है॥६॥

प्रतुदाः कषायमधुराः श्लेष्मपित्तहराहिमाः ।
बद्धमूत्रमलारुक्षाः फलाहारानिलावहाः ॥७॥

प्रतुद जीवों का मांस कसेला मधुर कफ पित्त का हरनेवाला ठंडा है, मूत्रमल का बांधनेवाला रूखा हैं फल का आहार पवन का करने वाला है॥७॥

गुहाशयावातहरा नेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥
हितागुरूष्णमधुराः स्निग्धामांसाशिनोधिकम् ॥८॥

गुहा में शयन करनेवाले जीवों का मांस वातहारक नेत्र तथा गुह्य स्थान में विकार वाले मनुष्यों को हितकारी गुरु गरम मधुर स्निग्धता यह मांस भक्षियों को अधिक करता है॥८॥

प्रसहाः स्वादुवीर्योष्णास्तेषां मांसाशिनस्तुये ।
तेशोषभस्मकोन्मादे हिताः क्षीणेविशेषतः ॥९॥

प्रसह जीवों का मांस स्वादु वीर्य में उष्ण है जो इनका मांस खाते हैं उनका शोष भस्मक उन्माद और क्षीण रोग विशेष करके दूर होता है॥९॥

दृक्शुक्रास्त्रहितः पर्णमृगः स्वादुर्गुरुस्तथा ।
सृष्टमूत्रपुरीषश्च कासार्शःश्वासनाशनः ॥१०॥

पर्ण मृगवाले जीवों का मांस दृष्टि, शुक्र, रक्त इन्हों को हितकारी स्वादु और भारी है मूत्र पुरीष का प्रवर्त्तक है खांसी, बवासीर और श्वास रोग को दूर करनेवाला है॥१०॥

बिलेशयावातहरा बृंहणारसपाकयोः ।
मधुरावद्धविण्मूत्रा वीर्योष्णाश्च प्रकीर्त्तिताः ॥११॥

विल में शयन करनेवाले जीवों का मांस वातहारक है और पुष्टिकर्त्ता मांसबर्द्धक मधुर विष्ठा मूत्र के बांधनेवाले उष्ण वीर्य कहे हैं॥११॥

ग्राम्यावातहराः सर्वे बृंहणाः कफपित्तलाः ।
मधुराःरसपाकाभ्यां दीपनाबलवर्द्धनाः ॥१२॥

सम्पूर्ण ग्राम्य जीवों का मांस वात का हरनेवाला मांसवर्द्धक कफपित्त का करनेवाला रस पाक में मधुर दीपन और त्रल का बढ़ानेवाला है॥१२॥

कूलचरामरुत्पित्तहरावृष्या बलावहाः ॥
मधुरस्निग्धशीताश्च मूत्रलाः श्लेष्मलास्तथा ॥१३॥

किनारे पर फिरनेवाले जीवों का मांस वातपित्त हारक मांसवर्द्धक, बलकारक, मधुर स्निग्ध शीतल मूत्रसारक तथा कफकारक हैं॥१३॥

प्लवावृष्याहिमाः स्निग्धारक्तपित्तानिलापहाः ।
सृष्टमूत्रपुरीषाश्च मधुरा रसपाकयोः ॥१४॥

तैरने वाले जीवों का मांस वृष्य ठंडा स्निग्ध रक्त पित्त और वात हरता है मूत्र पुरीष को प्रवृत्त करनेवाला रस पाक में मधुर है॥१४॥

कोषस्थाः पादिनश्चैव स्निग्धाः शीतानिलापहाः ।
वर्च्चस्याः मधुरावृष्याः पित्तघ्नाः कफकारकाः ॥१५॥

कोशस्थ और चरणवालों का मांस स्निग्ध शीतल तथा वातहर मलकारक मधुर मांस कारक पित्तनाशी और कफकारक है॥१५॥

मत्स्याः स्निग्धोष्णमधुरा वातजिन्मललोमनाः ।
पित्तमांसबलश्लेष्मशुक्राभिष्यन्दकारकाः ॥१६॥

मत्स्य स्निग्ध उष्ण मधुर वातजित् मल का करनेवाला पित्त मांस बल श्लेष्मा शुक्र और स्वेद का करनेवाला है॥१६॥

रोहितः सर्वमत्स्यानां वरोवृष्योऽर्दितार्त्तिजित् ।
कषायानुरसः स्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥१७॥

सब मछलियों में रोहू मछली श्रेष्ठ है यह बलकारक अर्दित की पीड़ा को जीतने वाली है। यह रस में कसेली स्वादु वातनाशक बहुत करके पित्त को नहीं करती है॥१७॥

शकुलोमधुरोरुच्यः कषायोविषदोलघुः ॥१८॥

शकुल (एक प्रकार की मछली) मधुर रुचिकारक कसेली विषद और लघु है॥१८॥

शिलिन्दः श्लेष्मलोबल्योविपाके मधुरोगुरुः ।
वातपित्तहरोवृष्य आमवातकरोमतः ॥१९॥

शिलिन्द मत्स्य श्लेष्माकारक बलदायक विपाक में मधुर और गुरु है, वातपित्त हारक सद्य शुक्रकारक तथा आमवात का करनेवाला है॥१९॥

आडिमत्स्यो गुरुःस्निग्धः स्वादुर्वृष्योबलप्रदः ॥२०॥

आड़ी मत्स्य गुरु स्निग्ध स्वादुमांस और बल का करनेवाला है॥२०॥

इल्लिसोमधुरः स्निग्धः पित्तश्लेष्मप्रकोपणः ।
नृणां व्यवायनित्यानां हितोवह्निविवर्द्धनः ॥२१॥

इल्लिस मत्स्य मधुर स्निग्ध पित्त और श्लेष्मा को करनेवाला सदा स्त्रीसंग करनेवाले मनुष्यों को हितकारी अग्नि का बढ़ानेवाला हैं॥२१॥

एलङ्गः स्निग्धमधुरोगुरुविष्टम्भिशीतलः ॥२२॥

एलङ्ग मत्स्य स्निग्ध मधुर गुरु विष्टम्भी और शीतल है॥२२॥

पर्वतोमधुरः स्निग्धः कषायानुरसोगुरुः ॥२३॥

पर्वत मत्स्य स्निग्ध कसेला रसकारक और गुरु है॥२३॥

भाकुटोमधुरोवृष्यः कषायानुरसोगुरुः ॥२४॥

भाकुट मत्स्य का मांस मधुर शीघ्र शुक्रकारक कसैला रस में गुरु है॥२४॥

पाठीनः श्लेष्मलोवृष्यो निद्रालुः पिशिताशनः ॥
दूषयेद्रक्तपित्तं च कुष्ठरोगं करोत्यसौ ॥२५॥

पाठीन मत्स्य श्लेष्माकारक शीघ्र शुक्रकारक निद्राकारक है। इसका मांस खानेवालों को रक्त पित्त को दूषित कर कुष्ठ रोग करता है॥२५॥

वर्मिमत्स्यस्तथावृष्यो मधुरोरसपाकतः ॥२६॥

वाम मत्स्य वीर्यकारक रसपाक में मधुर है॥२६॥

कुलिशः कषायमधुरः कुब्जकः कफपित्तहा ॥२७॥

कुलिश मत्स्य कसैला मधुर है, कुब्जक कफ पित्त दूर करता है॥ २७॥

शृंगीतु वातशमनी स्निग्धाश्लेष्मप्रकोपणी ॥२८॥

शृङ्गी वात शांत करनेवाली, स्निग्ध श्लेष्मा को करनेवाली है॥२८॥

मद्गुरोमधुरोवृष्योविपाके मधुरोगुरुः ॥२९॥

मद्गुर मत्स्य मधुर वृष्य विपाक में मधुर और गुरु है॥२९॥

गुत्थमत्स्योगुरुःस्निग्धःश्लेष्मलोवातनाशनः ॥३०॥

गुत्थ मत्स्य भारी स्निग्ध कफकारी वातनाशक है॥३०॥

कवय्यःस्निग्धमधुराः चलदङ्गोगडोयथा ॥३१॥

कवय्य मत्स्य का मांस मधुर है और चलदंग मत्स्य रूखा है॥३१॥

क्षुद्रमत्स्यास्तुलघवो ग्राहिणोग्रहणीहिताः ॥३२॥

क्षुद्र मत्स्य लघु ग्राही ग्रहणी रोग में हितकारक है॥३२॥

मत्स्यकूर्मखगाण्डानि स्वादुवाजीकराणि च ॥३३॥

मत्स्य कछुए और पक्षियों के अंण्डे स्वादु और वाजीकर हैं॥३३॥

चरः शरीरावयवः स्वभावोधातवः क्रियाः ।
लिंगं प्रमाणं संस्कारोमात्राचास्मिन् परीक्ष्यते ॥३४॥

मांस भक्षण में चरजीवों के शरीर के अवयव स्वभाव धातु क्रिया लिंग प्रमाण संस्कार, मात्रा की परीक्षा कही है, अर्थात् देश विशेष से भक्ष्य विशेष से मृगादिका गुरु लघुपना वर्णन किया है, इस कारण जलचरादि जीवों की परीक्षा अवश्य करनी, शरीर अवयव की परीक्षा करनी जैसा लिखा है कि विहंगों की उरु और ग्रीवा विशेषकर गुरु हैं, सक्थि मांस से भी भारी, क्रोड स्कंध शिर स्थान और भी भारी हैं, स्वभाव सब में जातीय धर्म है, जैसे मृग लावक कपिंजल स्वभाव से ही हलके हैं, धातु शोणित आदि उत्तरोत्तर एक दूसरे से भारी हैं, चेष्टा, बहुत चेष्टावाले प्राणी आलसियों से विशेष हैं अर्थात् लघु हैं, लिंग में पुरुष गुरु और स्त्री लघु हैं, हारीत ने कहा है, चौपायों में स्त्री लघु हैं, पक्षियों में पुरुष लघु हैं, जातूकर्ण ने भी कहा है वन्ध्याछागी श्रेष्ठ है वह

न मिले तो बकरी लेनी, पाराशर कहते हैं चौपायों में स्त्री और विहंगों में पुरुष लेना, प्रमाण में जैसे महाशरीर वाले अपनी जाति में भारी हैं संस्कार जैसे मांस रस के निदेश में सुश्रुत ने कहा है स्नेह गोरस धान्य अम्ल फल और जो वस्तु अम्ल युक्त हैं वह यथोत्तर गुरु हैं, ऐसा ही चरक में लिखा है "गुरूणां लाघवं विद्यात् संस्कारात् सविपर्ययम् । व्रीहेर्लाजा यथा च स्युः शक्तूनां सिद्धपिण्डिका" इति संस्कार से लघु भारी हो जाते हैं, जैसे भारी धानों की खीलें हलकी होती हैं, लघु सत्तुओं की सिद्ध पिण्डिका भारी होती हैं (अग्नि में पकाये पिण्ड) मात्रा के वश से हलका भारी और भारी हलका हो जाता है, थोड़ी देने से भारी की मात्रा हलकी और हलकी की भारी हो जाती है, चकार से अग्निबल से लघु भारी जानना।।३४।।

कृशात्स्वयंमृतान्मांसंविषव्याडहतादपि ।
वालंतोयाग्निविक्लिन्नंरोगिशुष्कं नपूजितम् ।।
अगोचरभृतंयच्चमेध्यंवृद्धंतथैवच ।
सिद्धंपर्युषितंतद्वद्दुर्गन्धिग्रथितं च यत् ।।
क्रिमिजग्धं च यन्मांसमायुःकामोविवर्जयेत् ।।३५।।

कृशजीव का, स्वयं मृतक हुए का, विष खाये का व्याघ्रादि से हत हुए का बाल अवस्था का जल अग्नि से व्याकुल का रोगी तथा शुष्कजीव का मांस अच्छा नहीं होता जो अनूप धन्वदेश में पुष्ट हुआ हो जिसका मेद बढ़ गया हो बनाकर बासी हो गया हो जिसमें दुर्गन्धि और गांठ पड़ गई हो, जो मांस कीड़ों का खाया हो आयु की इच्छावाला उसे न खाय।।३५।।

एभ्योऽन्येषामुपादेयं मांसं दोषविवर्जितम् ।
लावतित्तिरिसारङ्गकुरङ्गैणकपिञ्जलाः ।।
मयूरवर्मिकूर्माश्च श्रेष्ठामांसगणेष्विह ।।३६।।

इससे अन्य दोषरहित मांस को लेना चाहिये, लावा, तीतर, सारंग, कुरंग, एणमृग, कपिंजल, मयूर, रोहित मत्स्य और कूर्म इनका मांस अच्छा होता है।।३६।।

पोताधानास्तुसर्वेषां सुस्निग्धा लघुदीपनाः ।
महाप्रमाणागुरवः क्रियावन्तोऽल्पचेष्टिनः ॥३७॥

छोटी मछलियों के समूह के अण्डे सब के लघु और दीपन होते हैं, तथा स्निग्ध होते हैं महाप्रमाणवाले भारी क्रियावाले और अल्पचेष्टा वाले होते हैं॥३७॥

मत्स्याण्डानि विशेषेण वातपित्तहराणि च ।
ज्ञेयानिहृद्यरुच्यानि कटुपाकीनिचैवहि ॥३८॥

मत्स्य के अण्डे विशेषकर वातपित्त को हरते हैं, यह हृदय को रुचिकारक और कटुपाकी हैं॥३८॥

हंसबीजं परं बल्यं बृंहणं वातनाशनम् ।
पाकेलघुतरं प्रोक्तं सर्वामयविवर्ज्जितम् ॥३९॥

हंस का अंडा परम बलकारक मांसकारक वातनाशक है पाक में अत्यंत लघु सर्व रोगवर्जित है॥३९॥

विष्टम्भिनः शुष्कमत्स्या अबल्यादुर्ज्जरामताः ।
सिद्दलाग्रहणीदोषशमनी पवनापहा ॥४०॥

इति मांसादिवर्गः

सूखी मच्छी मल रोकनेवाली, बलरहित देर में पचती है, विष्टम्भी ग्रहणी दोष को शांत करनेवाली तथा वातनाशक है॥४०॥

इति मांसवर्गः

अथ शाकवर्गः

शाकानिप्रायशस्तानिविष्टम्भीनि गुरूणि च ।
रूक्षाणिबहुवर्च्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च ॥१॥

प्रायः सम्पूर्ण श्रेष्ठ शाक विष्टम्भी और मल रोकनेवाले तथा भारी होते हैं, रूखे अधिक मल करनेवाले और भेदवातयुक्त होते हैं॥१॥

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरुविद्याद्यथोत्तरम् ॥२॥

पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द, संस्वेदज के भेद से शाक छः प्रकार का है, यह उत्तरोत्तर गुरु जानना॥२॥

जीवन्ती सर्वदोषघ्नी चक्षुष्या मधुराहिमा ॥३॥

जीवन्ती (डोडी) सब दोषों को दूर करनेवाली चक्षुओं को हितकारक मधुर ठंड़ी है॥३॥

तण्डुलीयमसृक्पित्तविषनुत्स्वादुपाकतः ॥४॥

चौलाई का शाक रुधिर पित्तविकार विष दूर करनेवाला पाक में स्वादु है॥४॥

वास्तूकस्तुसरोहृद्यो दोषनुत्पाकतोलघुः ।
सक्षारः क्रिमिहामेध्योरुच्योऽग्निबलवर्द्धनः ॥५॥

वास्तूंक (वथुआ) सारक हृदय को हितकारी दोषनाशक पाक में लघु है रस क्षारयुक्त क्रिमिनाशक, बुद्धि बढ़ानेवाला, रुचिकारक अग्नि और बल का बढ़ानेवाला है॥५॥

लघुपत्रीतुयाचिल्ली सावास्तूकसमामता ॥६॥

और लघुपत्रवाला चिल्ली शाक वास्तूक की समान कहा है॥६॥

मूलकपोतिका कण्ठचा सर्वदोषहरीलघुः ।
कटुतिक्तरसाहृद्या रोचनीवह्निदीपनी ॥७॥

मूलक पोतिका (छोटी मूली) कंठ को हितकारक सब दोषनाशक और लघु है, रस में कटु और तिक्त हृदय को हितकारक रुचिकारक अग्नि प्रदीप्त करनेवाली है॥७॥

महत्तद्गुरुविष्टम्भितीक्ष्णमामंत्रिदोषकृत् ॥८॥

और पकी हुई मूली विष्टम्भी तीक्ष्ण आम और त्रिदोष की करनेवाली है॥८॥

तदेवस्निग्धसिद्धंतु वातनुत्कफपित्तकृत् ॥९॥

और यही स्निग्ध सिद्ध की हुई वातनाशक कफ और पित्त की करनेवाली है॥९॥

शुष्कंतु शोथशमनंगरदोषहरंलघु ॥१०॥

सूखी शोथ रोग को शांत करनेवाली गरविष दोषनाशक लघु है॥१०॥

तत्फलंकफवातघ्नं तत्पुष्पं कफपित्तजित् ॥११॥

इसका फल कफवात का नाश करनेवाला और इसका पुष्प कफपित्त का जीतनेवाला है॥११॥

हिलमोचीतु कुष्ठघ्नीभेदनीकफपित्तनुत् ।।१२।।

हिलमोच (हुलहुल) कुष्ठ दूर करनेवाला है भेदक और कफपित्त नाशक है।।१२।।

उपोदिकासरास्निग्धा बल्याश्लेष्मकरीहिमा ।
स्वादुपाकरसावृष्या वातपित्तमदापहा ।।१३।।

उपोदिका (पोई) सारक है स्निग्ध बल और श्लेष्मा की करनेवाली है शीतवीर्य पाक में स्वादु रसयुक्त शीघ्र शुक्रकारक वातपित्त मद की दूर करनेवाली है।।१३।।

सुनिषण्णंतु संग्राहि अविदाहि त्रिदोषनुत् ।।१४।।

सुनिषण्ण (सुनसुनिया) संग्राही अदाहक और त्रिदोष दूर करने वाली है।।१४।।

मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीगुरुपित्तनुत् ।।१५।।

मारिष (मरसा) मधुर ठंडा विष्टम्भी भारी और पित्त का दूर करनेवाला है।।१५।।

पालङ्क्याबद्धविण्मूत्राकफघ्नी तण्डुलीयवत् ।।१६।।

पालङ्क (पालक) विष्ठामूत्र को बांधनेवाला कफनाशक गुण में चौलाई की समान है।।१६।।

कासमर्दोग्निदःकण्ठ्यःस्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषनुत् ।।१७।।

कासमर्द (कसौंदी) अग्निदाता कण्ठ को हितकारक स्वादु तीखा त्रिदोष दूर करनेवाला है।।१७।।

कालशाकं गरश्लेष्मशोथघ्नं दीपनं कटु ।।१८।।

काल शाक गरविष श्लेष्म शोथ का हरनेवाला, दीपन और कटु है।।१८।।

कलायपत्रं मधुरं रूक्षं भेदिचवातलम् ।।१९।।

कलाय पत्र (मटर के पत्ते) मधुर रूखे भेदी और वात करते हैं।।१९।।

सतीलकं त्रिदोषघ्नं कटुपाकं सतिक्तकम् ।।२०।।

सतीलक शाक त्रिदोष नाशक पाक में कटु और तीखा है।।२०।।

चाणकं दुर्जरं स्वादुकौसुम्भंतु कफापहम् ।।२१।।

चना कठिनता से पचनेवाला स्वादिष्ट है कुसुम्भ का शाक

कफनाशक है।।२१।।

पुनर्नवायुग्ममुष्णवीर्यं रसायनं सरम् ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहम् ।।२२।।

दोनों पुनर्नवा और वीर्य में उष्ण रसायन है तथा सारक है कफ वात आम पिडिका अर्श ब्रध्न शोथ उदर रोग को दूर करता है।।२२।।

कञ्चटं तिक्तकं ग्राहिरक्तपित्तापहं स्मृतम् ।।२३।।

कंचट शाक तीखा ग्राही और रक्तपित्त नाशक है।।२३।।

चाङ्गेरीतु कषायोष्णा मधुरा वह्निदीपनी ।
साम्लावातकफौहन्ति ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ।।२४।।

चांगेरी शाक (अम्लिलोना) कसेला उष्ण मधुर अग्निदीपक है अम्ल सहित वातकफ नाशक है ग्रहणी और अर्श विकार को दूर करता है।।२४।।

चुक्रकंदुर्जरं भेदि अम्लं पित्तकरंगुरु ।।२५।।

चूका शाक कठिनता से जीर्ण होनेवाला भेदी अम्लपित्त का करने वाला भारी है।।२५।।

कलम्बिका गुरुर्वृष्या कषाया स्तन्यवृद्धिदा ।।२६।।

कलम्बिका शाक भारी शीघ्र शुक्र कर कसेला स्तनों में दूध की वृद्धि करता है।।२६।।

सार्षपं गुरुशाकं च बद्धमूत्रं त्रिदोषकृत् ।।२७।।

सरसों का शाक गुरु मूत्र वृद्धिकारक तथा त्रिदोषकारक है।।२७।।

ग्रीष्मसुन्दरकस्तिक्तोरोचनः कफपित्तनुत् ।।२८।।

ग्रीष्म सुन्दरक (सुन्दरी शाक) तीखा रुचिकारक कफपित्त नाशक है।।२८।।

नाडीचः पिच्छिलः शीतो विष्टम्भी वातकोपनः ।
रक्तपित्तहरःस्वादुर्मण्डूक्याद्याश्च तद्गुणाः ।।२९।।

नाड़ीच (नाड़ी शाक) चिकना शीतल विष्टम्भी वात का करनेवाला रक्तपित्त का हरनेवाला स्वादु है। माण्डूक्यादि भी उसी के गुण युक्त हैं।।२९।।

पटोलपत्रं पित्तघ्नं नालं तस्य कफापहम् ।
फलं तस्य त्रिदोषघ्नं मूल तस्य विरेचनम् ।।३०।।

पटोल पत्र पित्त का नाश करनेवाला है, नाड़ी उसकी कफ हरनेवाली है, फल त्रिदोषनाशक और मूल विरेचन करनेवाली है।। ३०।।

निम्बः पित्तकफच्छर्दिव्रणहृल्लासकुष्ठनुत् ।।३१।।

नीम पित्त, कफ, छर्दि व्रण हृल्लास और कुष्ठ का नाश करने वाला है।।३१।।

पर्पटस्तु सवेत्राग्रस्तिक्तः पित्तकफापहः ।।३२।।

पर्पट वेत्र का अग्र तीखा कफ और पित्त का हरनेवाला है।।३२।।

त्रिदोषशमनीवृष्या काकमाचीरसायनी ।
नात्युष्णा शीतवीर्या च भेदनी कुष्ठनाशिनी ।।३३।।

काकमाची (मकोय) त्रिदोष शांत करनेवाली शुक्रकारक रसायनी है बहुत गरम नहीं शीत वीर्यवाली भेदन करनेवाली कुष्ठनाशक है।। ३३।।

वायुंवत्साद्नीहन्यात्पित्तघ्नीतु सुवर्च्चला ।।३४।।

वत्सादनी वात की दूर करनेवाली है और सुवर्च्चला पित्तनाशक कान्तिकारक है।।३४।।

राजक्षवकशाकंतुत्रिदोषशमनंलघु ।
ग्राहिशस्तं विशेषेण ग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ।।३५।।

राजक्षवक (सरसों का) शाक त्रिदोष शांत करनेवाला पचने में हलका है, ग्राही है विशेषकर ग्रहणी और अर्श विकार वालों को हित करता है।।३५।।

दीपनाः कफवातघ्नाश्चिरबिल्वांकुराः सराः ।।३६।।

चिरबिल्व (करञ्ज) के अंकुर दीपन कफ वात नाशक तथा सारक हैं।।३६।।

न्यग्रोधादुम्बराश्वत्थप्लक्षपद्मादिपल्लवाः ।
कषायस्तम्भनाः शीताहिताः पित्तातिसारिणाम् ।।३७।।

न्यग्रोध (वट) गूलर पीपल पाकर पद्म आदि इनके पत्ते कसैले स्तम्भी शीत और पित्त के अतीसार वालों को हितकारी हैं।।३७।।

अवल्गुजःकटुःपाकेतिक्तःपित्तकफापहः ।।३८।।

अवल्गुज (सोमराजी) पाक में कटु तीखा पित्तकफ का दूर करने वाला है।।३८।।

वार्ताकं कटुतीक्ष्णोष्णं मधुरं कफवातजित् ।
रोचनंवह्निजननं जीर्णं तु पित्तलं मतम् ॥३९॥

वार्ताक (बैंगन) कटुतीक्ष्ण उष्ण मधुर कफ और वात का जीतनेवाला रोचक अग्निबल कारक है जीर्ण होने पर पित्तकारक है॥३९॥

कण्डूकुष्ठक्रिमिघ्नानि कफवातहराणिच ।
फलानि बृहतीनांतु कटुतिक्तलघूनिच ॥४०॥

कटेरी के फल खुजली कुष्ठ क्रमि के नष्ट करनेवाले कफ वात के हरनेवाले कटुतिक्त और लघु होते हैं॥४०॥

कारवेल्लः सकर्कोटो रोचनः कफपित्तनुत् ॥४१॥

कारवेल्ल कर्कोटी (काकोड़ी) रोचन कफ तथा पित्त को दूर करनेवाली है॥४१॥

कूष्मांडकं पित्तहरं बाल मध्यं कफापहम् ।
पक्वं लघूष्णं सक्षारं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥
सर्वदोषहरं हृद्यं पथ्यंचेतोविकारिणाम् ॥४२॥

पेठा पित्त हरनेवाला है छोटा और मध्य का कफनाशक है पक्का लघु उष्ण क्षारयुक्त दीपक तथा बस्तिशोधक है सर्वदोष हरनेवाला हृदय को हितकारी चित्त के विकार वालों को पथ्य है॥४२॥

सक्षारा मधुरारूक्षा रुच्या वातकफापहा ॥
अश्मरीभेदनी गुर्वीनाडी कूष्मांडसम्भवा ॥४३॥

क्षार सहित मधुर रूखा रुचिकारक वात कफ के हर्ता अश्मरी भेदक गुरु इस प्रकार पेठे की नाड़ी होती है॥४३॥

एर्वारुकं सकर्कारु सुपक्वं कफवातकृत् ।
सक्षारं मधुरं रुच्यं दीपनं नातिपित्तलम् ॥४४॥

एर्वारुक (बड़ी ककड़ी) कर्कारु (पेठा) यह पके हुए कफ और वात के करनेंवाले हैं क्षार सहित मधुर रुचिकारक दीपन और बहुत पित्त के करनेवाले नहीं हैं॥४४॥

बाल सनील त्रिपुषं तेषां पित्तहरं स्मृतम् ।
तत्पाण्डुकफकृज्जीर्णमम्लं वातकफापहम् ॥४५॥

नवीन नीली खीरे के समान पित्त हरनेवाली कही है वह श्वेत वर्ण

का कफ का करनेवाला जीर्ण अम्लवात और कफ का हरनेवाला है।।४५।।

शीर्णवृंतं कफहरं सक्षारं मधुरं हि तत् ।
भेदनं दीपनं हृद्यमानाहाष्ठीलनुल्लघु ।।४६।।

शीर्णवृंत एक प्रकार का तरबूज कफ हारक क्षारयुक्त मधुर और हलका है, भेदन दीपन हृदय को हितकारक आनाह रोग और अष्ठीला रोग दूर करता लघु है।।४६।।

अलाबुः शीतलारूक्षा गुर्वी वर्च्चःप्रभेदिनी ।।४७।।

अलाबू लौकी तुम्बी ठंडी है रूखी है भारी है मल को भेदने वाली है।।४७।।

अलाबुनाडिकागुर्वी मधुरा पित्तनाशिनी ।
वातश्लेष्मकरीरूक्षा शीतलामलभेदिनी ।।४८।।

तुम्बी की नाड़ी भारी मधुर और पित्त को नाश करनेवाली है तथा वात श्लेष्म को करनेवाली रूखी शीतल अम्ल भेदनेवाली है।।४८।।

तिक्तालाबुरहृद्यातु वामनी वातपित्तजित् ।।४९।।

कड़वी तुम्बी हृदय को हितकारक नहीं है, वमनकारक वातपित्त को जीतनेवाली है।।४९।।

कुमुदोत्पलनालास्तु सपुष्पाः सफलाः स्मृताः ।
शीताः स्वादुकषायाश्च कफमारुतकोपनाः ।।५०।।

कुमुद उत्पल के नाल फूल फल शीतल स्वादु कसेले कफ और वात के कोप करानेवाले हैं।।५०।।

हस्तिमध्वालुकादीनि रक्तपित्तहराणि च ।
गुरूणि स्वादुशीतानि स्तन्यशुक्रकराणि च ।।१।।

हस्तिमधु आलुक आदि रक्तपित्त के हरनेवाले हैं भारी स्वादु शीतल स्तनों में दुग्ध तथा वीर्य के करनेवाले हैं।।१।।

विदारीकन्दो बल्यश्च वातपित्तहरश्च सः ।
मधुरोबृंहणोवृष्यः शीतः स्वर्योतिमूत्रलः ।।२।।

विदारीकन्द बलकारी वातपित्त को हरनेवाला है, मधुर मांसकारक तथा शुक्रवर्द्धक और शीतल स्वर और अधिक मूत्र का करनेवाला है।।२।।

वातपित्तहरीवृष्या स्वादुतिक्ताशतावरी ।
महतीसैव हृद्या च मेधाग्निबलवर्द्धिनी ।।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नी वृष्याशीता रसायनी ।
कफपित्तहरास्तिक्तास्तस्याएवांकुराःस्मृताः ।।३।।

शतावरी वात पित्त की हरनेवाली, वीर्यवर्द्धक, स्वादु और तिक्त है, बड़ी शतावरी हृदय को हितकारक मेधा अग्नि और बल को बढ़ानेवाली है, ग्रहणी अर्श (ववासीर) के विकार को दूर करनेवाली शुक्रकारक ठंडी और रसयनी है, तथा उसका अंकुर कफपित्त का हरनेवाला तथा तीखा होता है।।३।।

तरूटं बिसशालूकं क्रौञ्चादनकशेरुकम् ।
भृङ्गाटकाङ्कलोडचंचगुरुविष्टम्भि शीतलम् ।।४।।

तरूट (नीले कमल की जड़) बिस शालूक भँसीड़ा क्रौञ्चादन (घंघोल) कसेरु सिंघाड़ा और अंकलोडच भारी है विष्टम्भकारी और शीतल है।।४।।

पिण्डालुकं कफहरं गुरु वातप्रकोपणम् ।।५।।

पिंडालू कफ का हरनेवाला भारी वात का कोप करनेवाला है।।५।।

वज्राख्यकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुपाकश्च पित्तकृत् ।।६।।

वज्राख्यकन्द श्लेष्मा का हरनेवाला पाक में कटु तथा पित्त का करनेवाला है।।६।।

वेणोः करीराः कफला मधुरारसपाकतः ।
विदाहिनोनातिबलाः सकषायाविरूक्षणाः ।।७।।

बाँस का कल्ला कफकारक रसपाक में मधुर है तथा दाहकारक अति बलकारक नहीं है कसेला और रूखा है।।७।।

ऐन्दुकं च नदीमाषं विशदं गुरुशीतलम् ।।८।।

ऐन्दुक उन्दीमान नदीमाष चरचरा भारी और शीतल है।।८।।

शूरणोदीपनोरुच्यः कफघ्नोविषदोलघुः ।
विशेषादर्शसां पथ्यो भूकन्दस्त्वतिदोषलः ।।९।।

जिमीकंद दीपन रुचिकारक कफनाशक विषदायक लघु है विशेष करके अर्श रोग में पथ्य है, और दूसरी जाति का जिमीकंद बहुत दोष

करता है॥९॥

माणकं स्वादुशीतं च गुरुचापि प्रकीर्त्तितम् ॥१०॥

मानकंद स्वादु शीतल और गुरु है॥१०॥

कदल्याबलकृन्मूल वातपित्तापहं गुरु ॥११॥

केले की जड़ बलकारक वातपित्त हरनेवाली गुरु है॥११॥

आमवातकरी कच्ची कफकृद्गुरुपिच्छला ॥१२॥

कच्ची आमवात की करनेवाली कफकारक गुरु और पिच्छल है॥१२॥

वाराहकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुकोरसपाकतः ।
मेहकुष्ठक्रिमिहरो बल्यो वृष्योरसायनः ॥१३॥

वाराहीकंद श्लेष्मा को दूर करनेवाला रसपाक में कटु है प्रमेह कुष्ठ कृमिका हरनेवाला बलदायक वीर्यवर्द्धक रसायन है॥१३॥

तालस्य नारिकेलस्य खर्जूरस्य शिरांसि च ।
कषायस्निग्धमधुरबृंहणानि गुरूणि च ॥१४॥

ताल नारियल और खजूर के फल कसेले स्निग्ध मधुर मांस कारक भारी हैं॥१४॥

गुवाकस्य शिरस्तद्वद्भेदनं मदकारकम् ॥१५॥

गुवाक का (सुपारी) फल पूर्वोक्त गुणयुक्त भेदन और मद का करनेवाला है॥१५॥

बालं ह्यनार्त्तवं जीर्णं व्याधितं क्रिमिभक्षितम् ।
कन्दं विवर्जयेत् सर्वं योवासम्यङ्नरोहति ॥१६॥

जो छोटा हो ऋतु सम्बन्धी न हो, जीर्ण व्याधियुक्त कीड़ों का खाया कंद हो अथवा जो अच्छी प्रकार न उगा हो उसे भक्षण न करे॥१६॥

शणस्यकोविदारस्य कर्बुदारस्य शाल्मलेः ।
पुष्पं संग्राहिशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः ॥१७॥

सन कोविदार कर्बुदार (सफेद कचनार) सेमल इनके फूल खाने में अच्छे हैं, विशेषकर रक्तपित्त में हितकारी हैं॥१७॥

वृषागस्त्यस्य पुष्पाणि क्षयकासापदानिच ॥१८॥

वृष (अडूसा) और अगस्त्य के फूल क्षय और कास रोग के दूर करनेवाले हैं॥१८॥

आगस्त्यं नातिशीतोष्णं नक्तान्धानां च शस्यते ॥१९॥

अगस्त्य का फूल न ठंडा है न गरम विशेषकर रतौंधे वाले को उपकारी है॥१९॥

राजवृक्षस्य निम्बस्य मुष्ककार्काशनस्य च ।
कफपित्तहरं पुष्पं कुष्ठघ्नं कुटजस्य च ॥२०॥

राजवृक्ष नीम मुष्क (मोखावृक्ष) कार्काशन (वृक्ष) इनके पुष्प कफ पित्तक हरनेवाले हैं और कुटज के फूल कुष्ठ दूर करते हैं॥२०॥

सतिक्तं मधुरं शीतं पद्मं पित्तकफापहम् ॥२१॥

कमल तीखा मधुर शीतल पित्त और कफ का हरनेवाला है॥२१॥

मधुरं पिच्छिलं स्निग्धं कुमुदं ह्लादिशीतलम् ॥२२॥

कुई (कमोदनी) मधुर पिच्छल चिकनी प्रसन्नकारक तथा शीतल है॥२२॥

सिन्दुवारं जीवनीयं हिमं पित्तविनाशनम् ।
यथावृक्षं विजानीयात् कुसुमस्य गुणागुणान् ॥२३॥

सिन्दुवार (सिम्हालु) निर्गुण्डी जीवनी (काकोड़ी) ठंडी और पित्तनाशक है जैसा वृक्ष होता है वैसे ही उसके पुष्प में गुण होते हैं॥२३॥

छत्रकास्तु पलालेक्षुकरीपक्षितिरेणुजाः ॥२४॥
सर्वेसंस्वेदजाः शीताः कषायाः स्वादुपिच्छिलाः ॥
गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्माभयप्रदाः ॥२५॥

छत्रका पलाल अर्थात् अन्नरहित अन्न की नाल ईख सूखा गोबरयुक्त पृथ्वी और रेणु में उत्पन्न होनेवाला संस्वेदज शाक शीत वीर्य कषैला स्वादिष्ट पिच्छल भारी छर्दि अतीसार ज्वर और श्लेष्मा रोग के करनेवाले हैं॥२४-२५॥

कर्कशंपरिजीर्णं च क्रिमिजुष्टमदेशजम् ।
विवर्जयेत् पत्रशाकं यदकालं विरोहिच ॥२६॥

कर्कश अत्यंत जीर्ण कीड़ों से युक्त अदेश में उत्पन्न हुआ शाक पत्र भोजन करना उचित नहीं है अथवा जो अकाल में उत्पन्न हुआ वह त्यागने योग्य है॥२६॥

सतीलो वास्तुकश्चुच्छु चिल्लीमूलकपोतिका ।

मण्डूकपर्णीजीवन्ती शाकवर्गे प्रशस्यते ॥२७॥

सतीला वास्तुक (कलाय, बथुआ) शिरिआरी (चिड़) चिल्ली मूल मण्डूकपर्णी और जीवन्ती यह शाक वर्ग में अच्छी कही है॥२७॥

धान्येषु मांसेषु फलेषु चैव शाकेषु चानुक्तमिहाप्रमेयात् ॥
आस्वादतो भूतगुणैर्गृहीत्वा तदादिशेद्द्रव्यमनल्प-
बुद्धिः ॥२८॥

धान्य मांस फल शाक आदि का जो प्रयोग इसमें नहीं कहा है उसको स्वाद और भूतगुण अर्थात् रस और शीतोष्णादि गुणों को जानकर बुद्धिमान् उसको प्रयोग करे॥२८॥

शाकं हिनस्तिवपुरस्थि निहंतिनेत्रम् ।
वर्णं विनाशयति शुक्रमथासृजं च ॥
ओजःक्षयं प्रकुरुते पलितंत्वकाले ।
हन्तिस्मृतिं गतिमिति प्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥२९॥

शाक शरीर को नष्ट करता है हड्डी को जीर्ण करता नेत्रों को नष्ट करता है नाश करता है वर्ण का नाश करता है वीर्य को रुधिर को नष्ट करता है ओज का क्षय करता अकाल में बाल पकाता स्मृति गति को नष्ट करता है। रसवीर्य विपाक के जाननेवाले ऐसा कहते हैं॥२९॥

शाकेषु सर्वेनिवसन्तिरोगा रोगोहि देहस्यविनाशहेतुः ।
तस्माद्बुधैः शाकविवर्जनंहि कार्यं तथाम्लेषु सएव-
दोषः॥३०॥

इति शाकवर्गः

शाक में सम्पूर्ण रोग निवास करते हैं और रोग ही देह के नाश करने का कारण है इस कारण बुद्धिमानों को शाक का सेवन नहीं करना चाहिये और यही दोष खटाई में भी होते हैं॥३०॥

इति शाकवर्गः

सैन्धवं दीपनं हृद्यं चक्षुष्यं रोचनं लघु ।
स्निग्धं वृष्यं च मधुरं शीतं दोषघ्नमुत्तमम् ॥१॥

सैंधा दीपन है हृदय को हितकारी चक्षु को हितकारी रुचिकारक

और लघु है स्निग्ध वीर्यकारक मधुर शीतल और दोषों को दूर करनेवाला है॥१॥

सामुद्रंमधुरं पाकेनात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥२॥

समुद्र लवण पाक में मधुर न बहुत गरम और न विदाहि है भेदक कुछेक स्निग्ध शूलनाशक और बहुत पित्तकारक नहीं है॥२॥

बिडं सक्षारतीक्ष्णोष्णं सूक्ष्म दीपनरोचनम् ।
शूलहृद्रोगशमनं रूक्ष वातानुलोमनम् ॥३॥

विरिया सोंचरलोन क्षारसहित तीक्ष्ण उष्ण सूक्ष्म दीपन और रुचिकारक है शूल हरनेवाला हृदय रोग का शांत करनेवाला रूखा और वात का अनुलोम करनेवाला है॥३॥

सौवर्च्चलंतु वीर्योष्णं विषदं कटुकं लघु ।
गुल्मशूलविबंधघ्नं हृद्यं सुरभिदीपनम् ॥४॥

सौवर्च्चल कालानोन वीर्य में उष्ण विषद रस कटु और लघु होता है गुल्म शूल बिवंध और शूल को नाश करनेवाला है हृदय को हितकारी सुरभि और दीप्ति का करनेवाला है॥४॥

सौवर्च्चलगुणाः कृष्णालवणे गन्धवर्जिताः ॥५॥

सौवर्चलके गुण में इतना अंतर है कि काले नमक में गंधि नहीं होती है॥५॥

सतिक्तं कटुसक्षारं तीक्ष्णमुत्क्लेदिचौद्भिदम् ॥६॥

औद्भिद लवण तीक्ष्ण उत्क्लेदि क्षारयुक्त कटु और कड़वा है॥६॥

रौमकं तीक्ष्णमुष्णंच व्यवायि कटुपाकि च ।
वातघ्नं लघुविष्यन्दि सूक्ष्मं विड्भेदि मूत्रलम् ॥७॥

रोमक नदी में होनेवाला नमक तीक्ष्ण उष्ण व्यवायि तथा कटुपाकी होता है वातनाशक लघु विष्यन्दि सूक्ष्म मल भेदी और अत्यंत मूत्र का लानेवाला है॥७॥

दीपनं पाचनं भेदि लवणं गुडिकाह्वयम् ।
कफवातकृमिघ्नं च लेखनं पित्तकोपनम् ॥८॥

गुडिका लवण दीपन पाचन और भेदी होता है कफवात कृमि का

नाश करनेवाला लेखन और पित्त का कोप करनेवाला है।।८।।

क्षारास्तुदीपनाःसर्वे रक्तपित्तकराः सराः ।
गुल्मार्शोग्रहणीदोषशर्कराश्मविनाशनाः ।।९।।

सम्पूर्ण क्षार दीपन रक्तपित्त करनेवाले सारक हैं गुल्म अर्श ग्रहणी दोष शर्करा और पथरी रोग के नाश करनेवाले हैं।।९।।

ज्ञेयौ वह्निसमौ क्षारौ सर्जिकायावशूकजौ ।
शुक्रश्लेष्मविबन्धार्शोगुल्मप्लीहविनाशनौ ।।१०।।

जवाखार और सज्जीखार अग्नि के समान जानने यह वीर्य और श्लेष्म का विबंध अर्श गुल्म और प्लीहरोग के नाशक हैं।।१०।।

अग्निदीप्तिकरस्तीक्ष्णष्टङ्कणक्षार उच्यते ।।११।।

टंकन क्षार अग्नि का दीप्त करनेवाला है।।११।।

आर्द्रकं रोचनंहृद्यं कटूष्णं वृष्यमेव च ।
कफानिलहरं स्वर्यं विबन्धानाहशूलनुत् ।।१२।।

अदरख रुचिकारक हृदय को हितकारी कटु उष्ण वीर्यवर्द्धक कफवात का हरनेवाला स्वर करनेवाला विबन्ध आनाह और शूल रोग का दूर करनेवाला है।।१२।।

शुण्ठीतु कफवातघ्नी सस्नेहा लघुदीपनी ।
वृष्योष्णा रोचनीहृद्या विपाके मधुराकटुः ।।१३।।

सोंठ कफ और वात की हरनेवाली स्नेहयुक्त लघु और दीप्ति करनेवाली है वीर्यकारक गरम रुचिकारक हृदय को हितकारक पाक में मधुर और कटु है।।१३।।

पिप्पल्यार्द्रास्वादुशीतागुर्व्वी श्लेष्मप्रकोपणी ।।१४।।

पिप्पली गीली स्वादु शीतल भारी श्लेष्मा को कोप करती है।।१४।।

साशुष्का मधुरापाके वृष्या पित्तप्रसादनी ।
स्निग्धोष्णादीपनीवातश्लेष्मनुच्छ्वासनाशिनी ।।१५।।

और सूखी हुई पाक में मधुर वीर्य बलकारक पित्त की करनेवाली स्निग्ध उष्ण दीप्तिकारक वात श्लेष्म और उच्छ्वास को यानि ऊर्ध्व श्वास की नाश करनेवाली है।।१५।।

मरिचं लघुतीक्ष्णोष्णं रूक्षरोचनदीपनम् ।

रसेपाके च कटुकं कफघ्नं पित्तकोपनम् ॥१६॥

सूखी काली मिर्च लघु तीक्ष्ण उष्ण रुचि और दीप्तिकारक है, रसपाक में कटु, कफनाशक पित्त का कोप करनेवाली है॥१६॥

स्वादुपाक्यार्द्रमरिचं गुरु श्लेष्मप्रकोपि च ॥१७॥

गीली मिर्च पाक में स्वादु, भारी कफ का कोप करती है॥१७॥

नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्यतोमरिचं सितम् ॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषतः ॥१८॥

श्वेत मिर्च वीर्य से न गरम है न ठंड़ी यह गुणयुक्त विशेष करके घृतादि के साथ नेत्रों को हितकारक हैं॥१८॥

हिंगुतीक्ष्णं कटुरसं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ।
लघूष्णं पाचनं स्निग्धं दीपनं कफवातजित् ॥१९॥

हींग तीक्ष्ण है, रस में कटु, शूल अजीर्ण विवन्ध रोग को दूर करती है, लघु उष्ण पाचन स्निग्ध दीपन कफ और वात की जीतनेवाली है॥१९॥

जीरकं रुचिकृत्सर्वं गन्धाढ्यं कफवातजित् ।
तीक्ष्णोष्णं कटुकं पाके कटुपित्ताग्निवर्द्धनम् ॥२०॥

सब जीरा रुचिकारक, सुगन्धिवान् वात कफ का जीतनेवाला है, तीक्ष्ण उष्ण पाक में कटु पित्त अग्नि का बढ़ानेवाला है॥२०॥

यमानी कृष्णजीरश्च ज्ञेयाजीरकवद्गुणैः ॥२१॥

अजवायन और कालाजीरा यह भी जीरे के समान गुण में हैं॥२१॥

धन्याकं कासतृट्छर्दिशमनं चक्षुषोर्हितम् ।
कषायतिक्तं मधुरं हृद्यं रोचनदीपनम् ॥२२॥

धनियां खांसी प्यास छर्दि की शांत करनेवाली नेत्रों को हितकारक है कसेली तीखी मधुर हृदय को हितकारक रुचिकारक दीपन है॥२२॥

लशुनः क्षारमधुरः पत्रे मधुरपिच्छलः ।
मध्येकन्देतु तीक्ष्णोष्णःकटुपाकरसः सरः ॥
हृद्यः केश्योगुरुर्वृष्यः स्निग्धो दीपनपाचनः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यो रक्तपित्तप्रकोपणः ॥
किलासकुष्ठगुल्मार्शो मेहकृमिकफानिलान् ।
सहिक्कापीनसश्वासकासान्हन्ति रसायनः ॥२३॥

लहसुन क्षारयुक्त मधुर है, पत्ते मधुर और पिच्छल हैं, मध्य में उसका कन्द तीक्ष्ण और उष्ण पाक में कटु रस और सारक है, हृदय और केश को हितकारी, भारी वीर्यदायक स्निग्ध दीपन पाचन है। टूटे अवयव को जोड़नेवाला, बलकारक रक्तपित्त का कोप करनेवाला, किलास कुष्ठ गुल्म अर्श प्रमेह कृमि कफ वात रोग हिचकी पीनस श्वास कास सबका दूर करनेवाला रसायन है।।२३।।

पलाण्डुर्मधुरोवृष्यः कटुः स्निग्धोनिलापहः ।
बल्यःपित्ताविरोधी च कफकृद्रोचनोगुरुः ।।२४।।

पलाण्डु (प्याज) मधुर वीर्यकारक कटु स्निग्ध वातनाशक बलकारक पित्त का अविरोधी कफ करनेवाला रुचिकारक गुरु है।।२४।।

ग्राहीगृञ्जनकस्तीक्ष्णो ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ।।२५।।
इति लवणादिवर्गः

गृञ्जन (गाजर) ग्राही तीक्ष्ण ग्रहणी और अर्श का विकार दूर करता है।।२५।।

इति लवणादिवर्गः

अथ फलवर्गः

कषायानुरसंयातिपित्तलंदाडिमंस्मृतम् ।
दीपनीयंरुचिकरं हृद्यं वर्चोविबन्धनम् ।।१।।

दाड़िमी कसेली है बहुत पित्तकारक नहीं है दीपन रुचिकारक हृदय को हितकारक विष्ठा की बांधनेवाली है।।१।।

द्विविधंतत्तुविज्ञेयं मधुरंचाम्लमेव च ।
त्रिदोषघ्नंतुमधुरमम्लं वातकफापहम् ।।२।।

वह अम्ल और मधुर दो प्रकार की है मधुर त्रिदोष की दूर करनेवाली अम्ल (खट्टी) वात और कफ की दूर करनेवाली है।।२।।

प्राचीनामलकंचैवदोषघ्नं गरहारि च ।।३।।

पुराना पानी आमला दोषनाशक तथा गर विष हरनेवाला है।।३।।

कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ।
पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरंसरम् ।।४।।

कर्कन्धु (वेरी) कोल (वेर) बदर (बेर) यह कच्चा कफ और पित्त का करनेवाला पका हुआ पित्त वात का हरनेवाला स्निग्ध मधुर सारक है।।४।।

तच्छुष्कं कफवातघ्नं नचपित्ते विरुध्यते ।
पुराणंतृट्प्रशमनं श्रमघ्नंलघुदीपनम् ।।५।।

सूखा हुआ कफ वात का हरनेवाला पित्त का विरोधी नहीं है। पुराने प्यास को शांत करनेवाले श्रमनाशक लघु और दीपन हैं।।५।।

सौवीरं बदरं स्निग्धं मधुरं वातपित्तजित् ।।६।।

सौवीर देश का बेर बहुत स्निग्ध मधुर वात और पित्त का जीतनेवाला है।।६।।

आम्रं बालं रक्तपित्तकरं मध्यंतुपित्तलम् ।
पक्वं वर्णकरं रुच्यं मांसशुक्रबलप्रदम् ।।
पित्ताविरोधिवातघ्नं हृद्यं गुर्वनुलोमनम् ।।७।।

कच्चा आम रक्तपित्त करनेवाला है मध्यम पित्त करनेवाला पक्का वर्ण करनेवाला रुचिकारक मांस शुक्र और बल का करनेवाला है पित्त का अविरोधी वातनाशक हृदय को हितकारी भारी वायु को अनुलोमन करनेवाला है।।७।।

आम्रपेषी कषायाम्लाभेदनी कफवातजित् ।।८।।

आम की पेषी अमौटी कसैली वातकारक भेदिनी कफवात की जीतनेवाली है।।८।।

आम्रातकं तर्पणं च बल्यं मधुरबृंहणम् ।
स्नेहनं श्लेष्मलं शीतं वृष्यं विष्टंभ्यजीर्यति ।।९।।

अंवाडा तृप्तिकारक बलवर्द्धक मधुर और बृंहण है स्नेहकारक श्लेष्माकारक ठंडा वीर्यकारक और देर में जीर्ण होनेवाला है।।९।।

लकुचं गुरुविष्टम्भित्रिदोषंशुक्रदूषणम् ।।१०।।

बढ़हर भारी विष्टम्भकारक त्रिदोष जनक वीर्य को दूषित करनेवाला है।।१०।।

करमर्दं तृषाहारि रुच्यम्लपित्तकारकम् ।।११।।

करौंदा प्यास को हरनेवाला रुचिकारक अम्लपित्त का करने

वाला है।।११।।

वातपित्तहरंवृष्यंप्रियालं गुरुशीतलम् ।।१२।।

चिरौंजी वात पित्त की हरनेवाली वीर्यकारक भारी और शीतल है।।१२।।

भव्यंस्वादुकषायाम्लंहृद्यमास्यविशोधनम् ।
पित्तश्लेष्महरंग्राहि गुरुविष्टम्भिशीतलम् ।।१३।।

भव्य (कमरख) स्वादु कषेली अम्ल हृदय को हितकारक मुख का शोधन करनेवाली है पित्त और श्लेष्मा की हरनेवाली ग्राही गुरु विष्टम्भकारक और शीतल है।।१३।।

अम्लवेतसमत्यम्लंतीक्ष्णंस्निग्धंचदीपनम् ।।१४।।

कच्चा अम्लवेत अति खट्टा तीक्ष्ण स्निग्ध और दीपन है।।१४।।

वातापहंतिन्तिडीकमामंपित्तबलासकृत् ।
ग्राह्युष्णंदीपनंरुच्यं सपक्वं कफवातनुत् ।।१५।।

कच्ची इमली वात की हरनेवाली पित्त की करनेवाली है तथा ग्राही गरम दीपन रुचिकारक है, यह अच्छी प्रकार पकी हुई कफ और वात की दूर करनेवाली है।।१५।।

अम्लिकायाः फलं पक्वं तस्माच्चाल्पतरंगुणैः ।।१६।।

इमली का पका हुआ फल गुणों में इससे बहुत न्यून है।।१६।।

कषायविषदत्वाच्च सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम् ।
अवदंशक्षमंरूक्षंवातलंलवनीफलम् ।।१७।।

हरफारेवड़ी कषेली विषद होने से सुगन्धियुक्त होने से रुचि देनेवाली, इसे खाकर दूसरे पदार्थ में रुचि होती है यह रूखी वात कारक है।।१७।।

जम्बीरंवातकफनुद्गुरुपित्तप्रकोपणम् ।
तृष्णाशूलकफोत्क्लेशच्छर्दिश्वासनिवारणम् ।।१८।।

जम्बीरी का फल वातकफ का दूर करनेवाला गुरु पित्त का कोप करनेवाला तृष्णा शूल कफ का उत्क्लेद छर्दि और श्वास का निवारण करनेवाला है।।१८।।

नागरङ्गंदुर्जरंचगुरु वातविनाशनम् ।।१९।।

नारंगी देर में जीर्ण होनेवाली भारी वात पित्त की नाश करनेवाली है॥१९॥

फलं वेत्रस्यवातघ्नमम्लपित्तविनाशकृत् ॥२०॥

वेत्र का फल वातनाशक अम्ल पित्त का नाशक है॥२०॥

मातुलुङ्गफलंहृद्यमम्लंलघ्वग्निदीपनम् ।
श्वासकासारुचिहरं तृष्णाघ्नंकण्ठशोधनम् ॥२१॥

विजौरा नींबू हृदय को हितकारक खट्टा लघु अग्निदीपन करनेवाला श्वास कास अरुचि का हरनेवाला तृष्णा का दूर करनेवाला तथा कण्ठ को शोधनेवाला है॥२१॥

बीजपूरस्यतिक्तात्वक्दुर्जरा कफवातहृत् ॥२२॥

विजौरे की छाल तीखी होने से दुर्जर कफ और वात की हरनेवाली है॥२२॥

तन्मांसं स्वादुशीतं च गरु मारुतपित्तजित् ॥२३॥

और त्वचा के मध्य का भाग स्वादु शीतल भारी वात पित्त का जीतनेवाला है॥२३॥

केशरंतु लघु ग्राहिगुल्मार्शोघ्नंहि दीपनम् ।
मेध्यं शूलानिलच्छर्दिकफारोचकनाशनम् ॥२४॥

नागकेशर हलकी है ग्राही है तथा गुल्मरोग बवासीर को दूर करनेवाली दीपन है बुद्धि को हितकारी शूल वात छर्दि कफ अरुचि को नाश करती है॥२४॥

एवं प्रकारा विज्ञेया वृष्याच मधुकर्कटी ॥२५॥

इसी प्रकार के गुणों से युक्त वीर्यदायक चकोतरा को जानना चाहिये॥२५॥

कपित्थमांसं कंण्ठघ्नं दंशघ्नं ग्राहि वातलम् ।
मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् ॥
तदेवसिद्धं दोषघ्नं विषघ्नं ग्राहिगुर्वपि ॥२६॥

कैथा का गूदा कंठनाशक विषनाशक ग्राही और वात का करनेवाला है कसेला होने से मधुर और अम्ल है और सुगन्धि होने से रुचिकारक है और वही सिद्ध हुआ दोषनाशक विषनाशक ग्राही और गुरु है॥२६॥

जाम्बवं वातलं ग्राहि रूक्षं पित्तकफापहम् ॥२७॥

जम्बू वात कर्ता ग्राही रूखा पित्त तथा कफ को दूर करे है॥२७॥

तिन्दुकं तुवरं स्वादु गुरुपित्तकफापहम् ॥२८॥

तिन्दुक (तैंदू) कषेला स्वादु भारी पित्त और कफ को दूर करनेवाला है॥२८॥

स्निग्धं स्वादुकषायं च राजादनफलंगुरु ॥२९॥

खजूर की समान फल (खिरनी) स्निग्ध स्वादु कसेला और भारी है॥२९॥

कषायमधुरं रूक्षं तोदनं कफवातजित् ।
अम्लोष्णं लघुसंग्राहि स्निग्धं पित्ताग्निवर्द्धनम् ॥३०॥

तोदन* (वामप्रिय फल) कसेला मधुर रूखा कफ और वात का जीतनेवाला, खट्टा उष्ण हलका संग्राही, चिकना पित्त और अग्नि का बढ़ानेवाला है॥३०॥

अनुपाकिफलं स्वादु वातपित्तविनाशनम् ॥३१॥

अनुपाकि (अनुपा), फल स्वादु वात और पित्त का नाश करनेवाला है॥३१॥

क्षीरिवृक्षफलं विद्याद्गुरुविष्टम्भि शीतलम् ।
कषायमधुरं साम्लं नातिमारुतकोपनम् ॥३२॥

दूधवाले वृक्ष बड़ गूलर पीपल पाकर आदि के फल भारी विष्टम्भकारक और शीतल हैं, कसेले मधुर अम्ल तथा वात का कोप करनेवाले नहीं हैं॥३२॥

बाकुलं मधुरं स्निग्धं कषायं विषदं च तत् ।
स्थिरीकरंचदन्तानां संग्राहि फलमिष्यते ॥३३॥

बाकुल (मौलसिरी) मीठा चिकना कसैला विष्टम्भी शीतल कसैला विषद और शीतल, दांतों का स्थिर करनेवाला और फल इसका ग्राही है॥३३॥

परूषकं समधुरं कषायानुरसंलघु ।

---

* दक्षिण में यह वारणाम्लिका नाम से प्रसिद्ध है।

वातघ्नं पित्तजननमत्यम्लं तदुदाहृतम् ॥३४॥

कच्चा फालसा मधुर कसैला रसयुक्त और हलका है वातहारक पित्तका उत्पन्न करनेवाला और अधिक खट्टा है॥३४॥

पक्वं समधुरं तच्च वातपित्तनिबर्हणम् ॥३५॥

और पक्का फालसा मधुर वात और पित्तका दूर करनेवाला है॥३५॥

कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहिदीपनम् ।
कटुतिक्तकषायोष्णं बालबिल्वमुदाहृतम् ॥
तदेवविद्यात्संपक्वं मधुरानुरसं गुरुः ।
विदाहिविष्टम्भकरं दोषकृत् पूतिमारुतम् ॥३६॥

कच्चा वेल कटु तीखा कसेला कफ और वात का हरनेवाला तीक्ष्ण चिकना संग्राही दीपन कहा है और यही पका हुआ मधुर रसयुक्त गुरु है विदाही विष्टम्भ का करनेवाला दोष का करनेवाला वातशोधक है॥३६॥

द्राक्षातु मधुरास्निग्धाशीतावृष्यानुलोमनी ॥
रक्तपितज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा ॥३७॥

दाख मधुर स्निग्ध शीतल वीर्यदायक वात को अनुलोम करनेवाली है रक्त पित्त ज्वर श्वास तृष्णा दाह क्षय की हरनेवाली है॥३७॥

गोस्तनी या गुरुर्वृष्या द्राक्षासावातपित्तनुत् ॥३८॥

गोस्तनी (भूरी) दाख भारी वीर्यदायक वातपित्त को दूर करनेवाली है॥३८॥

केश्यं रसायनं मेध्यं काश्मर्याः फलमुच्यते ॥३९॥

बालों को हितकारक रसायन बुद्धि को बढ़ानेवाला (कम्भारी) का फल कहा है॥३९॥

खर्जूरं मधुरं वृष्यं स्निग्धं शोणितपित्तजित् ।
क्षतक्षयापहं हृद्यं शीतलं तर्पणं गुरु ॥४०॥

खजूर मधुर वीर्यवर्द्धक स्निग्ध रुचिर और पित्त को जीतनेवाला है क्षत क्षय रोग को दूर करनेवाला हृदय को हितकारक शीतल तृप्तिकारक, और भारी है॥४०॥

मधूकस्यफलं पक्वं वातपित्तप्रणाशनम् ।
तस्य पुष्पं बृंहणीयमहृद्यं गुरुशीतलम् ॥४१॥

महुए का पक्का फल वात पित्त विकार का दूर करनेवाला है उसका पुष्प मदकारक मांसकारक हृदय को अहित कारक भारी और शीतल है।।४१।।

नारिकेलं गुरुस्निग्धं पित्तघ्नं स्वादुशीतलम् ।।
बलमांसकरं हृद्यं बृंहणं बस्तिशोधनम् ।।४२।।

नारियल गुरु चिकना पित्तनाशक स्वादु शीतल वल मांस करनेवाला हृदय को हितकारी मांस बस्तिशोधक है।।४२।।

तालं स्वादुरसं पक्वं गुरु पित्तविनाशनम् ।
तद्बीजं स्वादुपाकंतु मूत्रलं वातपित्तजित् ।।४३।।

पका तालफल स्वादु रसयुक्त भारी पित्तनाशक है उसका बीज पाक में स्वादु मूत्र का अधिक करनेवाला वात पित्त का जीतनेवाला है।।४३।।

कदलं मधुरं हृद्यं कषायं नातिशीतलम् ।
वातपित्तहरं रुच्यं वृष्यं श्लेष्मकरं गुरु ।।४४।।

केले की फली मधुर हृदय को हितकारक कसेली है बहुत ठंडी नहीं है वात पित्त की हरनेवाली रुचिकारक वीर्यवर्द्धक कफकारक और भारी है।।४४।।

श्लेष्मलं मधुरं शीतं श्लेष्मातकफलं गुरु ।
पनसं सकषायं तु स्निग्धं स्वादुरसं गुरु ।।४५।।

ल्हेसवे का फल कफकारक मधुर शीतल और भारी है। पनस (कटहल) कसेला चिकना रस में स्वादु और भारी है।।४५।।

पथ्या पञ्चरसायुष्या चक्षुष्याऽलवणा सरा ।
मेध्योष्णादीपनी दोषशोथकुष्ठज्वरापहा ।।४६।।

हरड पांचों रसों से युक्त चक्षु को हितकारी आयु की देनेवाली लवण रस से रहित सारक है, बुद्धि को बढ़ानेवाली गरम दीपन दोष शोथ कुष्ठ और ज्वर की हरनेवाली है।।४६।।

धात्रीतद्वद्विशेषेण वृष्याशीतैव वीर्यतः ।
हन्तिवातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्यशैत्यतः ।
कफं कटुकषायत्वात् फलेभ्योप्यधिकं च तत् ।।४७।।

इसी प्रकार आमल विशेष करके वीर्यकारक और शीतल हैं अम्ल

होने से वात को हरण करते हैं मधुर और शीत होने से पित्त को हरते हैं कटु और कसेला होने से कफ को हरता है इसके फल में अधिक गुण हैं।।४७।।

अक्षंभेदनरूक्षोष्णंवैस्वर्यं क्रिमिनुत्कटु ।
चक्षुष्यं स्वादुपाकं च कषायं कफपित्तनुत् ।।४८।।

अक्ष (वहेड़ा) भेदन है रूखा गरम वैस्वर्य कृमिनाशक कटु है नेत्रों को हितकारक पाक में स्वादु कसेला कफ और पित्त का नाशक है।।४८।।

पथ्यामज्जातु चक्षुष्यो वातपित्तहरो गुरुः ।।४९।।

हरड की गुठली नेत्रों को हितकारक वात पित्त हरनेवाली भारी है।।४९।।

बैभीतकोमदकरः कफमारुतनाशनः ।।५०।।

वहेड़ा मदकारक कफ और वात का नाश करनेवाला है।।५०।।

कोलमज्जातु मधुरः कषायः पित्तनाशनः ।
तृष्णाच्छर्द्यनिलघ्नश्च धात्रीमज्जापि तद्गुणः ।।५१।।

वहेड़े की मींगी मधुर कसेली पित्तनाशक तृष्णा छर्दि वातनाशक है यही गुण आमले की गुठली में हैं।।५१।।

प्रियालमज्जामधुरोवृष्यः पित्तानिलापहः ।।५२।।

पियाले (चिरोंजी की गुठली) मींगी मधुर वीर्यकारक पित्त वात हरनेवाली है।।५२।।

यस्ययस्यफलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्यतस्यैववीर्येण मज्जानमपिनिर्दिशेत् ।।५३।।

जिस-ज़िस वृक्ष का फल जैसा-जैसा होता है उसी फल की मींग में भी वैसा-वैसा ही गुण होता है।।५३।।

भल्लातकास्थ्यग्निसमंत्वङ्मांसं स्वादुशीतलम् ।।५४।।

भिलावें की गुठली अग्नि की समान छाल और गूदा स्वादु और शीतल है।।५४।।

करञ्जकिंशुकारिष्टफलं जन्तुप्रमेहनुत् ।
रूक्षोष्णं कटुकंपाके लघुवातकफापहम् ।।५५।।

करंजुआ टेसू नीम का फल जन्तुओं को प्रमेह को दूर करते हैं। रूखे उष्ण पाक में कटु लघु है वात और कफ को दूर करनेवाले हैं।।५५।।

तिक्तमीषद्विषहितं विडङ्गं क्रिमिनाशनम् ॥५६॥

वायविडङ्ग तीखी कुछ विष में हितकारी कृमि को नाश करती है॥५६॥

फलेषुपरिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्र तज्ज्ञेयमामं तद्धि गुणोत्तरम् ॥५७॥

जो पक्के फल हैं वे ही गुणदायक हैं बेल को छोड़कर ऐसा जानना वेल अपक्व (जो पका हुआ न हो) वही श्रेष्ठ है॥५७॥

व्याधितंक्रिमिजुष्टं च पाकातीतमकालजम् ।
वर्ज्जनीयं फलंसर्वमपर्यागतमेव च ॥५८॥
इति फलवर्गः

व्याधियुक्त कीड़े पड़ा हुआ जिसका पाक हो चुका है जो अकाल में उत्पन्न हुआ है जो पका नहीं है इस प्रकार का फल खाना न चाहिये॥५८॥

इति फलवर्ग:

धारं कारंतु तौषारं हैमं खाम्बु चतुर्विधम् ॥१॥

धारा का करका* शिशिर में होनेवाला हिम का होनेवाला (संहतिमान) आकाश का जल चार प्रकार का है॥१॥

धारंत्वत्रद्विधाप्रोक्तं गाङ्गं सामुद्रमेव च ॥२॥

उसमें धारा का जल दो प्रकार का है गंगा का जल और समुद्र का जल है और चरक में जो लिखा है कि 'जलमेकबिधं सर्वं पतत्यैन्द्रंनभस्तलात्' कि सब जल एक ही प्रकार का होता है यह सत्य है, तथापि अन्तरिक्ष का जल धूली मल विष लूतादि सम्बन्ध से दूषित हो जाता है, सो सदोष और निर्दोष दो प्रकार का है गंगा का निर्दोष और सागर का सदोष है। गंगाशब्द से अन्य नदी भी जानना और सागर शब्द से जलाशयादि भी जानना, सो आश्विन मास के विना समुद्र का जलपान करना नहीं चाहिये॥२॥

---

* दिव्य पवन बिजली के योग से ताडित हो जो जल आकाश से ओले बनकर गिरते हैं उसे करका कहते हैं।

येनाभिवृष्टममलं शाल्यन्नं राजतस्थितम् ।
अक्लिन्नमविवर्णं वा तत्पेयं गाङ्गमन्यथा ।
सामुद्रं तन्न पातव्यं मासादाश्वयुजाद्विना ॥३॥

कारण कि अगस्त्य के उदय से लूतादि दोष दूर हो जाता है जिस जल से सींचे हुए शाली धान्य रजतपात्र में स्थित क्लेद रहित निर्मल वर्ण के रहें वह जल पान करना चाहिये वही गंगा का जल जानना, वही पान के योग्य है और स्नान अवगाहन के योग्य है; इससे विपरीत समुद्र का जल जानना, वह पान के योग्य नहीं है॥३॥

खाम्बुगङ्गाभवं हृद्यं ह्लादिबुद्धिप्रबोधनम् ।
तन्वव्यक्तरसं मृष्टं शीतं लघ्वमृतोपमम् ॥
जीवनं तर्पणं चैव तद्वन्नाभसभूमिगम् ॥४॥

आकाश से गिरा हुआ और गंगाजल हृदय को हितकारक आनंददायक बुद्धि का प्रबोध करनेवाला है, आस्वाद सुख का देनेवाला, शीतल हलका अमृत के समान है, जीवन और तृप्ति का देनेवाला है, इसी प्रकार अन्तरिक्ष से भूमि में आया हुआ अर्थात् आकाश गुण सम्बन्धवाली भूमि का जल है॥४॥

कारकं तोयममृतं नैहारं सर्वदोषकृत् ।
अवश्यायभवं रूक्षं वातलं लघुशीतलम् ॥
दाहासृक्पित्ततृट्छर्दिसक्थिस्तम्भादिपूजितम् ॥५॥

करका ओले सम्बन्धी जल अमृतरूप है, निहार का जल सब दोषों का करनेवाला है और संहती भूत हुए हिम का जल रूखा वातकारक शीतल है दाह रुधिर पित्त तृष्णा छर्दि सक्थि स्तम्भादि में हितकारक है॥५॥

नादेयं वातलं रूक्ष दीपनं लघुलेखनम् ॥६॥

नदी का जल वातकारक रूखा दीपन हलका और लेखन है॥६॥

नदेऽभिष्यन्दि मधुरं सान्द्रं गुरुकफावहम् ॥७॥

नद शोणभद्र आदि का जल अभिष्यन्दि मधुर घना भारी कफ का करनेवाला है॥७॥

सारसं तुवरं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु ॥८॥

स्वयं निर्मित सरोवर का जल कसेला बलकारक तृष्णानाशक मधुर और लघु है॥८॥

ताडागं वातल स्वादुकषायं कटुपाकि च ॥९॥

तालाब का जल वातकारक स्वादु कसेला कटुपाकी है॥९॥

वाप्यं सक्षारकटुकं पित्तलं कफवातनुत् ॥१०॥

बावड़ी का जल क्षार युक्त कटु पित्तकारक कफ और वात का दूर करनेवाला है॥१०॥

कौपं कफघ्नं सक्षारं पित्तलं लघुदीपनम् ॥११॥

कुएं का जल कफनाशक खारी पित्तकारक लघु और दीपन है॥११॥

चौंडमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकारि च ॥१२॥

छोटी बावड़ी का जल अग्निकारक रूखा मधुर और कफ करनेवाला है॥१२॥

नैर्झरं लघुपथ्यंचदीपनं कफनाशनम् ॥१३॥

झरने का जल हलका है पथ्य है दीपन है कफनाशक है॥१३॥

औद्भिदं पित्तशमनं मधुरं न विदाहि च ॥१४॥

नीचे स्थान से ऊपर को उबलकर निकलता हुआ जल पित्त का शांत करनेवाला मधुर है विदाही नहीं है॥१४॥

वैकिरं लघुसक्षारं श्लेष्मलं वह्निदीपनम् ॥१५॥

वालुकादि हटाकर जल के स्थान से ग्रहण किया जल हलका क्षारयुक्त श्लेष्माकारक अग्नि प्रदीप्त करनेवाला है॥१५॥

कैदारं पाल्वलं स्वादुविपाकेगुरुदोषलम् ॥१६॥

केदार और तृष्णादि से आच्छादित अल्प सरोवर का जल स्वादु पाक में भारी दोष करनेवाला है॥१६॥

सामुद्रं लवणं विस्रं सर्वदोषप्रकोपणम् ॥१७॥

समुद्र का खारी जल आमगन्धी और सब दोष का कोप करनेवाला है॥१७॥

आनूपं वार्यभिष्यन्दि मधुरं पिच्छिलं गुरु ।
स्निग्धं वह्निहरं सान्द्रं जाङ्गलं वार्यतोन्यथा ॥१८॥

अनूप देश का जल अभिष्यन्दि मधुर चिकना और भारी है स्निग्ध

अग्नि का हरनेवाला सघन जांगल जल इससे विपरीत होता है।। १८।।

साधारणं वारिशीतं दीपनं मधुरं लघु ।।१९।।

साधारण जल शीतल दीपन मधुर और लघु होता है।। १९।।

पश्चिमोदधिगाः शीघ्रवहायाश्चामलोदकाः ।
पथ्याः समस्तास्तानद्यो विपरीतास्ततोन्यथा ।।२०।।

जो नदी पश्चिम की ओर बहती हैं पश्चिम सागर में जाती हैं, जिनका जल निर्मल है और शीघ्र बहती हैं उन सब नदियों का जल पथ्य है, इससे विपरीत अपथ्य है।।२०।।

उपलास्फालनाक्षेपविच्छेदैः खेदितोदकाः ।
हिमवन्मलयोद्भूताः पथ्यास्ताएवचास्थिराः ।।
क्रिमिश्लीपदहृत् कण्ठशिरोरोगान् प्रकुर्वते ।।२१।।

जो जल पत्थरों के आस्फालन आक्षेप विक्षेप से खेदित होता है, जो हिमालय और मलयाचल के स्थान गुफा से प्राप्त हुआ है, वे स्थिर जल भी पथ्य हैं कृमि रोग श्लीपद हृदय कण्ठ और शिर के रोगों को करता है।।२१।।

पारियात्रभवायाश्च विन्ध्यसह्यभवाश्चयाः ।।
शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ताहेतुः श्लीपदस्य च ।।२२।।

जो गुहाआदि स्थान में होनेवाले जल हैं जो जल विन्ध्यपर्वत और सह्यपर्वत में गुफादि में स्थित हैं वे शिरो रोग हृदय रोग कुष्ठ रोग और श्लीपद रोग के करनेवाले हैं।।२२।।

रक्षोघ्नं शीतलं ह्लादि ज्वरदाहविषापहम् ।
चन्द्रकान्तोद्भवं वारिपित्तघ्नं विमलं स्मृतम् ।।२३।।

चन्द्रक्रान्त मणि के प्रभाव से युक्तजल तथा आकाश में चन्द्रकिरण से प्राप्त हुआ जल राक्षस की पीड़ा निवारण करनेवाला शीतल आनंद करनेवाला ज्वर दाह विष का दूर करनेवाला पित्त का नाशक और निर्मल है।।२३।।

दिवार्ककिरणैर्जुष्टं जुष्टमिन्दुकरैर्निशि ।
अरुक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ।।२४।।

जो दिन में सूर्य की किरणों से युक्त है और रात्रि में जिसमें चंद्रमा

की किरणें पड़ती हैं वह जल रूखा नहीं है अभिष्यन्दतारहित आकाश जल की बराबर है।।२४।।

नारिकेलोदकं वृष्यं स्वादुस्निग्धं हिमं गुरु ।
हृद्यं पित्तपिपासाघ्नं दीपनं बस्तिशोधनम् ।।२५।।

नारियल का जल वीर्यकारक स्वादु चिकना ठंडा भारी है हृदय को हितकारक पित्त और पिपासा का नाश करनेवाला दीपन और बस्तिशोधक है।।२५।।

नारिकेलजलं जीर्णं गुरुविष्टम्भिपित्तकृत् ।।२६।।

नारियल का जल जीर्ण हुआ भारी विष्टम्भी और पित्त का करनेवाला है।।२६।।

वालकमुकतोयंतु तृष्णापित्तास्रजिद्गुरु ।।२७।।

सुगंधवाला भद्रमोथे का जल तृष्णा पित्त रक्त को जीतनेवाला और भारी है।।२७।।

तालाम्बु पित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु ।।२८।।

ताल का जल पित्त का जीतनेवाला शुक्र और दूध की वृद्धि करनेवाला भारी है।।२८।।

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषेरक्तेमदात्यये ।
श्रमक्लमपरीतेषु तमकेवमथौतथा ।।
ऊर्ध्वगे रक्तपित्तेतु शीतमम्भः प्रशस्यते ।।२९।।

शीतल जल मूर्च्छा पित्तकोप उष्ण दाह विषरक्त मदात्यय श्रम खेद तमक (दु:ख) वमन रक्तपित्त के ऊर्ध्वगति होने में गुणकारक कहा है।।२९।।

पार्श्वशूले प्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे ।
आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे सद्यःशुद्धे नवज्वरे ।।
हिक्कायां स्नेहपीते च शीताम्बुपरिवर्जयेत् ।।३०।।

पसली का दर्द पीनस वातरोग गलग्रह रोग अफरा कोष्ठ स्तम्भ तत्काल शुद्धि नवीन ज्वर हिचकी स्नेहपान इसमें शीतल जल का पीना वर्जित है।।३०।।

उष्णोदकं सदापथ्यं कासश्वासज्वरापहम् ।
कफवातामदोषघ्नं दीपनं बस्तिशोधनम् ।।३१।।

गरम जल सदा पथ्य है कास श्वास ज्वर का हरनेवाला कफ वात आम दोष का हरनेवाला दीपन बस्तिशोधन करनेवाला है॥३१॥

श्रृतशीतं त्रिदोषघ्नं यदन्तर्बाष्पशीतलम् ।
शीतीकृतंतु विष्टम्भि दुर्ज्जरं पवनाहतम् ॥३२॥

औटाकर ठंड़ा किया हुआ जल त्रिदोषनाशक है जो भीतर बाफ से ही शीतल किया गया है वह कोष्ठ है और जो पवन लगने से शीतल हुआ है वह दुर्जर और विष्टम्भि है॥३२॥

नतत्पर्य्युषितं देयं कदाचिदपि जानता ।
व्यम्लीभवेत् पर्युषितं कफक्लेदि पिपासवे ॥३३॥

औटाया जल बासी किसी प्रकार सेवन करना नहीं चाहिये बासी जल विरस हो जाता है वह कफ क्लेदवाले और प्यास को अहितकारी है॥३३॥

श्रृतंतोयं दिवारात्रौ गुरु रात्रिश्रृतं दिवा ॥३४॥

दिन का पकाया जल रात्रि में भारी हो जाता है और रात का औटाया दिन में भारी हो जाता है॥३४॥

भौमानामम्भसांप्रातः सर्वेषां ग्रहणं मतम् ।
तदाहि शैत्यं नैर्मल्यं तौचापां परमौगुणौ ॥३५॥

पृथ्वी के जल सब प्रकार के प्रातःकाल में ग्रहण करने श्रेष्ठ हैं उस समय वे शीतल निर्मल गुणों में परम श्रेष्ठ होते हैं॥३५॥

आन्तरिक्षंतु वर्षासु कौपमौद्भिदमेवच ।
अगस्त्योदयनैर्मल्यात् सर्वं शरदिशस्यते ॥
सरस्तडागसम्भूतं हेमन्ते जलमिष्यते ।
कौपचौण्डे वसन्ते तु ग्रीष्मेप्रास्त्रवणौद्भिदे ॥
कौपं प्रावृषि सर्वं वा संस्कृतं वारिचेष्यते ॥३६॥

हठ (सिवारभेद) सिवार कीचड़ आदि से युक्त जल दोषकारक है जो अत्यंत वायु से वर्षाऋतुओं में आकाश का जल ग्रहण करना चाहिये जो गंगा का हो तथा कूप और उद्भिदजल ग्रहण करना अगस्त्य के उदय में कुवार में सब जल निर्मल हो जाते हैं सरोवर और तडाग का जल हेमन्त में निर्मल होकर पीने के योग्य होता है कुएं और चौण्ड का जल

वसन्त में और ग्रीष्म में हितकारक और सोत का जल निर्मल पीने के योग्य है कुएं का वा और कहीं का जल चौमासे में शुद्ध करके पान करना चाहिये।।३६।।

हठशैवलपंकादिसंछन्नं दोषलं च तत् ।
वाय्वर्ककिरणास्पृष्टं नपेयं साधनादृते ।।३७।।

शैवाल पंक पत्रादि से जो ढका रहता है और जिसको वायु और सूर्य की किरणें नहीं स्पर्श करतीं ऐसा जल पीना न चाहिये जब तक उसे सिद्ध न कर ले।।३७।।

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेकेऽश्वयथौ क्षये ।
मन्दाग्नावुदरे कुष्ठे ज्वरेनेत्रामयेतथा ।।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ।।३८।।
इति पानीयवर्गः

अरुचि पीनस जुकाम प्रसेक सूजन क्षय मन्दाग्नि उदर कुष्ठ ज्वर नेत्ररोग व्रण मधुप्रमेह इन रोगों में बहुत जल कमती पीना चाहिये।। ३८।।

इति पानीयवर्गः

अथ क्षीरवर्गः

क्षीरमष्टविधं गव्यमाजमौरभ्रमाहिषे ।
कारेणवमथौष्ट्रं च वाडवं मानुषं तथा ।।१।।

आठ प्रकार का दूंध होता है गौ का बकरी का मेषी का भैंस का हथनी का ऊंटनी का घोड़ी का और स्त्री (मानुषी का) यद्यपि और जन्तुओं के भी दूध होता है परंतु उपयोगी होने से यही वर्णन किया गया है।।१।।

क्षीरं स्वादुरसं स्निग्धमोजस्यं धातुवर्द्धनम् ।
वातपित्तहरं वृष्यं श्लेष्मलं गुरुशीतलम् ।।२।।

क्षीर स्वादु रसयुक्त स्निग्ध ओज और धातु का बढ़ानेवाला वात पित्त हरनेवाला वीर्यवर्द्धक श्लेष्मकारक भारी और शीतल है।।२।।

गोक्षीरमनभिष्यन्दि स्निग्धं स्वादु रसायनम् ।
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।।

जीवनीयं तथा वातपित्तघ्नं परमं मतम् ॥३॥

गौ का दूध अनभिष्यंदि (अस्रावक) स्निग्ध स्वादु और रसायन है रक्त पित्त का हरनेवाला ठंडा रसपाक में मधुर जीवन का देनेवाला और वात पित्त का हरनेवाला है॥३॥

छागं कषायमधुरं शीतं ग्राहि पयोलघु ।
रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासगरापहम् ॥
अजानामल्पकायत्वात् कटुतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात् सर्वव्याधिहरं पयः ॥४॥

छाग का दूध कसेला मधुर शीतल ग्राही प्रिय और लंघु है, रक्तपित्त अतिसार का दूर करनेवाला, क्षय और कासगर रोग का दूर करनेवाला है जो कि बकरी अल्प शरीरवाली हैं नित्य कटु और तिक्त द्रव्य का सेवन करती हैं न बहुत जल पीती हैं और परिश्रम के करने से उनका दूध सब दोषों का हरनेवाला है॥४॥

मेषीक्षीरं गुरुस्वादु स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् ।
शुद्धेऽनिलेभवेत्पथ्यं सेकेचानिलशोणिते ॥५॥

मेषी का दूध भारी स्वादु स्निग्ध गरम कफ और पित्त का करनेवाला अग्नि में शुद्ध करने से पथ्य है और वातरक्त में सेक में हितकारक है॥५॥

महिषीणां गुरुतरं गव्याच्छीततरं पयः ।
स्नेहादूनमनिद्राणामत्यग्नीनां हितंचतत् ॥६॥

भैंस का दूध गौ के दूध से अधिक भारी है और अधिकतर शीतल है घृत में अधिक है जिनको निद्रा न आती हो वा अधिक अग्नि हो उनको हितकारक है॥६॥

हस्तिनीनांपयोबल्यं गुरु स्थैर्यकरं वरम् ।
ईषद्रूक्षोष्णलवणमौष्ट्रकं दीपनं लघु ॥
शस्तंवातकफानाहकृमिशोफोदरार्शसाम् ॥७॥

हथिनी का दूध बलकारक भारी स्थिरता करनेवाला श्रेष्ठ है, कुछ रूखा नोनखरा दीपन और लघु ऊंटनी का दूध होता है। यह वात कफ आनाह कृमि शोफ उदर अर्श रोग में हितकारक है॥७॥

उष्णमैकशफंबल्यं शाखावातहरंपयः ।
ईषदम्लं स्वादुरूक्षं लवणानुरसं लघु ।।८।।

एक खुरवाले चौपायों का दूध बलकारक बाहु सक्थि आदि शरीर के अवयवों की बात का हरनेवाला है कुछ अम्ल स्वादु रूखा लवण रसयुक्त और लघु होता है।।८।।

नार्यास्तु मधुरंस्तन्यंकषायानुरसंहिमम् ।
नस्यश्चोतनयोः पथ्यं जीवनं लघुदीपनम् ।।९।।

स्त्रियों का दूध मधुर कसेला रसयुक्त शीतल है नस्य और नेत्रों के तर्पण में पथ्य जीवनदायक लघु और दीपन है।।९।।

क्षीरसन्तानिका वृष्या स्निग्धा पित्तानिलापहा ।।१०।।

दूध का विकार मलाई वीर्यकारक स्निग्ध पित्त और वात को हरनेवाली है।।१०।।

पयोभिष्यन्दिगुर्वामं प्रायशः परिकीर्त्तितम् ।
तदेवोक्तंलघुतरमनभिष्यंदिवैशृतम् ।।११।।

बिना औटाया दूध भारी अभिष्यन्दि होता है और औटाया हुआ अत्यंत लघु और अनभिष्यन्दि होता है।।११।।

वर्जयित्वा स्त्रियाःस्तन्यमाममेवहितद्धितम् ।।१२।।

परंतु स्त्री का दूध औटाना नहीं चाहिये वह कच्चा ही हितकारक है।।१२।।

धारोष्णं गुणवत् क्षीरं विपरीतमतोन्यथा ।।१३।।

दुहते में दूध की धार पान करना गुणकारक है उष्ण है अन्यथा इससे विपरीत गुण हैं।।१३।।

तदेवातिशृतं सर्बं गुरु बृंहणमुच्यते ।।१४।।

बहुत औटाया हुआ दूध भारी और पुष्टिजनक है।।१४।।

अनिष्टगन्धमम्लंच विवर्णं विरसंचयत् ।
वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्चविग्रथितं भवेत् ।।१५।।

जिसमें दुर्गन्ध आती हो खट्टा विवर्ण और विरस हो गया हो वह और नमक पड़ा दूध तथा फटा हुआ दूध खाना वर्जित है।।१५।।

दध्यम्लं मधुरं ग्राहि गुरूष्णं वातनाशनम् ।

मेदःशुक्रबलश्लेष्मपित्तरक्ताग्निशोफकृत् ॥
रोचिष्णुशस्तमरुचौशीतके विषमज्वरे ।
पीनसेमूत्रकृच्छ्रे च रूक्षंतु ग्रहणीगदे ॥१६॥

दही खट्टा है मधुर है ग्राही भारी वात का नाशक है, मेद शुक्र बल श्लेष्मा पित्तरक्त अग्नि शोफ का करनेवाला है रुचिकारक है अरुचि शीत विषमज्वर पीनस मूत्रकृच्छ्र में हितकारक है और ग्रहणी रोग में रूखा हितकारक है॥१६॥

गव्यं दधिचमंगल्यं वातघ्नं शुचिरोचकम् ।
स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम् ॥१७॥

गौ का दधि मंगलदायक वातनाशक पवित्र और रोचक है स्निग्ध पाक में मधुर दीपन और बलवर्द्धक है॥१७॥

दध्याजं कफपित्तघ्नं लघु वातक्षयापहम् ।
दुर्नामिश्वासकासेषु हितमग्नेश्च दीपनम् ॥
विपाकेमधुरं वृष्यं रक्तपित्तप्रसादनम् ।
बलासवर्द्धनं स्निग्धं विशेषाद्दधि माहिषम् ॥१८॥

अजा बकरी का दही कफ पित्त का नाशक हलका वात और क्षय रोग का नाशक है बवासीर स्वाद कास रोग और अग्नि दीपन में हितकारक है विपाक में मधुर वीर्यवर्द्धक रक्तपित्त का प्रसन्न करनेवाला, कफवर्द्धक स्निग्ध विशेष करके महिषी का दधि है॥१८॥

कोपनं कफवातानां दुर्नाम्नांचाविकं दधि ॥१९॥

भेड़ का दही कफ वात का कोप करनेवाला तथा अर्शरोग का नाशक है॥१९॥

दीपनीयमचक्षुष्यं वातलं वाडवं दधि ।
रूक्षमुष्णकषायं च कफमूत्रापहं च तत् ॥२०॥

घोड़ी का दही दीपन है चक्षु को अहितकारक है, तथा वातकारक है रूखा गरम कसैला कफ और मूत्र का हरनेवाला है॥२०॥

स्निग्धं विपाके मधुरं बल्यं सन्तर्पणं गुरु ।
चक्षुष्यमग्र्यंदोषघ्नं दधिनार्या गुणोत्तरम् ॥२१॥

स्त्री के दूध का दही स्निग्ध विपाक में मधुर बलकारक तृप्तिकारक

भारी नेत्रों को हितकारी है त्रिदोषनाशक और गुणों में श्रेष्ठ है।।२१।।

लघुपाके बलासघ्नं वीर्योष्णं पक्तिनाशनम् ।
कषायानुरसंनाग्यादधिवर्च्चोविबन्धनम् ।।२२।।

पाक में लघु कफनाशक वीर्य में उष्ण पाकनाशक कसेला रस में मलबन्धक हथिनी का दही होता है।।२२।।

दधीन्युक्तानियानीह गव्यादीनि पृथक् पृथक् ।।
विज्ञेयमेवसर्वेषु गव्यमेवगुणोत्तरम् ।।२३।।

जो कि गौ आदि के दही पृथक्-पृथक् कहे हैं इस प्रकार सब के दही में उत्तरोत्तर गुण जानना।।२३।।

वातघ्नंकफकृत्स्निग्धं बृंहणं नातिपित्तकृत् ।
कुर्याद्भक्ताभिलाषंचदधियत् सुपरिस्रुतम् ।।२४।।

पाकादि कर दही में अच्छी तरह मिलाने से भोजन में इच्छा करता है वातनाशक कफकारक स्निग्ध पुष्टिकारक और अत्यंत पित्तकारक नहीं है।।२४।।

शृतक्षीरात्तुयज्जातं गुणवद्दधितत् स्मृतम् ।
वातपित्तहरं रुच्यं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ।।२५।।

जो औटे हुए दूध से उत्पन्न दही है वह गुणकारक होता है। वह वात पित्त का हरनेवाला रुचिकारक धातु और अग्नि का बल बढ़ाने वाला है।।२५।।

दधित्वसारं रूक्षंचग्राहिविष्टम्भिवातलम् ।
दीपनीयं लघुतरंसकषायंरुचिप्रदम् ।।२६।।

घी रहित दही रूखा ग्राही विष्टम्भकारक वातवर्द्धक है दीपन अत्यंत लघु कसेला और रुचि का करनेवाला है।।२६।।

दध्नः सरोगुरुर्वृष्योविज्ञेयोऽनिलनाशनः ।
वह्नेर्विधमनश्चापिकफशुक्रविवर्द्धनः ।।२७।।

दही की मलाई भारी स्निग्ध वीर्यवर्द्धक वातनाशक अग्नि मन्द करनेवाली कफ और वीर्य की बढ़ानेवाली है।।२७।।

तक्रं लघुकषायाम्लं दीपनं कफवातजित् ।
शोथोदरार्शोग्रहणीदोषमूत्रग्रहारुचि ।।

प्लीहगुल्मघृतव्यापद्गरपाण्डामयान् जयेत् ॥२८॥

मट्ठा लघु कसेला खट्टा दीपन कफ और वात का जीतनेवाला सृजन उदररोग बवासीर संग्रहणी मूत्रग्रह अरुचि प्लीहा गुल्म स्नेह व्यापत गर विष पाण्डुरोग इनको दूर करता है॥२८॥

मस्तुतद्वत् सरंस्रोतःशोधिविष्टम्भजिल्लघु ॥२९॥

इसी प्रकार दधिमस्तु (दही का पानी) सारक स्रोतों को शोधनेवाला विष्टम्भ को हरनेवाला लघु है॥२९॥

ससरं निर्जलं घोलं तक्रं पादजलान्वितम् ।
अर्द्धोदकमुदश्वित्स्यान्मथितं सारवर्जितम् ॥३०॥

सर (मलाई) युक्त निर्जल मट्ठा घोल कहाता है, चौथाई जल मिला तक्र कहाता है आधा जल जिसमें मिला हो वह उदश्वित् और मथा हुआ जलरहित उन्मथित कहाता है॥३०॥

घोलं पित्तानिलहरं तक्र दोषत्रयापहम् ।
उदश्विच्छ्लेष्मलंचैनमथितं कफपित्तनुत् ॥३१॥

घोल पित्त वात का हरनेवाला है, तक्र त्रिदोष का हरनेवाला है उदश्वित् कफ करनेवाला और मथित कफ पित्तका दूर करनेवाला है॥३१॥

वातेम्लं सैन्धवोपेतं पित्तेस्वादुसशर्करम् ।
पिबेत्तक्रं कफेचापिव्योषक्षारसमायुतम् ॥३२॥

वात की अधिकता में अम्लतक्र को सैंधा डालकर पिये पित्त में बूरा डालकर स्वादु पिये और कफ की अधिकता में सोंठ मिरच पीपल और जवाखार के साथ पिये॥३२॥

नैवतक्रं क्षतेदद्यात् नोष्णकाले न दुर्बले ।
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगेरक्तपित्तके ॥३३॥

क्षत में तक्र का सेवन न करे न उष्ण काल में न दुर्बलता में सेवन करे, तथा मूर्च्छा भ्रम दाह रक्तपित्त रोग में तक्र का सेवन करना नहीं चाहिये॥३३॥

ग्राहिणीवातलारूक्षाविज्ञेयातक्रकूर्च्चिका ॥३४॥

ग्राही वातकारक रूखी तक्रकूर्चिका (आमिक्षा) जाननी॥३४॥

तक्राल्लघुतरोमण्डः कूर्च्चिकादधितक्रजः ॥३५॥

मण्ड (रस) तक्र से अत्यंत हलका होता है दही और तक्र से कूर्चिका होती है दही के साथ दूध पकाने से कूर्चिका होती है कोई तक्र से दधि कूर्चिका का होना कहते हैं विशेषकर दही की होती है।।३५।।

किलाटोऽनिलहावृष्यः कफनिद्राकरोगुरुः ।।३६।।

किलाट (नष्ट क्षीरपिंड) वायुनाशक वीर्यकारक कफ निद्रा करनेवाला भारी होता है।।३६।।

मधुरोबृंहणस्तद्वत् पीयूषोपिसमोरटः ।।३७।।

मधुर पुष्टिकारक पीयूष और मोरट होता है तुरंत प्रसव हुए पशु का दूध पीयूष कहाता है और सात रात के पीछे उसकी मोरट संज्ञा होती है।।३७।।

नवनीतं नवं वृष्यं शीतं वर्णबलाग्निकृत् ।
संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयाऽर्शोर्दितकासजित् ।।३८।।

ताजा मक्खन वीर्यकारक शीतल वर्ण बल अग्नि का करनेवाला ग्राही वात पित्त रुधिर क्षय अर्श (बवासीर) अर्दित और खांसी का दूर करनेवाला है।।३८।।

क्षीरोद्भवंतु संग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ।।३९।।

दूध से मथकर निकला मक्खन संग्राही रक्तपित्त नेत्ररोग को दूर करनेवाला है।।३९।।

विकल्प एषदध्यादिःश्रेष्ठोगव्योऽभिवर्णितः ।
विकल्पानवशिष्टांस्तु क्षीरवीर्यं समादिशेत् ।।४०।।

यह विकल्प दही से आदि कहे परंतु सब में हर द्रव्य गौ का मक्खन बहुत अच्छा है दूसरे जीवों के दूध के अनुसार उनके मक्खन के गुण जानने।।४०।।

घृतं बुद्ध्यग्निशुक्रौजोमेदःस्मृतिकफावहम् ।
वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीजरापहम् ।।
स्नेहोत्तमं योगवाहिसर्वथा मधुरं हिमम् ।।४१।।

घृत बुद्धि अग्नि वीर्य ओज मेद स्मृति कफ का बढ़ानेवाला है और वातपित्त विष उन्माद शोष, अलक्ष्मी जरा का दूर करनेवाला है संस्कार वश से कफ को भी दूर करता है स्नेहों में उत्तम योगवाही (जिस द्रव्य के

संग संयुक्त करो वैसा ही हो जाय) सर्वथा मधुर और शीतल है।।४१।।

गव्यं घृतं घृतश्रेष्ठं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।
विपाके मधुरं श्रेष्ठं वातपित्तविषापहम् ।।४२।।

गऊका घृत श्रेष्ठ है नेत्रों को हितकारी बल का बढ़ानेवाला पाक में मधुर श्रेष्ठ वात पित्त और विष का दूर करनेवाला है।।४२।।

माहिषंतु घृतं स्वादु पित्तास्रानिलनुद्धिमम् ।।४३।।

भैंस का घृत स्वादु पित्तरक्त वातनाशक और ठंडा है।।४३।।

छागं घृतं तु चक्षुष्यं लघ्वग्निबलवर्द्धनम् ।।४४।।

बकरी का घृत नेत्रों को हितकारक लघु अग्नि और बल का बढानेवाला है।।४४।।

आविकादीनि सर्पींषिबुद्ध्वास्वक्षीरवद्वदेत् ।।४५।।

भेड़ आदि के घी उनके घृतकी समान गुणवाले हैं।।४५।।

सर्पिः पुराणं त्रिमलप्रतिश्यातिमिरापहम् ।
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ।।४६।।

पुराना घी त्रिदोष पीनस तिमिर रोग का हरनेवाला मूर्च्छा कुष्ठ विष उन्माद ग्रह अपस्मार का नाश करता है उग्र गंधवाला पुराना घृत दश वर्ष में होता है जितना-जितना पुराना हो उतना-उतना गुणों में अधिक होता है।।४६।।

क्षीरघृतंतु संग्राहितर्पणं नेत्ररोगनुत् ।।४७।।

दूध से निकाला घृत ग्राही तृप्तिकारक नेत्ररोग दूर करता है।।४७।।

सर्पिर्मण्डः सरः स्वादुर्योनिश्रोत्रशिरोऽक्षिजान् ।
गदान् जयति शोथघ्नो रूक्षस्तीक्ष्णस्तनुश्श्वसः ।।४८।।

इति क्षीरवर्गः

घृतमण्ड सारक है योनि श्रोत्र शिर नेत्रों के रोगों को दूर करता तथा शोक दूर करता है रूखा और तीक्ष्ण है।।४८।।

इति क्षीरवर्गः

अथ तैलवर्गः

तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगहरं स्मृतम् ।
कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायिच ।।
पित्तलं बद्धविण्मूत्रं न च श्लेष्माभिवर्द्धनम् ।
वातघ्नमुत्तमं बल्यंत्वच्यं मेधाग्निवर्द्धनम् ।।१।।

संयोग संस्कार से तेल सब रोगों का हरनेवाला है कसेला रसीला स्वादु सूक्ष्म गरम और व्यवायी है पित्तकारक विष्ठा मूत्र का बांधनेवाला कफ को नहीं करनेवाला वातहारक बलकारक त्वचा को हितकारक मेधा और अग्नि का बढ़ानेवाला है।।१।।

सार्षपं कटुतीक्ष्णोष्णं कफशुक्रानिलापहम् ।
लघुपित्तास्रकृत्कोठकुष्ठार्शोव्रणजन्तुजित् ।।२।।

सरसों का तेल कटु तीक्ष्ण गरम कफ वीर्य वात का हरनेवाला, हलका रक्तपित्त करनेवाला, कोठ कुष्ठ बवासीर व्रण कृमि का दूर करनेवाला है।।२।।

सेकाभ्यंगावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ।
तद्वस्तिषुच पानेषु नस्येकर्णाक्षिपूरणे ।।
अन्नपानविधौ चापि प्रयुज्यं वातशान्तये ।।३।।

सेक मालिश स्नान में तिल का तेल उत्तम है, तथा बस्तिशोधन पान नस्य कर्म आंख नाक के पूर्ण करने में अन्नपान विधि में वात शांति में इसका प्रयोग करना चाहिये।।३।।

तैलमेरण्डजं तिक्तं कटुस्वादुसरं गुरु ।
ब्रध्नगुल्मानिलकफानुदरान् विषमज्वरम् ।।
रुक्शोफौ च कटीगुह्यकोष्ठपृष्ठाश्रयौजयेत् ।।४।।

एरंड़ का तेल तीखा स्वादु कटु रसयुक्त और सारक भारी है ब्रध्न गुल्म वात कफ उदर रोग विषमज्वर दर्द सूजन कमर गुह्य, कोष्ठ, पीठ के दर्द को दूर करता है।।४।।

तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं विस्रं रक्तैरण्डोद्भवं त्वति ।।५।।

तथा तीक्ष्ण उष्ण चिकना सारक लाल एरण्ड का तेल होता है।।५।।

उमाकुसुम्भजं तूष्णं त्वग्दोषकफपित्तजित् ।।६।।

अलसी का तेल गरम त्वचा के दोष और कफ पित्त का जीतने वाला है।।६।।

करञ्जनिम्बतैलंतु नात्युष्णं कफपित्तजित् ।
तिक्तं क्रिमिहरं तैलं शेषं योनिवदादिशेत् ।।७।।

करंज और नीम का तेल बहुत उष्ण नहीं, कफ और पित्त का जीतनेवाला है। तीखा कृमि हरनेवाला है, शेष जो वस्तु जैसी हो वैसा उसका तैल जाने।।७।।

सर्वेभ्यस्त्विहतैलेभ्यस्तिलंतैलं विशिष्यते ।।८।।

सब तेलों से तिल का तेल अधिक उत्तम है।।८।।

वसामज्जा च वातघ्नौ बलपित्तकफप्रदौ ।
मांसानुरूपगन्धौ च विद्यान्मेदोऽपितावि‌व ।।९।।

इति तैलवर्गः

दूसरे पदार्थों का निकाला तेल गुणों में उन पदार्थों के समान है चर्बी और मज्जा अस्थि के भीतर का भाग मज्जा कहलाया जाता है वातनाशक बल पित्त और कफ की देनेवाली और मांस के अनुसार उनमें गंध और मेद जानना जिस जीव का जैसा मांस वैसी उसकी चर्बी जाननी।।९।।

इति तैलवर्गः

अथ ऐक्ष्वादि वर्गः

इक्षोरसो हिमोवृष्यस्तर्पणो जीवनः सरः ।
वातासृक्पित्तजित्स्वादुःस्निग्धः प्रीणनबृंहणः ।
रसोदन्तक्षतः श्लेष्मकारणं न विदाहवान् ।।१।।

ईख का रस ठंडा वीर्यकारक तृप्तिकारक जीवनदायक सारक वात रक्त पित्त का जीतनेवाला स्वादु स्निग्ध प्रीतिकारक बलकर्ता रस दन्त पीड़ाकारक श्लेष्मा का करनेवाला तथा विदाही नहीं है।।१।।

यान्त्रिकस्तु विदाहीस्याद्गुरुस्त्वग्ग्रन्थियोगतः ॥२॥

कुल्हाड़ी नामक यंत्र से पेला हुआ रस विदाही हो जाता है त्वचा और गांठ के योग से भारी होता है॥२॥

अतीवमधुरो मूले मध्ये मधुर एव च।
अग्रे चाक्षिषु विज्ञेय इक्षूणां लवणो रसः ॥३॥

मूल में अतीव मधुर मध्य में मधुर और गन्ने की फुलवी पर यानि अग्र भाग में नूनखरा रस होता है॥३॥

पक्वोरसो गुरुः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातजित् ॥४॥

पक्का रस भारी स्निग्ध तीक्ष्ण कफ और वात का जीतनेवाला है॥४॥

फाणितं गुर्वभिष्यन्दिबृंहणं कफशुक्रलम् ॥५॥

इसका फांट भारी अभिष्यन्दि पुष्टिकारक कफ और वीर्य का करनेवाला है॥५॥

रूक्षं मधुकपुष्पोत्थं फाणितं त्वथवातहृत्।
कफदं मधुरं पाके कषायं बस्तिदूषणम् ॥६॥

महुए के फूल के रस का फांट वात का हरनेवाला है कफकारक पाक में मधुर कसेला बस्ति को दूषित करनेवाला है॥६॥

गुडोवृष्यो गुरुः स्निग्धः सक्षारो मूत्रशोधनः।
नातिपित्तहरो मेदः कफक्रिमिबलप्रदः ॥७॥

गुड़ पुष्टिकारक, गुरु चिकना क्षारयुक्त मूत्र का शोधन करनेवाला पित्त का बहुत न हरनेवाला मेद कफ कृमि और बलकारक है॥७॥

पित्तघ्नो मधुरः शुद्धो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥८॥

और शुद्ध किया हुआ मधुर पित्त का हरनेवाला वातनाशक रुधिर का स्वच्छ करनेवाला है॥८॥

सपुराणोऽधिकगुणो गुडः पथ्यतमः स्मृतः ॥९॥

पुराना गुड़ अधिकतर गुणदायक और पथ्य है॥९॥

खण्डं वृष्यतमं बल्यं चक्षुष्यं बृंहणं तथा।
वातपित्तहरं नातिस्निग्धं हृद्यं सुखप्रदम् ॥१०॥

खांड़ वीर्यकारक बलदायक नेत्रों को हितकारक मांसवर्द्धक वात पित्त को हरनेवाली कुछेक स्निग्ध हृदय को हितकारक सुखदायक है॥१०॥

शर्करावातपित्तासृङ्मूर्च्छाछर्दिविषापहा ॥११॥

शक्कर वात पित्त रुधिर विकार मूर्च्छा छर्दि विष की हरनेवाली है॥११॥

तमराजस्तुतृष्णाघ्नोज्वरदाहास्रपित्तजित् ॥१२॥

तमराज (शर्करा भेद) तृष्णानाशक ज्वर दाह रुधिर और पित्त को जीतनेवाली है॥१२॥

वृष्याक्षीणक्षतहिता सस्नेहा गुडशर्करा ॥१३॥

स्नेहयुक्त गुड़ और शक्कर वीर्यवर्द्धक क्षीण और क्षत (घाव) में हितकारक है॥१३॥

मधुजा शर्करा रूक्षा तृष्णाछर्द्यतिसारनुत् ।
तद्गुणा तिक्तमधुरा सस्नेहा यासशर्करा ॥१४॥

मधु से उत्पन्न हुई शर्करा रूखी तृष्णा छर्दि अतिसार को दूर करनेवाली है जो स्नेहयुक्त शर्करा है उसके गुण तीखे और मधुर हैं॥१४॥

गुडमत्स्यण्डिकाखण्डशर्करा विमलाः परम् ॥१५॥

गुड़ की अपेक्षा मत्स्यण्डिका निर्मल है (गुड़ की निखारकर बनाई टिकिया) गुड़ की मत्स्यण्डिका से खांड़ और खांड़ से बूरा निर्मल है॥१५॥

यथा यथैषां वैमल्यं मधुरत्वं तथा तथा ।
स्नेहगौरवशैत्यानि सरत्वं च तथा तथा ॥१६॥

जितनी-जितनी इनमें निर्मलता हो उतनी ही उतनी मधुरता अधिक होती है और उतना उतना ही स्नेह गुरुता और शीतलता अधिक होती जाती है तथा सारक होते जाते हैं॥१६॥

मधुस्वादुरसं शीतं व्रणशोधनरोपणम् ।
कषायानुरसं रूक्षं बल्यं दीपनलेखनम् ॥
सन्धानं लघुचक्षुष्यं स्वर्यं हृद्यत्रिदोषनुत् ।
श्वासहिक्काविषहरमुष्णं खाम्बुविरोधि च ॥१७॥

सहत स्वादु रस से युक्त शीतल व्रण का शोधन और रोपण करनेवाला है कसेला रसयुक्त रूखा बलकारक दीपन और लेखन है। टूटे जोड़ को मिलानेवाला हलका नेत्रों को हितकारक स्वर और हृदय को हितकारक त्रिदोषहारक श्वास हिचकी विष का हरनेवाला गरम

आकाश जल का विरोधी है।।१७।।

माक्षिकं भ्रांमरं क्षौद्रं पौत्तिकं मधुजातयः ।
माक्षिकं प्रवरं तेषां विशेषाद्भ्रामरं गुरु ।।१८।।

माक्षिक भ्रामर क्षौद्र पौत्तिक यह चार मधु की जाति हैं यद्यपि सुश्रुत में आठ प्रकार का कहा है परंतु चार प्रकार का सर्वत्र प्रसिद्ध है उन सब में माक्षिक सहत श्रेष्ठ है और भ्रामर गुरु है।।१८।।

माक्षिकं तैलवर्णस्याद्घृतवर्णंतु पौत्तिकम् ।
क्षौद्रंतुकपिलंविद्याच्छ्वेतं भ्रामरमुच्यते ।।१९।।

माक्षिक मधु तेल के रंग का पौत्तिक घृत वर्ण का क्षौद्र कपिल वर्ण का भ्रामर श्वेत वर्ण का होता है।।१९।।

बृंहणीयं मधुनवं नातिश्लेष्महरं सरम् ।
मेदःस्थौल्यापहंग्राहि पुराणमतिलेखनम् ।।
दोषत्रयहरं पक्वमाममम्लं त्रिदोषकृत् ।।२०।।

नवीन मधु पुष्टिकारक है तथा अधिकतर श्लेष्म को हरण नहीं करता है सारक है। मेद की स्थूलता को हरनेवाला ग्राही लेखन पुराना मधु होता है पक्का मधु त्रिदोष हरनेवाला है कच्चा अम्ल और त्रिदोष का करनेवाला है।।२०।।

तद्युक्तं विविधैर्योगैर्निहन्यादामयान्बहून् ।।२१।।

और अनेक योगों के साथ में अनेक रोगों को दूर करता है।।२१।।

उष्णेन मधुसंयुक्तं वमनेष्ववचारितम् ।
अपाकादनवस्थानान्नविरुध्येत पूर्ववत् ।।२२।।

इत्यैक्षवादिवर्गः

उष्ण मधु के साथ वमन में औषधी देनी अपाका और अनवस्था में पूर्ववत् विरोध नहीं होता।।२२।।

इत्यैक्षवादिवर्गः

अथ मद्यादि वर्ग:

सर्वं पित्तकरं मद्यमम्लं दीपनपाचनम् ।
भेदनं कफवातघ्नं हृद्यं बस्तिविशोधनम् ॥
पाके लघुविदाह्युष्णं तीक्ष्णमिन्द्रियबोधनम् ।
विकासिसृष्टविण्मूत्रं निद्राभावप्रसक्तिनुत् ॥१॥

सब प्रकार के मद्य पित्त करनेवाले अम्ल दीपन पाचन भेदन कफ वात के दूर करते, हृदय को हितकारी और बस्ति के शुद्ध करनेवाले हैं पाक में लघु विदाही गरम तीक्ष्ण इन्द्रियबोधक चित्त खिलानेवाले, विष्ठा मूत्र के भेदन करनेवाले, निद्रा का अभाव और उनमें अत्यंत प्रसक्ति को दूर करनेवाले हैं॥१॥

स्तन्यरक्तक्षयहिता सुरादीपनबृंहणी ।
कार्श्यार्शोग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ॥२॥

सुरा स्तनों को हितकारक, रक्त क्षय में हितकारक, दीपन और पुष्टिकर्ता है, कृशता बवासीर ग्रहणी दोष मूत्रघात और वात को दूर करनेवाली है॥२॥

कासार्शोग्रहणीदोषप्रतिश्यायविनाशिनी ।
श्वेता मूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरीसुरा ॥३॥

तथा खांसी बवासीर संग्रहणी प्रतिश्याय दूर करती है श्वेता सुरा मूत्र कफ स्तन्य रक्तमांस की करनेवाली है॥३॥

छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दिनी ।
प्रसन्नागुल्मवातार्शोविबन्धानाहनाशिनी ॥४॥

छर्दि अरुचिनाशक, कुक्षिका शूल दूर करती है प्रसन्ना सुरा गुल्म वात अर्श विबन्ध आनाह रोग को दूर करती है॥४॥

पित्तलाल्पकफारूक्षा यवैर्वातप्रकोपनी ।
विष्टम्भिनी सुरागुर्वी श्लेष्मलातु मधूलिका ॥५॥

यव की सुरा पित्तकारक थोड़ा कफ करती है रूखी और वात की कोप करनेवाली है विष्टम्भकारक सुरा भारी है गोधूम की सुरा श्लेष्मकारक है॥५॥

रूक्षा नातिकफावृष्या पाचनी वल्कलीसुरा ।।६।।

वल्कली (दाल चीनी की) सुरा रूखी कुछ कफकारक सद्य शुक्रकर और पाचक है।।६।।

कोहोलोभेद्यवृष्यश्च त्रिदोषोवदनप्रियः ।।७।।

कोहोल नाम मद्य भेदक शुक्रकर त्रिदोषकारक और मुख प्रिय है।।७।।

ग्राह्युष्णोजगलः प्रोक्तोरूक्षस्तृट्कफशोथनुत् ।।८।।

जगल मदिरा ग्राही गरम रूखी तृषा कफ और शोफ रोग को दूर करती है।।८।।

हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्नामानिलशोधनुत् ।
वक्कसोहृतसारत्वाद्विष्टम्भी वातकोपनः ।।९।।

वक्कस मद्य हृदय को हितकारक प्रवाहिका आटोप बवासीर और शोथ की दूर करनेवाली है और साररहित होने से विष्टम्भी तथा वात का कोप करनेवाली है।।९।।

शीधुः पित्तानिलहरः श्लेष्मस्नेहविकारहा ।
मेदःशोथोदरार्शोघ्नो बल्यः पक्वरसोमतः ।।१०।।

पकाकर ईख के रस से बनाया हुआ शीधु मद्य पित्तवात का हरनेवाला श्लेष्मा और स्नेह के विकार का हरनेवाला मेद सूजन उदररोग बवासीर का दूर करनेवाला बलकारक रस के पाक में होता है।।१०।।

जरणीयोविबन्धघ्नः स्वरवर्णविशोधनः ।
लेखनः शीतरसिकोहितः शोफोदरार्शसाम् ।।११।।

ईख के रस को विना पकाये बनी हुई शीघ्र शीधू जीर्ण होती है विबन्ध दूर करती स्वरवर्ण का शोधन करती लेखन शोफ उदर और अर्शरोग में हितकारक है।।११।।

गौडः शीधुः कषायः स्यात् स्वादुःपाचनदीपनः ।।१२।।

गुड़ की बनी हुई शीधू कसेली स्वादु पाचन और दीपन है।।१२।।

शार्करो मधुरोहृद्योदीपनोबस्तिशोधनः ।।
वातघ्नो मधुरःपाके रुच्यइन्द्रियबोधनः ।।१३।।

शर्करा की बनाई शीधू मधुर हृदय को हितकारक, दीपन बस्ति के

शोधनेवाली है वातनाशक पाक में मधुर रुचिकारक इन्द्रियों को बोधन करनेवाली है।।१३।।

शीधुर्मधूकपुष्पोत्थो विदाह्यग्निबलप्रदः ।
रुक्षः कषायः कफहा वातपित्तप्रकोपनः ।।१४।।

महुए के फूल से बनी हुई शीधु विदाही अग्नि की बढ़ानेवाली तथा बलकारक है, रूखी कसेली कफनाशक वात पित्त की कोप करने वाली है।।१४।।

जाम्बवो बद्धनिष्यन्दस्तुवरोवातकोपनः ।।१५।।

जाम्बू फल के रस से गुड़ मिलाकर बनाई हुई शीघु मूत्र बंध कारक कसेली वात का कोप करनेवाली है।।१५।।

तीक्ष्णः सुरासवो हृद्यो मूत्रलः कफवातनुत् ।
मुखप्रियः स्थिरमदो विज्ञेयोऽनिलनाशनः ।।१६।।

औषधी मिलाकर बनाया हुआ सुरासव तीक्ष्ण हृदय को हितकारक मूत्रकारक कफ वात का नाश करनेवाला है मुखप्रिय स्थिर मदवाला वातनाशक जानना।।१६।।

तीक्ष्णः कषायोमदकृद्दुर्नामकफगुल्मनुत् ।
क्रिमिमेदोऽनिलहरोमैरेयो मधुरो गुरुः ।।१७।।

मैरेय मद्य तीक्ष्ण कसेला मदकारक बवासीर कफ और गुल्म का दूर करनेवाला है कृमि मेद वात हरनेवाला मधुर और भारी है।।१७।।

निर्दिशेद्द्रव्यतश्चान्यान्कन्दमूलफलासवान् ।।१८।।

इसी प्रकार दूसरे द्रव्य कन्दमूलादि से बने आसवों के गुण जानने।।१८।।

नवं मद्यमभिष्यन्दि दोषकृज्जीर्णमन्यथा ।।१९।।

नई मद्य अभिष्यन्दी दोषकारक है, पुरानी इसके विपरीत है पुरानी सुरा श्रेष्ठ है।।१९।।

अरिष्टो द्रव्यसंयोगसंस्कारादधिकोगुणैः ।।२०।।

अरिष्ट ईख विकार अभया (हरड) चीता दन्ती पीपली आदि बहुत सी औषधियों के योग से क्वाथ बना हुआ गुणों में अधिक होता है।।२०।।

बहुदोषहरश्चैव रोगाणां शमनश्चसः ।
दीपनः कफवातघ्नः सरः पित्ताविरोधनः ।।

शूलाध्मानोदरप्लीहज्वराजीर्णार्शसांहितः ॥२१॥

यह बहुत दोषों का हरनेवाला रोगों का शांत करनेवाला दीपन कफ वात का नाशक सारक और पित्त का अविरोधी है, शूल अफरा उदर रोग प्लीहा ज्वर अजीर्ण बवासीर को दूर करता है॥२१॥

अरिष्टासवशीधूनां गुणान् कर्माणिचादिशेत् ।
बुद्ध्वाथास्वं संस्कारमवेक्ष्य कुशलोभिषक् ॥२२॥

चतुर वैद्य को उचित है कि अरिष्ट आसव और शीधुओं के गुण कर्मों को जानकर बुद्धि से उनका संस्कार विचार प्रयोग करे॥२२॥

सान्द्रं विदाहि दुर्गंधिविरसंक्रिमिलं गुरु ।
अहृद्यं तरुणं तीक्ष्णमुष्णं दुर्भाजनस्थितम् ॥
अल्पौषधं पर्युषितमत्यच्छं पिच्छिलंचयत् ।
तद्वर्ज्यं सर्वथा मद्यं किंचिच्छेषं च यद्भवेत् ॥२३॥

जो मद्य सघन विदाही दुर्गंधिकारक विरस कृमियुक्त, भारी, हृदय को अहितकारक मन्द उत्पन्न तीक्ष्ण उष्ण बुरे पात्र में स्थित थोड़ी औषधीवाला बासी अति स्वच्छ पिच्छल पीछे का पात्र में बचा हुआ यह मद्य सर्वथा त्यागने योग्य है॥२३॥

चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित् ।
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मद्यं सेव्यं मदावहम् ॥२४॥

जो बहुत दिन का रक्खा हुआ रसहीन है वह कफ और वात का जीतनेवाला है प्रसन्ना मद्य रुचिकारक है सुगन्धियुक्त मदकारक, मद्य सेवन करना चाहिये॥२४॥

शुक्त बलासपित्तासृक्क्लेदि वातनुलोमनम् ।
भृशोष्णतीक्ष्णरूक्षाम्लं हृद्यं रुचिकरं सरम् ॥
दीपनं शिशिरं स्पर्शे पाण्डुतृट्क्रिमिनाशनम् ॥२५॥

जो मस्तु आदि पदार्थ पवित्र बर्तन में गुड़ कांजी मधु तीन दिन तक बंदकर धान्य राशि में धर दिये जाते हैं वह शुक्त कहलाता है, यह कफ पित्त रुधिर क्लेदका करनेवाला, वात का अनुलोम करनेवाला अत्यंत उष्ण तीक्ष्ण रूखा अम्ल हृदय को हितकारक रुचिकर और सारक है, दीपन स्पर्श में ठंडा पाण्डु रोग तृष्णा और कृमि का दूर करनेवाला है॥२५॥

तद्वत्तदासुतं सर्वं रोचनंतु विशेषतः ॥२६॥

इसी प्रकार के गुणवाले शुक्त में आर्द्र करीरादि जलने से होते हैं, वे विशेषकर रुचिकारक होते हैं॥२६॥

गौडानि रसशुक्तानि मधुशुक्तानियानि च ।
यथा पूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥२७॥

जो गुड़ से वने हुए शुक्त हैं और जो मधु के योग से बने हैं यह यथा पूर्व एक दूसरे से भारी और अभिष्यन्दकारक हैं॥२७॥

काञ्जिकं भेदितीक्ष्णोष्णंपित्तकृत्स्पर्शशीतलम् ।
भ्रमक्लमहरं रुच्यं दीपनंबस्तिशूलनुत् ॥
शस्तमास्थापनेहृद्यंलघुवातकफापहम् ।
गण्डूषधारणाद्वक्त्रमलदौर्गन्ध्यशोषजित् ॥२८॥

कांजी भेदन है तीक्ष्ण गरम है पित्तकारक स्पर्श में शीतल है, भ्रमक्लम की हरनेवाला रुचिकारक दीपन बस्ती के शूल को दूर करनेवाली है, स्थापन में श्रेष्ठ हृदय को हितकारक लघु वात और कफ की हरनेवाली है, और मुख में कुल्ला धारण करने से मुख का मैल दुर्गन्धि और शोथ रोग को जीतनेवाली है॥२८॥

एभिरेवगुणैयुक्ते सौवीरकतुषोदके ।
क्रिमिहृद्रोगगुल्मार्शःपाण्डुरोगनिबर्हणे ॥२९॥

इसी प्रकार के गुणों से युक्त कांजी और तुष (धान्यभूसी) का जल है, यह कृमि हृद्रोग गुल्म अर्श पाण्डुरोग दूर करता है॥२९॥

मूत्रंगोजाविमहिषगजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम् ।
पित्तलं रूक्षतीक्ष्णोष्णं लवणानुरसंकटु ॥
क्रिमिशोफोदरानाहशूलपाण्डुकफानिलान् ।
गुल्मारुचिविषश्वित्रकुष्ठार्शांसिजयेल्लघु ॥
दीपनं पाचनं भेदितेषु गोमूत्रमुत्तमम् ॥३०॥

गौ बकरी भेड़ भैंसा हाथी घोड़ा ऊंट गधा इन जंतुओं का मूत्र पित्तकारक रूखा तीक्ष्ण गरम रस में खारी कटु है कृमि रोग सूजन उदररोग अफरा आनाह शूल पाण्डुरोग कफ तथा वातरोग गुल्म, अरुचि, विष, श्वित्र, कुष्ठ, बवासीर, इन रोगों को जीतनेवाला और

लघु हैं, दीपन पाचन और भेदन में गोमूत्र श्रेष्ठ है॥३०॥

गोमूत्रं कटुतीक्ष्णोष्णं सक्षारत्वान्नवातलम् ।
लघ्वग्निदीपनंमेध्यं पित्तलं कफवातनुत् ॥
गुल्मशूलोदरानाह विरेकास्थापनादिषु ।
मूत्रप्रयोगसाध्येषु गव्यं मूत्रं प्रयोजयेत् ॥३१॥

गोमूत्र कटु तीक्ष्ण गरम है, क्षारयुक्त होने से वातकारक नहीं है, लघु अग्नि का दीपन करनेवाला बुद्धि को बढ़ानेवाला पित्तकारक कफवात-नाशक है, गुल्म शूल उदर आनाह विरेचन के लिये स्थापनादि में तथा मूत्र प्रयोग साध्यादि में गौ का मूत्र हितकारी है॥३१॥

दुर्नामोंदरशूलेषु कुष्ठमेहाविशुद्धिषु ।
आनाहशोफगुल्मेषुपाण्डुरोगे च माहिषम् ॥३२॥

दुर्नाम (बवासीर) उदररोग शूल कुष्ठ प्रमेह के दूर करने में तथा आनाह शोफ रोग गुल्म और पाण्डुरोग में भैंसे का मूत्र हितकारक है॥३२॥

कटुतिक्तान्वितं छागमीषन्मारुतकोपनम् ॥३३॥

छाग का मूत्र कटु तीखा और कुछ वात का कोप करनेवाला है॥३३॥

सक्षारतिक्तकटुकमुष्णं वातघ्नमाविकम् ॥३४॥

भेड़ का मूत्र तीखा कटु गरम और वातनाशक है॥३४॥

आश्वं कफहरं मूत्रं वातचेतोविकारनुत् ॥३५॥

घोड़े का मूत्र कफ हरनेवाला वात तथा पित्त के विकार उन्माद अपस्मार को दूर करता है॥३५॥

तीक्ष्णं क्षारे किलासे च नागमूत्रं प्रयोजयेत् ॥३६॥

तीक्ष्ण क्षार और किलास में हाथी का मूत्र प्रयोग करे॥३६॥

दीपनं गार्दभं मूत्रं गरचेतोविकारनुत् ॥३७॥

गधे का मूत्र तीक्ष्ण है विष और चित्त के विकार को दूर करता है॥३७॥

अर्शोघ्नं कारभं मूत्रं मानुषंतु विषापहम् ॥३८॥

इति मद्यादिवर्गः

ऊंट का मूत्र बवासीरनाशक है और मनुष्य का मूत्र विषहारक है॥३८॥

इति मद्यादिवर्गः

अथ कृतान्नवर्गः

विधिनाकृतआहारः　　प्रीणनोधातुपोषकः　　।
स्मृत्यायुःपुष्टिवर्णौजःसत्वोत्साहविवर्द्धनः　　॥१॥

अब भोजन योग धान्यादि का संस्कारवश से गुण कथन करते हैं अर्थात् कृतान्य वर्ग का गुण कथन करते हैं विधिपूर्वक बनाया हुआ भोजन प्राणियों की धातुओं का पुष्ट करनेवाला स्मृति आयु पुष्टि वर्ण बल सत्त्व और उत्साह का बढ़ानेवाला है।।१।।

ओदनः　क्षालितः　स्विन्नःप्रस्तुतोविशदोलघुः　　।
भृष्टतण्डुलजोत्यर्थमन्यथास्याद्गुरुश्चसः　　॥२॥

धोये हुए चावलों का भात सिद्ध किया प्रसन्न कर्ता और लघु है और भुने चावलों का भात उससे भी अधिक लघु है, और बिना धोये हुओं का भारी है।।२।।

मण्डस्तु　　भूरिदोषघ्नोदीपनोऽनिलनाशनः　　।
ज्वरहापरमोबल्यः　　स्वेदनोमार्गशोधनः　　॥३॥

मण्ड (चावलों का मण्ड चौदह गुणे जल में होता है) बहुत दोषों का नाश करनेवाला, दीपन तथा वातनाशक है ज्वरनाशक परम बलदायक स्वेदन और इन्द्रियों के मार्ग का शोधन करनेवाला है।।३।।

लाजमण्डोविशुद्धानांपथ्यः　　पाचनदीपनः　　।
वातानुलोमनोहृद्यःपिप्पलीनागरान्वितः　　॥४॥

खीलों का मण्ड विशुद्ध पथ्य पाचन और दीपन है, वात का अनुलोम करनेवाला हृदय को हितकारक पीपल और सोंठ डालने से होता है।।४।।

पेया　स्वेदाग्निजननी　वातवर्च्चोऽनुलोमनी　　।
क्षुत्　तृष्णा　ग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगज्वरापहा　॥५॥

पेया और विलेपी दो प्रकार की यवागू होती है, पेया स्वेद और अग्नि को उत्पन्न करनेवाली, वात और मल को अनुलोम करनेवाली, क्षुधा तृषा ग्लानि दुर्बलता कुक्षिरोग और ज्वर की नाश करनेवाली है।।५।।

विलेपीग्राहिणीहृद्यातृष्णाघ्नीदीपनीहिता ।　　।
व्रणाक्षिरोगसंशुद्धदुर्बलस्नेहपायिनाम्　　॥६॥

विलेपी (चौगुने जल में सिद्ध अन्न) ग्राही हृदय को हितकारक तृष्णानाशक दीपनी हितकारक है, व्रण अक्षिरोगनाशक है, वमन विरेचन से शुद्ध दुर्बल स्नेह पानवालों को हितकारक है।।६।।

यवागूर्ज्वरतृष्णाघ्नीलघ्वीबस्तिविशोधनी ।।७।।

यवागू ज्वर तृष्णा की नाश करनेवाली लघु और बस्तिशोधक है।।७।।

शिक्थकैरहितोमण्डः पेयाशिक्थसमन्विता ।
यवागूर्बहुशिक्थास्याद्विलेपीविरलद्रवा ।।८।।

सिक्थ से रहित मण्ड और पेया सिक्थ के सहित होती है, यवागू अधिक सिक्थवाली और विलेपी किंचित् द्रवयुक्त होती है अर्थात् द्रव्य से चौगुना पानी डालकर औटावे जब लपसी के समान गाढ़ी और लपटनेवाली हो जाय उसे विलेपी कहते हैं। द्रव्य से चौगुने पानी में डालकर पतली पेज के समान कुछ ल्हसदारपर्यंत औटी हुई को पेया कहते हैं। पेया की अपेक्षा कुछ गाढ़े को यूष कहते हैं। चार पल औषधी ले कुछ थोड़ी सी कूटकर उसमें ६४ पल पानी डालकर औटावे आधा रहै तब उतार ले उसे छान चावल आदि द्रव्य डाल औटावे गाढ़ी होने पर उतार ले इसे यवागू कहते हैं।।८।।

मण्डपेयाविलेपीनामोदनस्य च लाघवम् ।
यथापूर्वंशिरस्तत्र मण्डो वातानुलोमनः ।।९।।

ओदन की अपेक्षा विलेपी, विलेपी की अपेक्षा पेया, पेया की अपेक्षा मण्ड अधिक लघु है उसमें मण्ड वात का अनुलोमन करनेवाला है।।९।।

पायसःकफकृद्बल्योविष्टम्भी मेदुरोगुरुः ।।१०।।

पायस खीर कफ का करनेवाला बलकारक मेदोत्पादक और भारी है तथा विष्टम्भी है।।१०।।

कृशरापित्तकफदाबल्या मारुतनाशिनी ।।११।।

कृशरा (खिचड़ी) पित्त कफ की करनेवाली बलकारक वात नाशक है।।११।।

अन्नं मांसादिभिः सार्द्धं सिद्धं स्याद्गुरुबृंहणम् ।।१२।।

जो अन्न मांसादि के संग सिद्ध किया है वह भारी और मांसल होता है।।१२।।

रसौदनोज्वरहरोबल्यो ग्राह्यनिलापहः ॥१३॥

रस ओदन ज्वरहारक बलकारक ग्राही और वातनाशक है॥१३॥

घोलभक्तं श्रमार्शोघ्नं रुच्यं तर्पणदीपनम् ॥१४॥

घोल भक्त (मट्ठे में मिला ओदन) श्रम बवासीरनाशक रुचिकारक तृप्तिकारक दीपन है॥१४॥

सद्योऽन्नं वारिणाधौतं शीघ्रपाकं बलप्रदम् ।
शीतलं मधुरं रूक्षं श्रमघ्नं तर्पणं परम् ॥१५॥

तत्काल जल से धोया हुआ अन्न शीघ्र पकनेवाला है बल देनेवाला है, वह शीतल मधुर रूखा श्रमनाशक परम तृप्तिकारक है॥१५॥

पानीयभक्तं व्युषितं मेदःस्वेदकफप्रदम् ।
त्रिदोषकोपनं रूक्षं मलकृन्मूत्रलंपरम् ॥१६॥

पांच गुने पानी में पकाया भात मेद स्वेद और कफ का करनेवाला है, त्रिदोश का कोप करनेवाला, रूखा मलकारक और परम मूत्र कारक है॥१६॥

सुस्विन्नोनिस्तुषो भृष्टईषत् सूपोलघुर्हितः ॥१७॥

अच्छी प्रकार सिजोकर छुलके उतारे हुई कुछ भूनी हुई पक्व हुई सूप (दाल) हलकी और हितकारक है॥१७॥

स्विन्नं निष्पीडितं शाकं स्नेहसंस्कारितं हितम् ।
अस्विन्नं स्नेहरहितमपीडितमतोऽन्यथा ॥१८॥

इसी प्रकार जोश दिया हुआ पीड़ित किया शाक घृतादि के संस्कार किया हितकारक होता है और जो जोश न दिया गया है स्नेहरहित तथा पीड़ित नहीं किया गया वह इसके विपरीत गुणवाला है॥१८॥

स्विन्नं मांसं कटुस्नेहगोरसाम्लफलैःसह ।
बृंहणं रोचनं बल्यं खालिष्कस्तु सदागुरुः ॥१९॥

जोश किया मांस कटु स्नेह युक्त गोरस (घृतादि) तथा आम्ल फल के साथ सेवन किया हुआ पुष्टिकर रुचिकारक बलकारक है और खालिष्क (सूखे मांस का भेद) सदा भारी है॥१९॥

तदेवगोरसादानं सुरभिद्रव्यसंस्कृतम् ।
विद्यात्पित्तकफोत्क्लेदि बलमांसाग्निवर्द्धनम् ॥२०॥

वही गोरसादि से युक्त सुगंधि के द्रव्यों से संस्कार किया हुआ पित्त और कफ का उत्क्लेद करनेवाला बल मांस और अग्नि का बढ़ाने वाला है॥२०॥

परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं हर्षणं प्रीणनं गुरु ।
रोचनं बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवर्द्धनम् ॥२१॥

और सूखा मांस (बहुत से घृत में भूनकर वारंवार उस पर गरम जल छिड़ककर जीरा आदि मसाला मिले मांस को शुष्क कहते हैं) यह गुणों में स्थिर स्निग्ध हर्षण और प्रसन्न करनेवाला रुचिकारक बल बुद्धि अग्नि मांस ओज वीर्य का वढ़ानेवाला है॥२१॥

तदेवोल्लुप्तपिष्टत्वादुल्लुप्तमिति भाषितम् ।
परिशुष्कगुणैर्युक्तं ज्ञेयं पथ्यतमं गुरु ॥२२॥

वही उल्लुप्त पिष्ट होने से उल्लुप्त पिष्ट नामवाला कहाता है वह सूखा गुणों से युक्त अधिकतर पथ्यकारक और भारी जानना॥२२॥

तदेवशूलिकाप्रोतमङ्गारे परिपाचितम् ।
ज्ञेयं गुरुतरं किंचित् प्रदिग्धं गुरुपाकतः ॥२३॥

वही शूलिका में पोहकर अंगारे के ऊपर पकाने से कुछ दग्ध होकर भारी और पाक में गुरु होता है॥२३॥

मांसंयत्तैलसिद्धं तद्वीर्योष्णं पित्तकृद् गुरु ।
घृतसिद्धंतुरुच्यग्निदृष्टिदंपित्तनुल्लघु ॥२४॥

जो मांस तेल में सिद्ध किया है, वह वीर्य में उष्ण पित्तकारक और भारी है और घृत में सिद्ध किया रुचि अग्निकारक दृष्टि देनेवाला पित्तनाशक लघु है॥२४॥

वेशवारोगुरुः स्निग्धोबलोपचयवर्द्धनः ॥२५॥

वेसवार (कुट्टित मांस) भारी चिकना बलकारक शरीर की धातुओं को बढ़ानेवाला है मांस को हड्डी से अलग कर भली प्रकार पीसकर गुड़ और घी द्वारा स्निग्ध करके पीपल काली मिरच मिलाले इसको वेशवार कहते हैं॥२५॥

रसोज्वरक्षयहरः स्मृत्योजःस्वरवर्द्धनः ।
बृंहणः प्रीणनोवृष्यश्चक्षुष्योव्रणिनां हितः ॥२६॥

मांसरस ज्वर क्षय का हरनेवाला स्मृति ओज स्वर का बढ़ानेवाला पुष्टिकर प्रसन्नाताकारक वीर्यकारक नेत्रों को हितकारी व्रणवाले मनुष्यों को हितकारक है॥२६॥

स दाडिमयुतोवृष्यः संस्कृतोदोषनाशनः ॥२७॥

और दाडिमी से युक्त वही वीर्यकारक है और संस्कार करने से दोषनाशक है॥२७॥

प्रीणनः सर्वधातूनां विशेषान्मुखशोषिणाम् ।
क्षुत्तृष्णापहरःश्रेष्ठः सोराबः स्वादुशीतलः ॥२८॥

उसके ऊपर का स्वच्छ भाग यानि सोरवा सब धातुओं का प्रसन्न करनेवाला विशेषकर मुखशोष में हितकारक है, वह क्षुधा तृष्णा का हरनेवाला स्वादु शीतल है॥२८॥

मांसंयदुद्धृतरसं न तत्पुष्टिबलावहम् ।
विष्टम्भिदुर्जरं रूक्षं नीरसं मारुतावहम् ॥२९॥

जिस मांस से रस निकल गया है वह पुष्ट और बलकारक नहीं होता है वह विष्टम्भि देर में पचनेवाला रूखा नीरस वातका करनेवाला है॥२९॥

दग्धमत्स्योगुरुर्वृष्यो बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।
क्षीणशुक्राश्चयेकेचित् भग्नजर्जरिताश्चये ॥
नित्यं स्त्रीसेविनश्चैव क्षीणरेतसएव च ।
दग्धमत्स्योहितस्तेषां स तैललवणान्वितः ॥३०॥

जला हुआ मत्स्य भारी वीर्यवर्द्धक है पुष्टिकर्ता और प्राण का बढ़ानेवाला है जो कोई क्षीण वीर्य भग्न और जर्जरित है वा नित्य स्त्रीप्रसंग करनेवाला हैं जो क्षीण वीर्य हैं उनके निमित्त तेल लवण युक्त दग्ध मत्स्य हितकारक है॥३०॥

तस्माद्धीनगुणः किञ्चिद्भृष्टमत्स्य उदाहृतः ॥३१॥

भुना हुआ मत्स्य कुछ उससे हीन गुणवाला है॥३१॥

यथाप्रकृतिनिर्देश्यो व्यञ्जनेषु गुणान्वयः ॥३२॥

और भी व्यञ्जनों में प्रकृति के अनुसार गुण जानना॥३२॥

कफघ्नोदीपनोहृद्यः शुद्धानां व्रणिनामपि ।
ज्ञेयःपथ्यतमश्चापि मुद्गयूषः कृताकृतः ॥३३॥

मूंग का यूष कफनाशक दीपन हृदय को हितकारक वमन विरेचन से शुद्ध हुए मनुष्यों को और व्रणवालों को हितकारक है लवण से युक्त हो वा नहीं।।३३।।

सतुदाडिममृद्वीकायुक्तः स्याद्रागषाडवः ।
रुचिष्णुर्लघुपाकश्च दोषाणांचाविरोधकृत् ।।३४।।

वही दाड़मी दाख से युक्त होकर रागषाड़व कहलाता है यह रुचिकारक पाक में लघु दोषों का अविरोधी है।।३४।।

मसूरमुद्गोधूमकुलत्थलवणैःकृतः ।
कफपित्ताविरोधीस्यात् वातव्याधौ च शस्यते ।।३५।।

मसूर मूंग गेहूं कुलथी लवण से सिद्ध किया कफ पित्त का अविरोधी होता है और वातव्याधि में अच्छा कहा है।।३५।।

मृद्वीकादाडिमैर्युक्तःसचाप्युक्तोऽनिलार्दिते ।
रोचनोदीपनोहृद्यो लघुपाक्युपदिश्यते ।।३६।।

दाडिमी के संग मुनक्का वातव्याधि में हितकारक है यह रुचिकारक दीपन हृदय को हितकारक और पाक में लघु है।।३६।।

पटोलनिम्बयूषौतु कफमेदोविशोषिणौ ।
पित्तघ्नौदीपनौहृद्यौ क्रिमिकुष्ठज्वरापहौ ।।३७।।

पटोल और नीम का यूष कफ और मेद का शोषनेवाला है पित्तनाशक दीपन हृदय को हितकारक कृमि और कुष्ठ का नाशक है।।३७।।

हन्तिमूलकयूषस्तु कफमेदोगलामयान् ।
श्वासकासप्रतिश्यायप्रसेकारोचकज्वरान् ।।३८।।

मूली का यूष कफ मेद गले के रोग श्वास कास प्रतिश्याय प्रसेक अरुचि ज्वर को दूर करता है।।३८।।

मुद्गामलकयूषस्तु ग्राहीपित्तकफेहितः ।
यवकोलकुलत्थानां यूषः कण्ठ्योऽनिलापहः ।।३९।।

मूंग और आमले का यूष ग्राही पित्त और कफ में हितकारक है, जौ कोल (बदर) कुलथी का यूष कंठ में हितकारक और वातनाशक है।।३९।।

सर्वधान्यकृतस्तद्वद् बृंहणः प्राणवर्द्धनः ।।४०।।

सम्पूर्ण धानों का किया यूष इसी प्रकार बलकारक वाजीकर और

प्राणवर्द्धन है।।४०।।

खडकाम्बलिकौहृद्यौ छर्दिवातकफेहितौ ।।४१।।

खंड दो प्रकार का होता है एक तक्र और सभी धान्य के सहित, दूसरा मट्ठा और शाक मिलाया हुआ, पहला रूप धान्य स्नेह अम्ली पदार्थ युक्त होता है, दूसरा कैप चांगेरी (अम्बिलोना) काली मिर्च जीरा चीता डालकर पक्व किया जाता है और दही अम्ल लवण स्नेह तिल उरद संयुक्त होता है यह खंडक अंवलिक नामवाले दोनों यूष हृदय को हितकारक छर्दिवात और कफ में हितकारक है।।४१।।

बल्यःकफानिलौहन्तिदाडिमाम्लोऽग्निदीपनः ।।४२।।

दाड़िमी और अम्ल पदार्थों के साथ किया यूष बलकारक, कफ वात का हरनेवाला, अग्नि दीपन करता है।।४२।।

धान्याम्लोदीपनोहृद्यः पित्तकृद्वातनाशनः ।।४३।।

धान्य और अम्ल द्रव्य का यूष दीपन हृदय को हितकारक पित्तकारक वातनाशक है।।४३।।

दध्यम्लःश्लेष्मलोबल्यः स्निग्धोवातहरोगुरुः ।।४४।।

दही अम्ल पदार्थ का यूष श्लेष्मा बलकारक चिकना वातहर और भारी है।।४४।।

तक्राम्लः पित्तकृद्बल्योविषरक्तप्रदूषणः ।।४५।।

तक्र अम्ल यूष पित्त करनेवाला, बलकारक विष और रक्त का दूषित करनेवाला है।।४५।।

अथगोरसधान्याम्लफलाम्लैरन्वितंचयत् ।
यथोत्तरं लघुहितंसंस्कृतासंस्कृतंरसम् ।।४६।।

जो यूष गोरस धान्य अम्ल फल अम्ल द्रव्यों से युक्त है वह उत्तरोत्तर संस्कार * किया हुआ लघु और हितकारक होता है। गोरस अम्ल की अपेक्षा धान्य अम्लयुक्त रस लघु होता है, इत्यादि यह संस्कार युक्त और संस्कार रहित जानना।।४६।।

---

* लवण घृत तेल मिरचादि से रहित असंस्कृत वा अकृत होता है और इन पदार्थों से युक्त कृत वा संस्कृत होता है।

तिलपिण्याकविकृतिः शुष्कशाकं विरूढकम् ।
सिण्डाकी च गुरूणिस्युः कफपित्तहराणिच ।।४७।। [१]

तिल की पीसी खल सूखा शाक विरूढक (अंकुरित शाक) सिण्डकी यह सब भारी और कफ पित्त के हरनेवाले हैं।।४७।।

रागषाडवयोगास्तुच्छर्दिमूर्च्छातृषापहाः ।
लघवोबृंहणावृष्या हृद्यारोचनदीपनाः ।।४८।।

सिता रुचक (काला नोन सैंधानोन अम्ल फालसा जम्बू फल के रसों से युक्त राजसरसों मिलाया हुआ राग होता है और षाड़व मधुर अम्ल लवण सुगन्धि द्रव्यों से उत्पन्न हुए अनेक प्रकार के हैं कोई कहते हैं कि गुड़ के सहित आम का रस पकाकर उसमें और सोंठ डालने से राग षाड़व होता है कोई मृग के रस में दाख और अनार का रस मिलाने को राग षाड़व कहते हैं यह छर्दि मूर्च्छा तृष्णा का हरनेवाला लघु पुष्टिकर्ता, शुक्रवर्द्धक, हृदय को हितकारी, रुचिप्रद और जठराग्नि को दीपन करते हैं।।४८।।

रसालाबृंहणीवृष्या स्निग्धाबल्यारुचिप्रदा ।।४९।।

रसाला (दधि संयोग पदार्थ) दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर जीरा गुड़ अदरक सोंठ पीसकर मिलाने से रसाला होता है यह पुष्टिप्रद वीर्यवर्द्धक स्निग्ध बलकारक तथा रुचि देनेवाला है।।४९।।

दधिस्याद्गुडसंयुक्तं स्नेहनंचानिलापहम् ।।५०।।

गुड़ के साथ दही स्नेहन और वातहर होता है।।५०।।

द्राक्षाखर्ज्जूरकोलानां गुरुविष्टम्भिपालकम् ।
परूषकाणांक्षौद्रस्य यच्चेक्षुविकृतिंप्रति ।।५१।।

दाख खजूर कोल (बेर) का यूष भारी विष्टम्भि है, फाल से और शहत की तथा जो इख के रस का विकृति है, यह पालक पर्यंत जो द्रव्य है।।५१।।

तेषां कट्वम्लसंयोगात् पालकानां पृथक् पृथक् ।
द्रव्यमानं च विज्ञाय गुणकर्माणि निर्दिशेत् ।।५२।।

---

१ तीरभूति में प्रसिद्ध।

इनका कटु अम्ल के संयोग से द्रव्यमान पृथक्-पृथक् जानकर गुण कर्म कहे।।५२।।

दुग्धाम्रं शीतलं स्वादु वृष्यं वर्णकरं गुरु ।
वातपित्तहरं रूच्यं बृंहणंबलवर्द्धनम् ।।५३।।

दूध मिश्रित आम शीतल स्वादु बल वीर्य करनेवाला है, वर्णकारक और गुरु है वात पित्तहर रुचिकारक मांसकर बलवर्द्धक है।।५३।।

सक्तवः सर्पिषाभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः ।
नातिद्रवा नातिसान्द्रामन्थ इत्यभिधीयते ।।५४।।

शीतल जल से युक्त घृतसहित सत्तू न बहुत पतले न बहुत घने मन्थ कहलाते हैं।।५४।।

मन्थःसद्यो बलकरः पिपासाज्वरनाशनः ।।५५।।

मन्थ तत्काल बल करनेवाला, प्यास और ज्वर का नाशक है।।५५।।

साम्लस्नेहगुडोमूत्रकृच्छ्रोदावर्तनाशनः ।
शर्करेक्षुरसद्राक्षायुक्तः पित्तविकारनुत् ।।
द्राक्षामधुकसंयुक्तः कफरोगनिबर्हणः ।
वर्गत्रयेणोपहितो मलदोषानुलोमनः ।।५६।।

और यही मन्थ अम्ल गुड़ और स्नेह के सहित मूत्रकृच्छ्र और उदावर्त का नाशक है, तथा शर्करा इक्षु का रस और दाख से युक्त पित्तविकार नाशक है, तथा दाख और मुलहठी के संग कफरोग नाशक है इस प्रकार अम्ल शर्करा द्राक्षा तीन वर्गों के साथ मल और दोष का अनुलोमन करनेवाला है।।५६।।

गुर्वीपिण्डी खरात्यर्थं लघ्वीसैवविपर्ययात् ।
सक्तूनामाशुजीर्येतमृदुत्वादवलेहिका ।।५७।।

इति कृतान्नवर्गः

सक्तु की कठोर पिण्डी भारी है और पतले सक्तु हलके हैं सत्तुओं की अवलेहिका (चाटने योग्य) मृदु होने से शीघ्र जीर्ण हो जाती है।।५७।।

इति कृतान्नवर्गः

अथ भक्षवर्गः

वक्ष्याम्यतःपरं भक्ष्यान्रसवीर्यविपाकतः ।।१।।

अब रस वीर्य के विपाक से भक्ष्य पदार्थों को कहता हूं।।१।।

पृथुकागुरवः स्निग्धाः कफविष्टम्भकारकाः ।
बल्याः सक्षीरभावात्तु वातघ्नाभिन्नवर्च्चसः ।।२।।

पृथुक (चौले) भारी स्निग्ध कफ और विष्टम्भकारक बलकारक है और वही क्षीर के भाव से वातनाशक और बद्ध मल करनेवाले हैं।।२।।

लाजाश्छर्द्यतिसारघ्नाः स्नेहमेदकफच्छिदः ।।३।।

खीलें छर्दि अतिसार की दूर करनेवाली स्नेह मेद और कफ की नाश करनेवाली हैं।।३।।

धानोल्वम्बास्तु लघवः कफमेदोविशोषणाः ।।४।।

धानों के होले लघु कफ मेद के सोखनेवाले हैं।।४।।

सक्तवो वातलारूक्षा बद्धवच्चस एव च ।।५।।

सत्तू वातकारक रूखे मल को बांधनेवाली हैं।।५।।

भक्ष्याः क्षीरकृताबल्या वृष्याहृद्याः सुगन्धिनः ।
अदाहिनः पुष्टिकरा दीपनाः पित्तनाशनाः ।।६।।

दूध लपसी बलकारक वीर्यकर हृदय को हितकारक सुगन्धि करनेवाली है अदाहि पुष्टिकारक दीपन और पित्तनाशक हैं।।६।।

घृतपूराः प्राणकरा हृद्याः श्लेष्मविवर्द्धनाः ।
वातपित्तहरा वृष्या गुरवो मांसशुक्रलाः ।।७।।

घृतपूर (घेवर) प्राणों को बल देनेवाले हृदय को हितकारक कफ के बढ़ानेवाले हैं वात पित्तहर (सब शुक्र जनक) भारी मांस और वीर्य के बढ़ानेवाले हैं।।७।।

गौडिकाबृंहणा वृष्या गुरवश्चानिलापहाः ।
अदाहिनः पित्तसहाः शुक्रलाः कफवर्द्धनाः ।।८।।

गौड़िका (गुड़ को आटे में मिलाकर पकाई हुई) बृंहण है शीघ्र वीर्य करनेवाली है भारी तथा वातनाशक है अदाही पित्त सहनेवाली वीर्यकारक कफवर्द्धक है।।८।।

मधुशीर्षकसंयावाः पूपायेते विशेषतः ।
गुरवोबृंहणाश्चैव मोदकास्तु सदुर्ज्जराः ॥९॥

मधुशीर्षक (रसभरी) संयाव * (हलवा) पुए यह विशेष करके भारी और पुष्टिदाता हैं और मोदक (लड्डू) दुर्जर हैं॥९॥

सट्टकः प्राणरुचिकृद्गुरुः स्वर्योऽनिलापहः ॥१०॥

सट्टक (लौंग सोंठ मिरच पीपल यह वस्तु दही में मथकर डाले और चूर्णकर दाडिम के बीज डालने से बनता है) यह प्राणों को रुचि करनेवाला भारी स्वर में हितकारक वात का हरनेवाला है॥१०॥

विष्यन्दः स्निग्धमधुरो बल्योवातापहो गुरुः ॥११॥

गेहूं का कसार (घी बूरा मिला हुआ) स्निग्ध मधुर वातनाशक और भारी है॥११॥

बृंहणावातपित्तघ्ना बल्या भक्ष्यास्तु सामिताः ॥१२॥

मांस संहतकारी बलकारक वात पित्तनाशक वाजीकर द्रव्य गोधूम चूर्ण का बना हुआ होता है॥१२॥

हृद्याः पथ्यतमास्तेषां लघवः फेणकादयः ॥१३॥

फेणक (गेहूं की उज्ज्वल मैदा में कुछ बूरा डालकर घी में तेज आंचपर उतार ले यह फेनक होता है) हृदय को हितकारक पथ्यकारक और अत्यंत पथ्य है॥१३॥

मुग्दादिवेशवाराणां पूर्णा विष्टम्भिनोमताः ॥१४॥

और मूंग आदि के भक्ष्य वेसवार के साथ (मसाले युक्त) विष्टम्भी होता है यह मसाला इनके भीतर भरे॥१४॥

वेशवारैः सपिशितैः सम्पूर्णा गुरुबृंहणाः ॥१५॥

और मांस सहित वेशवार (चीता पीपलामूल चीता चव्य सोंठ धनिया हलदी चावल यह बराबर ले चूर्ण करे इसे वेशवार कहते हैं) यह भारी और मांसल होता है॥१५॥

पाललाः श्लेष्मजननाः शष्कुल्यः कफपित्तलाः ॥१६॥

तिल के कल्क के बनाये हुए पालल श्लेष्म करनेवाले हैं और पूरी कफ

* संयाव गेहू के आटे को पानी और दूध के साथ मांड़ के उसके खण्डकर घृत में उतारे इसमें दाल चीनी इलायची बड़ी काली मिर्च और अद्रक का चूर्ण डाले।

पित्त की करनेवाली हैं॥१६॥

क्षालिपिष्टमयाभक्ष्याः कफपित्तप्रकोपणाः ।
विदाहिनो नातिबला गुरवश्च विशेषतः ॥१७॥

शालि धान्य को पीसकर बनाये भोज्य पदार्थ कफ पित्त के कोप करनेवाले विदाही अत्यंत बलकारक नहीं विशेषकर भारी होते हैं॥१७॥

वैदला गुरवो भक्ष्या कषायाः सृष्टमारुताः ।
विष्टम्भिनः पित्तहराः श्लेष्मघ्ना भिन्नवर्च्चसः ॥१८॥

वैदल मूंग उरद आदि की दाल भारी कसेली तथा वात के करनेवाली है विष्टम्भकारक पित्त हरनेवाली श्लेष्मानाशक मल-भेदक है॥१८॥

विरूढककृताभक्ष्या गुरवोनिलपितलः ॥१९॥

अंकुरित मूंगादि का बनाया भक्ष्य भारी वात पित्त को करने वाला है॥१९॥

हृद्याः सुगन्धिनो भक्ष्या लघवो घृतपाचिताः ।
वातपित्तहरा बल्या वर्णदृष्टिप्रसादनाः ॥२०॥

घृत में पकाये पदार्थ हृदय को हितकारक सुगन्धियुक्त हलके वातपित्त के हरनेवाले बलकारक वर्ण और दृष्टिके प्रसन्न करने वाले हैं॥२०॥

विदाहिनस्तैलकृता गुरवः कटुपाकिनः ।
उष्णामारुतदृष्टिघ्ना पित्तलासृक्प्रदूषणाः ॥२१॥

तेल में पकाये हुए पदार्थ भारी कटुपाकी गरम वात दृष्टि के नाशक पित्तकारक रुधिर के दूषित करनेवाले हैं॥२१॥

कपालाङ्गारपक्वास्तु लघवो वातकोपनाः ॥२२॥

कपाल और अंगारों द्वारा सिद्ध किये भोजन लघु वातकोप करनेवाले हैं॥२२॥

कुल्माषावातलारूक्षा गुरवो भिन्नवर्च्चसः ॥२३॥

कुल्माष (गरम जल में जो सीजे हुए) वातकारक रूखे भारी विष्ठा के भेदन करनेवाले हैं॥२३॥

उदावर्त्तहरो वाट्यः कासपीनसमेहनुत् ॥२४॥

भुने जौ का पदार्थ उदावर्त रोग हरनेवाला कास पीनस तथा प्रमेह का दूर करनेवाला है॥२४॥

तुषाम्बुवटकं प्रोक्तं वृष्यं रुच्याग्निदीपनम् ।
वृष्यं सन्दीपनंचैव वटकं तक्रसंस्कृतम् ॥२५॥

तुष तथा तक्र के जल में भावित किया वटक (दले हुए जो गेहूं की वटी) शुक्रकारक रुचिकर अग्नि प्रदीप्त करनेवाला है वीर्यकर सन्दीप्ति करनेवाला तक्रवटक होता है॥२५॥

यद्द्रव्यं यद्गुणं प्रोक्तं तद्भक्ष्यास्तद्गुणा मताः ॥२६॥

जिस द्रव्य में जो गुण होता है वही गुण उसके भक्ष्य पदार्थ में होता है॥२६॥

खंडाः खंडयवाग्वश्च रागषाडवसट्टकाः ।
पालकानि विचित्राणि यूषाश्चानेकयोनयः ॥
कट्वम्ललवणाः स्वादुलेह्या ये च फलोद्भवाः ।
एवमादीनि चान्यानि क्रियन्ते वैद्यवाक्यतः ॥
यथाकारणमासाद्यभोक्तॄणां छन्दतोपिवा ।
अनेकद्रव्ययोनित्वाच्छास्त्रतस्तान् विनिर्दिशेत् ॥२७॥

इति भक्ष्यवर्गः

षंड षंडयवागू तथा रागषाड़व सट्टक विचित्र पालक और भी अनेक प्रकार के यूष कटु अम्ल लवणयुक्त स्वादु लेह्य पदार्थ तथा फल के उत्पन्न हुए पदार्थ वैद्यों के वाक्य से बनाये जाते हैं बहु भोजन करनेवाले यथा कारण से वा स्वच्छन्दता से बनाते हैं अनेक द्रव्यों को उनकी योनि के अनुसार शास्त्र से कथन करे॥२७॥

इति भक्ष्यवर्गः

अथ आहारविधिः

अथाहारविधिं वक्ष्ये विस्तरेणानुपूर्वशः ॥१॥

अब विस्तारपूर्वक आहार विधि कहता हूं॥१॥

आप्तास्थितमसङ्कीर्णं शुचिकार्यं महानसम् ॥२॥

रसोई घर श्रेष्ठ पुरुषों से स्थित और पवित्र होना चाहिये और बहुत संकीर्णता न हो।।२।।

तत्राप्तैः　साधितं　रम्यमविरुद्धमुपस्कृतम्　।
विषघ्नैरगदैर्मन्त्रैर्भिषगन्नैर्निवेदयेत्　।।३।।

वहां श्रेष्ठ रसोइये श्रेष्ठ भोजन बनावें जो संयोग से विरुद्ध न हो विषनाशक औषधी और मंत्रों से युक्त कर उस अन्न को निवेदन करे।।३।।

घृतं　कार्ष्णायसेदेयं　पेयादेयातु　राजते　।
फलानि　सर्वभक्ष्यांश्च　प्रदद्याद्वैदलेषुतु　।।४।।

घी कृष्ण लोह के पात्र में देना चाहिये पेया चांदी के पात्र में फल और सब प्रकार के भोजन पत्तल पर देने चाहिये कोई दल का अर्थ बांस का पात्र करते हैं।।४।।

परिशुष्कप्रदिग्धानि सौवर्णेषूपकल्पयेत् ।।५।।

सूखे और प्रदिग्ध पदार्थ सुवर्ण के पात्रों में धरे।।५।।

प्रद्रवाणि रसांश्चैव राजतेषूपहारयेत् ।।६।।

और द्रव (पतले) रस चांदी के पात्रों में कल्पित करे।।६।।

कट्वराणि खडांश्चैव सर्वान् शैलेषु दापयेत् ।।७।।

मट्ठे दही के खट्टे पदार्थ पत्थर के बर्तनों में धरे।।७।।

दद्यात्ताम्रमये　पात्रे　सुशीतं　सुशृतं　पयः　।
पानीयं　पालकं　मद्यं　मृन्मयेषु　प्रदापयेत्　।।८।।

औटाकर शीतल किया दूध ताम्बे के पात्र में रखना चाहिये पानी पालक और मद्य मट्टी के पात्र में रक्खे।।८।।

वज्रवैडूर्यपात्रेषुरागषाडवसट्टकान् ।।९।।

वज्र (हीरे) संयुक्त पात्रों में रागषाड़व और सट्टकों को रक्खे।।९।।

पुरस्ताद्विमले　पात्रे　सूपं　दद्यात्तुपाचकः　।
फलानि　सर्वभक्ष्यांश्च　परिशुष्काणि　यानि　च　।।
तानि　दक्षिणपार्श्वेतु　भुञ्जानस्योपकल्पयेत्　।
प्रद्रवान्　रसयूषादीन्　सव्ये　पार्श्वे　प्रदापयेत्　।।
सर्वान्　गुडविकारांश्च　रागषाडवसट्टकान्　।
पुरस्तात्　स्थापयेत्प्राज्ञो　द्वयोरपि　च　मध्यतः　।।१०।।

और उनके आगे उज्ज्वल पात्र में दाल भात परोसना चाहिये तथा फल और सब भक्ष्य पदार्थ शुष्क द्रव्य यह भोजन करनेवाले के दक्षिण ओर स्थापन करे और गीले रस यूषादि को बाईं ओर स्थापन करे सम्पूर्ण गुड़ के विकार राग षाड़व सदृश इन दोनों ओर के रक्खे पदार्थों के आगे स्थापन करे॥१०॥

एवं विज्ञायमतिमान् भोजनस्योपकल्पनाम् ।
भोक्तारं विजने रम्ये निःसम्पातेतु भोजयेत् ॥११॥

बुद्धिमान् इस प्रकार भोजन की कल्पना को जानकर भोजन करनेवाले को वातरहित निर्जन में भोजन करावे॥११॥

पूर्वं मधुरमश्नीयात् मध्येऽम्ललवणौ रसौ ।
अन्ते शेषान् रसान् वैद्योभोजनेष्ववचारयेत् ॥१२॥

प्रथम मीठा पदार्थ खाय मध्य में अम्ल और लवण के पदार्थ खाय और अंत में दूसरे रसों को भोजन करे॥१२॥

अन्नेन कुक्षेर्द्वावंशौ पानेनैकं प्रपूरयेत् ।
आश्रयं पवनादीनां चतुर्थमवशेषयेत् ॥१३॥

कोख के दो भाग अन्न से और एक भाग पान से पूरा करे चौथा भाग पवन के आने जाने को खाली रक्खे॥१३॥

भुक्त्वापादशतं गत्वा वामपार्श्वेन संविशेत् ।
शब्दान् रूपरसान् गन्धान्स्पर्शांश्चमनसःप्रियान् ॥
भुक्तवानुपसेवेत तेनान्नं साधुतिष्ठति ।
भुक्तोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत् ॥
आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावतिधावतः ।
ताम्बूलमुपसेवेत कर्पूराद्यधिवासितम् ॥१४॥

भोजन करके सौ कदम चले और वाम करवट से लेटे शब्द रूप रसगंध मन के प्रिय पदार्थ पहिले भोजन करने पर सेवन करे इससे अन्न भली प्रकार स्थित होता है। भोजन करके बैठने से पेट बढ़ता है, लेटने से शरीर पुष्ट होता है, टहलने से आयु बढ़ती है, और भोजन कर दौड़ने से संग मृत्यु दौड़ता है। भोजन करने पर कर्पूरादि से अधिवासित कर ताम्बूल का सेवन करे॥१४॥

ताम्बूलं क्षतपित्तास्ररूक्षोत्कुपितचक्षुषाम् ।
विषमूर्च्छामदार्त्तानामपथ्यं शोषिणामपि ॥१५॥

ताम्बूल क्षत पित्त रुधिर और रूक्ष विकारवाले नेत्ररोगी विष मूर्च्छा से व्याप्त मद से आर्त हुए पुरुषों को अपथ्य है॥१५॥

अन्नमादानकर्मा तु प्राणः कोष्ठं प्रकर्षति ।
तद्द्रवैर्भिन्नसंघातं स्नेहेन मृदुतां गतम् ॥
समानेनावधूतोऽग्निरुदीर्यः पवनेन तु ।
काले भुक्तं समं सम्यक् पचत्यायुर्विवृद्धये ॥१६॥

अन्न के ग्रहण कर्म का करनेवाला प्राण अन्न को कोष्ठ में खैंचता है। वह पानी आदि द्रव पदार्थों से भिन्न-भिन्न होकर समान पवन से निर्धूत होकर शिथिल होता हुआ अग्निद्वारा बुभुक्षा के समय आयु वृद्धि के निमित्त पचता है॥१६॥

एवं रसमलायन्नमाशयस्थमधस्थितः ।
पचत्यग्निर्यथा स्थाल्यां मोदनायाम्बुतण्डुलम् ॥१७॥

इस प्रकार रस और मल के निमित्त आशय में स्थित हुआ अन्न जठराग्नि से इस प्रकार पचता है जैसा बटलोई में चावल पकते हैं॥१७॥

अन्नमिष्टं ह्युपहितमिष्टैर्गन्धादिभिः पृथक् ।
देहेप्रीणातिगन्धादीन् घ्राणादीनीन्द्रियाणि च ॥१८॥

इष्ट अन्न जो गंधादियुक्त सेवन किया है वह गंधादि के सहित देह में प्राप्त होकर गंधादि ग्रहण करनेवाली नासिकादि इन्द्रियों को ग्रहण करता है आहार का पार्थिव भाग देह को पुष्टकर घ्राण में प्राप्त हो उसकी गंध और देह की गंध को पुष्ट करता है उसी प्रकार जलादि पदार्थ जाने॥१८॥

भौमाप्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणः सनाभसाः । पञ्चा-
हारगुणान् स्वान् स्वान् पार्थिवादीन् पचन्तिहि ॥१९॥

पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इनके भाग सूक्ष्म रूप से सब द्रव्यों में रहते हैं सो पार्थिव द्रव्यों का पाक अग्नि के बिना नहीं होता इस कारण पांचों द्रव्यों के पदार्थों में सूक्ष्म रूप से अग्नि रहती है। इस कारण वे जठराग्नि की प्रबलता से बल को प्राप्त हो अपने अपने पार्थिवादि पांच

आहार के गुणों को पचाते हैं। द्रव्य व्यापार के वश से गंधादि होते हैं उससे गुणों का पाक कहा है। यदि कहो कि तेज तो स्वयं हि अग्नि है पाचक है। उसके निमित्त दूसरी अग्नि की अपेक्षा क्यों है तो उत्तर यह है कि, हम तेज में पाचक अग्नि को स्वीकार नहीं करते हैं किन्तु जैसे तेज का सुवर्णादि द्रव्य होने पर भी उसके पाक में अग्नि की अपेक्षा है। इसी प्रकार अग्नि का तेज द्रव्य में है इसी प्रकार और भी जानना।।१९।।

सप्तभिर्देहधातारो धातवो द्विविधं पुनः ।
यथास्वमग्निभिः पाकं यान्ति किट्टप्रसादवत् ।।२०।।

देह के धारण करनेवाली सात धातु दो प्रकार की हैं वे किट्ट प्रसाद (मल और सार) के समान यथायोग्य अपने में स्थित अग्नि द्वारा पाक को प्राप्त होती हैं, धातुओं में जो भूताग्नि है वही उनमें सहाय है।।२०।।

रसाद्रक्तं ततो मांसं [1]मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च ।
अस्थ्नोमज्जा ततः शुक्रं शुक्राद्गर्भः प्रसादजः ।।२१।।

इनके पाक से क्रम से जो होता है सो कहते हैं, रस से रक्त, रुधिर से मांस, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा, मज्जा से वीर्य और वीर्य के प्रसाद से गर्भ होता है, प्रसाद का योग सबके साथ है, प्रसाद नाम सार भाग का है, कोई गर्भ प्रसाद सम्पूर्ण पद का अर्थ ओज का करते हैं, इस अर्थ में प्रसाद शब्द का अर्थ सर्वत्र नहीं लगता है, यद्यपि रसरक्त आदि के बनने में विद्वानों के कई पक्ष हैं जैसा कि दूध का दही दही का मक्खन होता है। इसी प्रकार रस का रुधिर और उसका क्रमानुसार वीर्य होता है कोई कहते हैं रस पहले रक्त को प्लावित करता है। उसे मांस स्वरूप में लाकर उसे प्लावित कर मेद करता है। जैसा हारीत ने कहा है रस सात दिन में परिवर्तन करता हुआ श्वेत हरित पीत होकर फिर रक्त हो जाता है। वह यथा क्रम दिवसों में पित्त के कारण रक्त हो जाता है यही शुश्रुत में लिखा है। रस अपने समीप के

१ शुक्र के प्रसाद से गर्भ होता है, यह उपयुक्त नहीं किंतु शुक्र के प्रसाद से ओज होता है यही सुश्रुताचार्य ने माना है, गर्भ जो है वह तो शुक्र और आर्तव से ही होता है, एक शुक्र से नहीं होता इस कारण शुक्र का प्रसाद ओज ही समझना ठीक युक्ति-युक्त है।

धातु को शीघ्र पुष्ट करता है दूर को देर में, इस मत में विष्ठा मूत्र आहार मलादि का सार भाग रस कहा है। वह व्यान द्वारा सब धातुओं को पुष्ट करता है परंतु "खले कपोतन्याय" से जैसे दूर स्थित वीर्य भी प्रभाव से शीघ्र आ जाता है। इसी प्रकार बलकारक रस रक्तादि धातुओं को शीघ्र प्लावित कर मेदादि कर देता है यही पक्ष साधु है।।२१।।

रसात् स्तन्यं तथा रक्तमसृजः कण्डराः शिराः ।
मांसाद्वसास्त्वचः षट् च मेदसःस्नायुसन्धयः ।।२२।।

अब उबधातुओं का वर्णन करते हैं रस से दूध तथा स्त्रियों का आर्तव, रुधिरसे स्थूल नसें, शिरा (छोटी नसें) होती है मांस से नस और त्वचा छः और मेद से स्नायु संधियें होती हैं सुश्रुत में लिखा है। रस एक महीने में वीर्य होता है और रज जो है वह रस से रक्त की समान शीघ्र होता है, मांस में नहीं, हां यह वार्ता है उनकी गर्भाशय में प्राप्ति एक महीने में होती है। विश्वामित्र ने कहा है कि केश के समान बीजरक्त के बहानेवाली नाड़ी गर्भाशय को पूर्ण करती है, वह एक मास में बीजरूप हो जाता है, वह बीजभूत रक्त ही आर्तव है ७ भेद से सूक्ष्म स्नायु का पोषण होता है, चरक में कण्डरा शब्दस्थूल शिरावाची है, यहीं स्तन्य आदि सात उपधातु शरीर की धारण करनेवाली हैं इनमें धातुओं के पुष्ट करने की सामर्थ्य नहीं है।।२२।।

किट्टमन्नस्यविण्मूत्रं रसस्य तु कफोसृजः ।
पित्तं मांसस्य खमलामलः स्वेदस्तु मेदसः ।। स्यात्किट्टं
केशलोमास्थ्नो मज्जः स्नेहोऽस्थि विट्त्वचाम् ।।२३।।

अपनी अग्नि से पाक होकर जो रस का मल भाग है वह कफ है, वह प्रसादज होकर कफ होता है रसोत्पत्ति मात्र से ही कफ नहीं होता है, इसी प्रकार रक्तादि मल में जानना, मांस के मल कर्ण नासा स्वेद प्रजननादि स्थान से निकलते हैं, केशलोम अस्थि का विट्ट होता है सुश्रुत में अस्थि का मल नख लिखा है, मज्जा स्नेह अस्थित्वचा इनका मल विदूषिका * है, कोई इसका तीन प्रकार से परिणाम कहते हैं रस का अग्नि पाक से मल कफ स्थूल भाग रस सूक्ष्म भाग रक्त है तैसे ही रक्त का

* आंख की मैल कीचड़।

अग्नि, पाक से मल पित्त, स्थूल भाग शोणित सूक्ष्म भाग मांस होता है, इसी प्रकार और भी जानना॥२३॥

प्रसादकिट्टधातूनां पाकादेवं द्विधापुनः ॥२४॥

इस क्रम से धातुओं के पाक होने से प्रसाद किट्ट दो प्रकार का है एक सार भाग एक मल होता है॥२४॥

परस्परोपसंस्तम्भा धातुस्नेहपरस्पराः ॥२५॥

इस प्रकार धातुओं को स्नेह की परम्परा (तृप्त करना) परस्पर सापेक्ष है यह परस्पर उपकारक हैं, यदि अत्यंत व्यय से शुक्रक्षय हो जाय तो अन्य धातु भी क्षय हो जाती है॥२५॥

अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्तृणामधिको मतः ।
तन्मूलास्ते हि तद्वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकः ॥२६॥

भौतिक पांच प्रकार की अग्नि सात अन्न की एक पचानेवाली इन सब में जठराग्नि प्रधान है उन सबकी क्षय वृद्धि इसी के अधीन है॥२६॥

तस्मात्तं विधिवद्युक्तैरन्नपानेन्धनैर्हितैः ।
पालयेत् प्रयतस्तस्य स्थितौह्यायुर्बलस्थितिः ॥२७॥

इस कारण जठराग्नि को अनेक प्रकार के युक्त इंधनरूपी अन्न पानों से निरंतर पालन करता रहे, इसकी स्थिति में आयु बल की स्थिति होती है॥२७॥

योहि भुङ्क्ते विधिं मुक्त्वाग्रहणीदोषजान्गदान् ।
सलौल्याल्लभते शीघ्रं तस्मान्नोलङ्घयेद्विधिम् ॥२८॥

जो विधि को त्यागकर भोजन करता है उसकी चंचलता से ग्रहणी आदि दोष शीघ्र प्राप्त होते हैं इससे विधि को उल्लंघन न करे॥२८॥

प्राणाःप्राणभृतामन्नमन्नंलोकोऽभिधावति ।
वर्णप्रसादसौस्वर्यं जीवितं च प्रतिष्ठितम् ॥
तुष्टिःपुष्टिबलंमेधासर्वमन्नेप्रतिष्ठितम् ।
लौकिकंकर्मयद्वृत्तौ स्वर्गतोयच्च वैदिकम् ॥
कर्मापवर्गेयच्चोक्तंतच्चाप्यन्ने प्रतिष्ठितम् ॥२९॥

इत्याहारविधिः

प्राण धारियों के प्राण अन्न हैं, अन्न की ओर लोक धावमान होते हैं

वर्ण प्रसाद स्वर जीवित बुद्धि सुख तुष्टि पुष्टि बल मेधा यह सब अन्न में ही प्रतिष्ठित है वृत्ति में जो लौकिक कर्म है, स्वर्ग जाने में जो वैदिक कर्म है मोक्ष के कर्म है मोक्ष के कर्म यज्ञादि जो कहे हैं, वह भी सब अन्न में प्रतिष्ठित हैं इस कारण विधि से अन्न का सेवन करे।।२९।।

इत्याहारविधिः

अथ अनुपानविधिः

शीतोष्णतोयासवमद्ययूषफलाम्लधान्याम्लपयोरसा-
नाम्। यस्यानुपानंतु हितं भवेद्यत्तस्मैप्रदेयं त्विह
मात्रयातत् ।।१।।

आहार के उपरांत सुख से अन्नपाक हो जाय इस कारण अनुपान का सेवन करना बहुत उचित है सो संक्षेप से कहते हैं शीत उष्ण जल आसव मद्य यूष फलाम्ल बीजोरानींबू आदि धान्याम्ल कांजी आदि, पयमस्तु तक्रादि, इक्षुरस जिसे जो अनुपान हितकारक है वह मात्रा के अनुसार उतना ही उसको दे।।१।।

व्याधिं च कालं च विभाव्यधीरैर्द्रव्याणि भोज्यानि च
तानि तानि ।।२।।

व्याधि और समय की भावना करके वह बहु भोज्य पदार्थ खाने चाहिये।।२।।

स्निग्धोष्णं मारुतेशस्तंपित्तेमधुरशीतलम् ।
कफेऽनुपानं रूक्षोष्णं क्षये मांसरसं पयः ।।३।।

वात की अधिकता में स्निग्ध उष्ण पदार्थ हित हैं पित्त में मधुर शीतल पदार्थ हित हैं कफ में रूखे और उष्ण पदार्थ का अनुपान हितकारक है क्षय में मांस रसपान करना उचित है।।३।।

उष्णोदकानुपानंतु स्नेहानामथ शस्यते ।
ऋते भल्लातकस्नेहात्तत्रतोयंसुशीतलम् ।।४।।

स्नेह के ऊपर उष्णोदक का अनुपान श्रेष्ठ कहा है केवल भिलावे के स्नेह के ऊपर शीतल जलपान करना उचित है।।४।।

अनुपानं वदन्त्येकेतैले यूषाम्लकाञ्जिकम् ।।५।।

कोई तेल के ऊपर यूष अम्ल और कांजी का पान करना कहते हैं।।५।।

शीतोदकं माक्षिकस्य पिष्टान्नस्य च सर्वशः ।
दधिपायसमद्यार्त्ते विषदुष्टे तथैव च ।।६।।

शैहर के ऊपर पिसे अन्नपर शीतल जल का पान करना उचित है मद्य से आर्त हुए तथा विष के क्रम से दही और घृत देना उचित है।।६।।

केचित् पिष्टमयस्याहुरनुपानं सुखोदकम् ।।७।।

कोई पिष्ठ पदार्थों पर कुछ एक गरम जल का अनुपान कहते हैं।।७।।

पयोमांसरसो वापि शालिमुद्गादिभोजिनाम् ।
युद्धाध्वातपसन्तापविषमद्यरुजासु च ।।८।।

चावल मूंगादि भोजन न करनेवालों को दूध तथा मांस का रस अनुपान कहा है युद्ध आतप संताप विष रोगों में भी मांस रस तथा दूध का अनुपान हित है।।८।।

मांसादेरनुपानंतु धान्याम्लं दधिमस्तुवा ।।९।।

मांसादि के ऊपर दही और मस्तु का अनुपान हित है।।९।।

अल्पाग्नीनामनिद्राणां तन्त्राशोकभयक्लमैः ।
मद्यमांसोचित्तानांतु मद्यमेवविशस्यते ।।
अमद्यपानामुदकं फलाम्लं वा प्रयोजयेत् ।।१०।।

क्षीणाग्नि निद्रारहित तन्द्रा शोक भय क्लम से युक्त तथा मद्य मांस देने के योग्य मनुष्यों को मद्य ही श्रेष्ठ है जो मद्यपान नहीं करते हैं उनको जल जंभीरी नींबू आदि का अनुपान हितकर है।।१०।।

उपवासाध्वभाष्यस्त्रीमारुतातपकर्मभिः ।
क्लान्तानामनुपानार्थं पयः पथ्यं यथामृतम् ।।
सुराकृशानां स्थूलानामनुशस्तं मधूदकम् ।।११।।

व्रती मार्ग से आये हुए स्त्री प्रसंग वात धूप से व्याकुल हुए तथा थके हुओं को दूध का पान अमृत की समान है, कृशों को मद्य हितकारक है और स्थूलों को मधु मिला हुआ जल हितकारी है।।११।।

निरामयानां चित्रंतु भक्तमध्ये प्रकीर्तितम् ।।१२।।

और रोग रहितों को नाना प्रकार का भोजन के मध्य में कहा है।।१२।।

क्षीरमिक्षुरसश्चेति हितं शोणितपित्तिनः ।।१३।।

रक्त पित्तवालों को दूध और गन्ने का रस हितकारी है।।१३।।

अर्कशेलुशिरीषाणामासवास्तु विषार्त्तिषु ।।१४।।

विष से व्याकुल हुए को अर्क शेलु ल्हसोड़ा शिरीष और आसव का अनुपान हितकर है।।१४।।

यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते ।
तत्रानुपानं धातूनां दृष्टं यन्नविरोधि च ।।१५।।

जो आहार के गुणों से पान विपरीत है और धातुओं का विरोधी नहीं है वही अनुपान कहा है जैसे दही अम्ल का मधुर क्षीर पायस के साथ कांजी आदि का अनुपान है इस प्रकार दही आदि अम्ल पदार्थों के साथ क्षीर आदि का पान धातुओं का विरोध करता है इससे वह अनुपान नहीं है इस प्रकार और भी जानना।।१५।।

दोषवद्गुरुवा भुक्तमतिमात्रमथापि वा ।
यथोक्तेनानुपानेन सुखमन्नं प्रजीर्यति ।।१६।।

जो दोषवत् भारी अथवा बहुत खाया हुआ है वह यथोक्त अनुपान से सुखपूर्वक जीर्ण हो जाता है।।१६।।

रोचनं बृंहणं वृष्यं दोषघ्नं वातभेदनम् ।
तर्पणं मार्दवकरं श्रमक्लमहरं सुखम् ।।
दीपनं दोषशमनं पिपासाच्छेदनं परम् ।
बल्यं बलकरं सम्यगनुपानं सदोच्यते ।।१७।।

रुचिकारक, पुष्टिकर सद्यःशुक्रकारक, दोषनाशक और वात का भेदक तृप्तकारक श्रम क्लम हरनेवाले सुखदायक है दीपन दोष शमनकारक पिपासा के छेदन करनेवाले हैं बलयुक्त बलकारक यह गुण सम्यक् अनुपान के हैं।।१७।।

तदादौकर्षयेत्पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ।
पश्चात्पीतं बृंहयति तस्माद्वीक्ष्य प्रयोजयेत् ।।१८।।

आदि में जल पीने से अधोगत वायु से रूखा होकर देह को कृश करता है मध्य में सेवित किया स्थापन करता है पीछे पिया हुआ बलकारक है इस कारण देखकर प्रयोग करे।।१८।।

स्थिरतां गतिमक्लिन्नमन्नमद्रवपायिनाम् ।

भवत्याबाधजननमनुपानमतः पिबेत् ॥१९॥

जो गीले पदार्थ पान नहीं करता वह अन्न स्थिरता गति और क्लेद रहितता को प्राप्त होता है, और आबाधा जनक है इस कारण अनुपान को पान करे॥१९॥

न पिबेत् श्वासकासार्त्तो रोगे चाप्यूर्ध्वजत्रुगे ।
क्षतोरस्कः प्रसेकी च यस्य चोपहतः स्वरः ॥२०॥

श्वास कास से आर्त हुवा ऊर्ध्वजत्रु के रोग से युक्त क्षत हृदय प्रसेक से युक्त वा जिसका स्वर उपहत हो गया है वह अनुपान पान न करे॥२०॥

पीत्वाध्वभाष्याध्ययनस्वप्नगेयान्नशीलयेत् ।
प्रदूष्यामाशयं तद्धि तस्य कण्ठोरसिस्थितम् ॥
स्यन्दाग्निसादच्छर्द्यादीन् जनयेदामयान् बहून् ॥२१॥

अनुपान पान करके मार्ग का चलना बहुत बोलना पढ़ना सोना गाना न करे ऐसा करने से यह आमाशय को दूषित करके उसके कण्ठ हृदय और उर में स्थित हुए स्यन्दता अग्निसाद छर्दि आदि बहुत से रोगों को उत्पन्न करते हैं॥२१॥

अनुपानं प्रयोक्तव्यं व्याधौ श्लेष्मभवेपलम् ।
पलद्वयंत्वनिलजे पित्तजे तु पलत्रयम् ॥२२॥

इत्यनुपानविधिः

श्लेष्मा से उत्पन्न हुई व्याधि में अनुपान प्रयोग करना चाहिये जो पल मात्र हो वातब्याधि में दो पल और पित्त में तीन पल प्रयोग करना चाहिये (१ पल चार तोले)॥२२॥

इत्यनुपानविधिः

अथगुणधर्मविधिः

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि गुणानां कर्मविस्तरम् ।
कर्मभिस्त्वनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रयागुणाः ॥१॥

अब इसके उपरांत गुणों का कर्म विस्तारपूर्वक कहता हूं नाना द्रव्यों के आश्रयी भूत गुण उनके कर्मों से जाने जाते हैं॥१॥

ह्लादनः स्तम्भनः शीतोमूर्च्छातृट्क्लेददाहजित् ।
उष्णस्तद्विपरीतः स्यात्पाचनश्च विशेषतः ॥२॥

शीतल पदार्थ हृदय को आनंद करनेवाला स्तम्भनकारक मूर्च्छा तृष्णा क्लेद और दाह का जीतनेवाला है उष्ण इसके विपरीत पदार्थ है वह इसके विपरीत गुणवाला है परंतु पाचन विशेष है॥२॥

स्नेहमार्दवकृत् स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा ।
रूक्षस्तद्विपरीतः स्यात् लेखनःस्तम्भनःखर ॥३॥

स्निग्ध पदार्थ स्नेह और मृदुताकारक बल वर्ण करनेवाला है रूखा पदार्थ इसके विपरीत गुणवाला लेखन और स्तम्भन करनेवाला है, तथा खर है अर्थात् कर्कश है॥३॥

पिच्छिलः पीडनोबल्यः सन्धानः श्लेष्मलोगुरुः ॥४॥

पिच्छिल पदार्थ पीड़ाकारक बलदायक संधानकारक कफकारक और गुरु है॥४॥

विशदोविपरीतः स्यात्क्लेदादौव्रणरोपणः ॥५॥

विशद पदार्थ इसके विपरीत क्लेदहारक और व्रणों का रोपण करनेवाला है॥५॥

दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्रावणोमृदुरन्यथा ॥६॥

तीक्ष्ण दाह और पाक का करनेवाला, व्रणस्राव करनेवाला है, मृदु इसके विपरीत है॥६॥

सादोपलेपबलकृत् गुरुस्तर्पणबृंहणः ॥७॥

अग्नि का सेक बलकारक भारी तृप्तिकारक पुष्टिकर है॥७॥

लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनोरोपणस्तथा ।
दशाद्याः कर्मतः प्रोक्तास्तेषां कर्मविशेषणैः ॥
दशैवान्यान् प्रवक्ष्यामि द्रवादींस्तन्निबोधमे ॥८॥

लघु इसके विपरीत लेखन और रोपण करनेवाला है, कर्मों की विशेषता से दश आदि कर्म कहे हैं उनमें दश को मैं कहता हूं उन द्रवादि के कर्मों को आप मुझसे सुनिये॥८॥

द्रवः प्रक्लेदनः सान्द्रः स्थूलः स्याद्द्वन्द्वकारकः ॥९॥

द्रव पदार्थ प्रक्लेदन, सान्द्र पदार्थ स्थूल और द्वन्दकारक हैं॥९॥

श्लक्ष्णः पिच्छिलवज्ज्ञेयः कफलोविषदोयथा ॥१०॥

श्लक्ष्ण पिच्छल पदार्थ की समान जानना, जैसे कफ और विषदायक पदार्थ है॥१०॥

सुखानुबन्धीसूक्ष्मश्च सुगन्धीरोचनोमृदुः ॥११॥

सूक्ष्म पदार्थ सुख का अनुबन्धी है, सुगन्धिवाला पदार्थ रोचन और मृदु है॥११॥

दुर्गन्धीविपरीतोऽस्मात् हृल्लासारुचिकारकः ॥१२॥

दुर्गन्ध पदार्थ दुर्गन्धि करनेवाला, हल्लास और अरुचिकारक है॥१२॥

सरोऽनुलोमनः प्रोक्तो मन्दो यात्राकरःस्मृतः ॥१३॥

सर पदार्थ विगुण वायु मलादि के अनुलोम करनेवाला है मन्द पदार्थ देह की स्थिति करनेवाला है॥१३॥

व्यवायी चाखिलं देहं व्याप्यपाकायकल्प्यते ॥१४॥

भांग पचने से पहले व्यवायी सम्पूर्ण देह में व्याप्त होकर पाक करता है॥१४॥

विकासीविकसन्नेवं धातुबन्धान् विमोक्षयेत् ॥१५॥

विकासी जो शरीर की संधियों के बंधन और धातुओं के ओज को शिथिल करे (सुपारी)॥१५॥

आशुकारी तथाशुत्वंधावत्यम्भसितैलवत् ॥१६॥

आशुकारी पदार्थ शीघ्र गति होने से शरीर में ऐसे फैलता है जैसे जल में तेल॥१६॥

सूक्ष्मस्तु सौक्ष्मात्सूक्ष्मेषु स्रोतःस्वनुसरःस्मृतः ।
गुणविंशतिरित्येवं यथावत्परिकीर्त्तिताः ॥१७॥

सूक्ष्म पदार्थ रोमकूपों के द्वारा शरीर में प्रवेश करता है, यथा तेल यह बीस गुण यथायोग्य वर्णन किये॥१७॥

दन्तकाष्ठं करञ्जादि रुचिदं दन्तशोधनम् ॥१८॥

करंजादि की दतोन रुचिकारक और दांतों की शोधन करने वाली है॥१८॥

जिह्वानिर्लेखनं वक्त्रजिह्वावैरस्यजाड्यजित् ।
देवगोविप्रवृद्धानां गुरूणामपि पूजनम् ॥

आयुष्यं वृद्धिदं पुण्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
मङ्गल्योपासनं शस्तं वृद्धिदं व्यसनापहम् ॥
पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥
नेत्रमञ्जनसंयोगात् भवेच्चामलतारकम् ।
लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता ॥
दोषक्षयोऽग्निबुद्धिश्च व्यायामादुपजायते ।
वातपित्तामयीबालो वृद्धोऽजीर्णीतु तं त्यजेत् ॥
मेदोहरः स्थैर्यकरो गौरवव्याधिनाशनः ।
अभ्यङ्गो मार्दवकरो वातश्लेष्मविनाशनः ॥
उद्वर्त्तनं स्थिरकरं कफमेदोविनाशनम् ।
स्नानं दीपनमायुष्यं वृष्यं स्वर्यं बलप्रदम् ॥
कण्डूमलकफस्वेदतन्द्रातृड्दाहपाप्मजित् ।
उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेको बलावहः ॥
तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलहृत्केशचक्षुषोः ।
आलेपनं वृष्यतरं बल्यं दुर्गन्धपाप्मजित् ॥
वासोनवं निर्मलं च श्रीमत्पारिषदं शुभम् ।
हर्षणं काम्यमौजस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥
रजोवश्याय सूर्यांशु हिमानिलनिवारणम् ।
प्रतिश्यायशिरःशूलहरंचोष्णीषधारणम् ॥
ईतेर्विधमनं बल्यं गुप्त्यावरणशंकरम् ।
धर्मानिलरजोम्बुघ्नं छत्रधारणमुच्यते ॥१९॥

जिह्वा का लेखन करनेवाली मुख और जिह्वा की विरसता को जीतनेवाली है, देव गौ ब्राह्मण वृद्धों का पूजन गुरुपूजन आयुवृद्धि और पुण्य का देनेवाला अलक्ष्मी का नाशक है, मंगल की उपासना श्रेष्ठ, वृद्धि देनेवाली, व्यसन की दूर करनेवाली है, चरण धोना चरणों के रोग मल और श्रम का नाश करनेवाला है, दृष्टि का प्रसन्न करनेवाला बलकारक राक्षसनाशक प्रीतिवर्द्धक है, नेत्रों का आंजना पुतली को निर्मल करता है लघुता कर्म में सामर्थ्य स्थिरता क्लेश के सहन करने की सामर्थ्य दोष

क्षय अग्नि वृद्धि कसरत करने से होती है, वात पित्त के रोगवाला वृद्ध अजीर्णवाला कसरत न करे। तेल का मलना मृदुताकारक वात कफनाशक है चूर्ण का मालिश यानि उवटना स्थिरता करनेवाला कफ और मेद का नाशक है। स्नान दीप्तिकारक आयुवर्द्धक बलकारक स्वर और बल का करनेवाला है खुजली मल कफ स्वेद तन्द्रा (आलस्य) तृषा दाह और पाप का जीतनेवाला है गरम जल से शिर को छोड़ नीचे की देह का धोना बलकारक है। उसी से शिर पर परिषेक करना केश और नेत्रों के बलकारक है आलेपन (चन्दनादि) वाजीकर बलकारक दुर्गन्ध और पाप का जीतनेवाला है। नवीन वस्त्र धारण करना निर्मल शोभा सभ्यता का देनेवाला है, रत्न के गहने पहरने से प्रसन्नता काम और बल के देनेवाले हैं। और रज सरदी सूर्य किरण हिमवात की निवारण करनेवाली तथा पीनस शिरशूल की हरनेवाली पगड़ी है, इसका शिर पर धारण करना उपरोक्त गुण करता है। पिशाचादि से रक्षा आगामी दुर्दैव की विघातक है छत्री के धारण करने से धूप वात रज जल से रक्षा होती है॥१९॥

स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणांचानिवारणम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥
पादाभ्यङ्गस्तु चक्षुष्यो निद्राकृत्पाण्डुरोगहा ।
सम्वाहनं मांसरक्तत्वक् प्रसादकरं परम् ॥
प्रीतिनिद्राकरं वृष्यं कफवातश्रमापहम् ।
निद्रायत्तं सुखं दुःखं पुष्टिः कार्श्यं बलाबलम् ॥
वृषताक्लीबताज्ञानमज्ञानं जीवितं न च ॥२०॥

दण्ड का धारण करना गिरने से बचाना शत्रु का निवारण करना अवष्टम्भन आयु का देनेवाला और भय का नाशक है चरणों का मालिश नेत्रों को हितकारक निद्राकारक चरणरोगनाशक है। सम्वाहन (चरण दबाना आदि) मांसरक्त त्वचा का प्रसन्न करनेवाला है प्रीति और निद्राकारक बलकारक कफ वात और श्रम का निवारण करनेवाला है सुख दुःख पुष्टि कृशता बल अबल वृषता नपुंसकता ज्ञान अज्ञान मृत्यु यह सब निद्रा के अधीन हैं॥२०॥

अकालेऽतिप्रसङ्गाच्च न च निद्रा निषेविता ।
सुखायुषीपराकुर्यात्कालरात्रिरिवापरा ॥
रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।
अरूक्षमनभिष्यन्दित्वासीनं प्रचलायितम् ॥२१॥

जो समय पर अति प्रसंग से निद्रा सेवन नहीं करता है उसकी सुख आयु नष्ट होती और यह कालरात्रि के समान है। रात्रि में जागरण करना रूखापन करता है। दिन में सोना स्निग्धता करता है बैठे-बैठे ऊंघना अरूखापन और अनभिष्यन्दि है॥२१॥

आस्यावर्णबलश्लेष्मसौकुमार्यकरीसुखा ।
तालवृन्तोद्भवं वातं त्रिदोषशमनं विदुः ॥
वंशव्यजनजः सोष्णोवातपित्तप्रकोपनः ।
चामरो वस्त्रवातश्च मायूरोवेत्रजस्तथा ॥
एते दोषजितावाताः स्निग्धाहृद्याः सुपूजिताः ।
निवातमारोग्यकरं सुखवातं श्रमापहम् ॥
प्रवातं रौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत् ।
प्राग्वायुरुष्णोऽभिष्यन्दीत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् ॥
सन्निपातज्वरं श्वासमामवातं च कोपयेत् ।
पश्चिमः शिशिरोहन्ति मूर्च्छा दाहं तृषां विषम् ॥
प्राग्गुणो दक्षिणः प्रोक्त उत्तरःपश्चिमानुगः ॥२२॥

तालके पत्ते की पवन मुख का वर्ण बल श्लेष्मा सुकुमारता करनेवाली है और यही ताड़ के पंखे की हवा त्रिदोष के शांत करनेवाली है बांस के पंखे की पवन उष्ण और वात पित्त की कोप करनेवाली है चंवर और वस्त्र की पवन तथा मोर और वेंत के पंखे की पवन वात के दोषों को जीतनेवाली, स्निग्ध हृदय को हितकारक और श्रेष्ठ है। निवात आरोग्यकारक सुख पवन श्रम हरनेवाली है। अत्यंत पवन रूखापन विवर्ण स्तम्भकारक दाह और पित्त को जीतनेवाली है, पूर्व की पवन गरम अभिष्यन्दी त्वचा के दोष बवासीर विष कृमि सन्निपात ज्वर श्वास और आमवात की कोप करनेवाली है, पश्चिम की शिशिर है मूर्च्छा दाह तृषा विषकी नाशक है पूर्व की समान दक्षिण की और

पश्चिम की समान उत्तर की पवन होती है॥२२॥

विश्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकरोगकृत् ।
धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्यायः कफानिलौ ॥
अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यंदशमनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥
आतपः कटुको रूक्षश्छायामधुरशीतला ।
ज्योत्स्नाकषायमधुरादाहासृक्पित्तनाशिनी ॥
तमोभयावहं तिक्तं कुज्झटिः कफपित्तला ॥२३॥

सब ओर की वायु आयु की हरनेवाली प्राणियों को अनेक रोग करती है धूम पित्त और वात का करनेवाला है और आवश्यक कफ और वात का करनेवाला है अग्नि वात कफ स्तम्भ और कपकपी का नाश करनेवाला है। आम अभिष्यन्द का शांत करनेवाला तथा रक्त पित्त का कोप करनेवाला है धूप कटु रूखी है छाया मधुर और शीतल है ज्योत्स्ना (चांदनी) कसेली मधुर दाह रुधिर और पित्त का नाश करनेवाली है अधकार भयदायक तिक्त और कुहरा कफ और पित्त का करनेवाला है॥२३॥

शीताभिष्यन्दिनीवृष्टिस्तन्द्रानिद्राबलप्रदा ।
देशोधन्वामरुत्पित्तकरोरूक्षोष्ण एव च ॥
आनूंपस्तुहिमः स्निग्धोवातश्लेष्मकरो गुरुः ।
साधारणः समगुणः सर्वरोगापहः स्मृतः ॥
हेमन्तः शीतलः स्निग्धः स्वादुरग्नेश्च वृद्धिकृत् ।
शिशिरः शीतलः किञ्चित्रूक्षस्तीक्ष्णोनिलाऽग्निकृत् ॥
वसन्तस्तुवरः सोष्णकफव्याधिसमीरणः ।
ग्रीष्म उष्णोऽतिरूक्षश्च कटुको बलहानिकृत् ॥
वर्षाः शीताविदाहिन्यो वह्निमांद्यानिलार्त्तिदाः ।
शरात्पित्तकफप्रायास्निग्धोष्णासस्यवृद्धिकृत् ॥
पूतिमांसं स्त्रियोवृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणिषट् ॥
सद्योमांसं नवान्नं च बालास्त्री क्षीरभोजनम् ॥

व्रतमुष्णोदकंचैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥
सन्तताध्ययनं वादः परतन्त्रावलोकनम् ।
तद्विद्याचार्यसेवा च बुद्धिमेधाकरोगणः ॥
आयुष्यं भोजनं जीर्णेवेगानामविधारणम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च साहसानां च वर्जनम् ॥२४॥

वृष्टि शीत की प्रकट करनेवाली तन्द्रा निद्रा और बल की करनेवाली है मरुदेश वात पित्त करनेवाला रूखा और उष्ण है अनूपदेश शीतल चिकना वातकारक श्लेष्माकारक तथा गुरु है। साधारण देश समान गुणवाला सर्व रोग का हरनेवाला कहा है। हेमंतऋतु शीतल स्निग्ध स्वादु और अग्नि की वृद्धि करनेवाली है। शिशिरऋतु शीतल किंचित् रूखी तीक्ष्ण वात और अग्नि की करनेवाली है वसंतऋतु सर्व श्रेष्ठ उष्ण कफ व्याधि और वातकारक है। ग्रीष्मऋतु गरम बहुत रूखी कटु बलहानि करनेवाली है। वर्षाऋतु शीत विदाही अग्निमन्दता वात का कष्ट देनेवाली है। शरद् ऋतु पित्त कफयुक्त है स्निग्ध उष्ण और खेती की वृद्धि करनेवाली है। दुर्गंधिवाला मांस वृद्ध स्त्री प्रातःकाल की धूप तत्काल दही प्रभात काल में मैथुन और सोना यह छः वस्तु तत्काल प्राणों की हरनेवाली हैं। ताजा मांस. नवीन अन्न बालस्त्री क्षीरभोजन व्रत (गुरुपूजा) गरम जल, यह तत्काल प्राण की देनेवाली वस्तु हैं। निरंतर पढ़ना विवाद पुराने ग्रंथों का अवलोकन करना उस विद्या के आचार्य की सेवा करनी मेधा और बुद्धि की करनेवाली है। जीर्ण होने पर भोजन करना आयु का करनेवाला है तथा वेगों का न रोकना ब्रह्मचर्य युक्त अहिंसा और साहस का न करना यह आयु का करने वाला है॥२४॥

तन्त्राणां सारमाकृष्यद्रव्याणां गुणसंग्रहः ।
भिषजामुपकाराय रचितश्चक्रपाणिना ॥२५॥

अनेक तन्त्रों का सार लेकर वैद्यों के उपकार के निमित्त द्रव्यों के गुण संग्रहकर यह द्रव्यगुण चक्रपाणि ने किया है॥२५॥

इति श्रीवैद्यमहामहोपाध्याय श्रीमच्चक्रपाणिदत्तकृतद्रव्यगुणसंग्रहः पण्डितज्वाला-प्रसादमिश्रकृतहिन्वीटीकासहितः समाप्तः ॥१॥

अथ ग्रन्थान्तरोक्तपानौषधपरिच्छेदः

बिल्वमूलं मरुच्छेष्मछर्दिघ्नं रक्तपित्तजित् ।
पाटला कफवातघ्नी श्योनाको ग्राहि दीपकः ॥१॥

वेल की जड़ वात श्लेष्मा छर्दि की नाशक रक्त और पित्त की जीतनेवाली है। पाढ़ल कफ वातनाशक सोनापाठा ग्राही और दीपन है॥ १॥

गम्भारीमूलप्रत्युष्णमहितं मानसेषुतत् ।
गणिकारीतु शोथघ्नी हितावातविकारिणाम् ॥२॥

गंभारी (कुम्भेर) की जड़ बहुत गरम मन को अहितकारक है। (मदन-मादनी) शोथनाशक, वात विकारवालों को हितकर है॥२॥

एरण्डमूलं शूलघ्नंवृष्यं वातकफापहम् ।
गोक्षुरो मूलकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥३॥

एरण्ड की जड़ शूलनाशक शुक्रकारक वात और कफनाशक है। गोखरू मूत्रकृच्छ्रनाशक बलकारक वीर्यकर वातनाशक है॥३॥

उष्णावातकफश्वासकासघ्नो कण्टकारिका ।
बृहती पाचनी सोष्णा ग्राहिणी वातनाशिनी ॥४॥

कटेरी गरम है वात कफ श्वास की नाश करनेवाली है। बड़ी कटेरी गरम ग्राहिणी वातनाशिनी है॥४॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफपित्तजित् ।
स्निग्धारुच्या बला वृष्या ग्राहिणी वातपित्तजित् ॥५॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफ और वात की जीतनेवाली है। खरैटी स्निग्ध रुचिकारक शुक्रकारक वाजीकर ग्राही वात पित्त की जीतनेवाली है॥५॥

तद्वन्नागबलात्यर्थं कृच्छ्रे क्षीणे क्षते हिता ।
अश्वगन्धा तु वातघ्नी बल्या वृष्या रसायनी ॥६॥

इसी प्रकार नागबला कृच्छ्र क्षीण और क्षत में अत्यंत हितकारक है। असगंध वातनाशक बलकारक शुक्रकर और रसायन है॥६॥

शतावरीवातपित्तमेहकुष्ठहरासरा ।
हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्बलवर्धनः ॥७॥

शतावरी वात पित्त प्रमेह कुष्ठ हरनेवाली सारक है। हस्तिकर्ण (पलाश) परम वीर्यकर मेधा आयु बल का बढ़ानेवाला है॥७॥

वातपित्तहरा सोष्णाबल्यावृष्या प्रसारणी ।
माषपर्णी महावृष्या चक्षुष्या मुद्‌गपर्णिका ॥८॥

प्रसारिणी (पसरन) वात पित्त की हरनेवाली, गरम, बलकारक शुक्रकर है। माषपर्णी महाशुक्र कारक है। मुद्‌गपर्णी नेत्रों को हित कारक है॥८॥

विशाला कफवातघ्नी चक्षुष्या मूत्रकृच्छ्रजित् ।
शारिवावातपित्तासृक्तृट्छर्दिज्वरनाशिनी ॥९॥

विशाला (इन्द्रायन) कफवातनाशक नेत्रों को हितकारक मूत्रकृच्छ्र की जीतनेवाली है। सारिवा वात पित्त रुधिर तृषा छर्दि ज्वर की नाश कग्नेवाली है॥९॥

अनन्ताग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनीहिमा ।
गुन्दापित्तास्रदाहघ्नी चक्षुष्यां मूत्रकृच्छ्रजित् ॥१०॥

अनंतमूल ग्राही रक्त पित्त प्रशांत करनेवाली शीतल है। प्रियंगु पित्त रुधिर दाह नाशक, नेत्रों को हितकारक मूत्रकृच्छ्र जीतनेवाली है॥१०॥

लोध्रोसृक्कफपित्तघ्नश्चक्षुष्यः शोथवित्सरः ।
तद्वच्छबरलोध्रोपि चक्षुष्यो मृदुरेचनः ॥११॥

लोध रुधिर कफ और पित्त का नाशक नेत्रों को हितकारक शोथ का जीतनेवाला सारक है। इसी प्रकार पठानीलोध नेत्रों को हितकारक मृदु रेचक है॥११॥

मञ्जिष्ठाकुष्ठवैस्वर्यशोथघ्नी वर्णदीपनी ।
लाक्षाभग्नविसर्पघ्नी बल्या त्वग्दोषनाशिनी ॥१२॥

मजीठ कुष्ठ विस्वर शोथनाशक वर्ण दीप्तिकारक है। लाख भग्न और विसर्प रोगनाशक मलकारक त्वग्दोषनाशक है॥१२॥

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं शिशिरं व्रणरोपणम् ।
जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्या च क्षयनाशिनी ॥१३॥

प्रपौण्डरीक शालपर्णी की बराबर पत्तेवाली (पुण्डरिया) नेत्रों को हितकारक ठंडी व्रणरोपन करनेवाली है। जीवन्ती श्वास कास नाश करनेवाली स्वरकारक क्षयनाशक है॥१३॥

अष्टवर्गोऽस्रपित्तघ्नो व्रणहा वातपित्तनुत् ।
मधुकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम् ॥१४॥

अष्टवर्ग (जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली) रक्तपित्तनाशक व्रणनाशक वातपित्तनाशक है। मुलेठी रक्तपित्तनाशक व्रण के शोधन रोपण करनेवाली है॥१४॥

पार्थः पथ्यः क्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः ।
अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो बल्योऽनिलापहः ॥१५॥

अर्जुनवृक्ष क्षत में पथ्य भग्न में पथ्य रक्तकृच्छ्र में हितकारक स्तम्भन करनेवाला है। हाडभांगा अस्थिभग्न में हितकारक है बलदायक वातनाशक है॥१५॥

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यः केश्यः पाण्डुकफापहः ।
तद्गुणः केशराजोऽपिवह्निकृच्च रसायनः ॥१६॥

भांगरा नेत्रों को हितकारी केशों को हितकारी पाण्डु कफ रोग का दूर करनेवाला है। उसी प्रकार का केशराज (कुकर) अग्निकारक और रसायन है॥१६॥

दण्डोत्पलद्वयं श्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ।
रुदन्ती वह्निकृद्वृष्या पित्तघ्नी च रसायनी ॥१७॥

दंडोत्पल (क्षुप) दोनों श्वास कासनाशक तथा अग्नि के दीपन करनेवाले हैं रुदन्ती (चने के से पत्तेवाली) क्षुप अग्नि करनेवाली वाजीकर पित्तनाशक रसायनी है कृत्रिम सुवर्ण प्रयोग में सहकारी है॥१७॥

तालमूली हिता वाते ग्राहिणी च रसायनी ।
द्रोणपुष्पी कफार्शोघ्नी कामलाकृमिशोथजित् ॥१८॥

तालमूली वात में हित ग्राहिणी और रसायनी है। द्रोणपुष्पी कफ और अर्शरोग की नाश करनेवाली कामला कृमि और शोथ की जीतनेवाली है॥१८॥

शोथघ्नी कासहा कण्ठ्या विषघ्नी गिरिकर्णिका ।

वृश्चिकालीविषघ्नी तु कासमारुतनाशिनी ॥१९॥

गिरिकर्णिका (विष्णुक्रांता) शोथ कासनाशक कंठ को हितकारक और विषनाशक है। वृश्चिकाली (क्षुप विच्छाटी) विषनाशक खांसी और वातनाशक है॥१९॥

अहिंस्राविषशोथघ्नी तद्गुणैव सुदर्शना ।
भार्ङ्गीतुश्वासकासघ्नी गुञ्जाकुष्ठव्रणापहा ॥२०॥

सुदर्शना (वृक्षनाम हीसा) अहिंसा विष और शोथ का नाश करनेवाला है। भारंगी श्वास खांसी की नाश करनेवाली है। चौंटली कुष्ठ और व्रण दूर करती है॥२०॥

सूर्यावर्त्तोविबंधघ्नः सैरीयः कफवातजित् ।
आमवातानिलास्रघ्नौ कोकिलाक्षकुलाहकौ ॥२१॥

हुरहुर विबंधनाशक है। झिण्टी कफ और वात की जीतनेवाली है कोकिलाक्ष कुलाहक (लाल तालमखाना) आमवात और रक्तविकार को दूर करनेवाले हैं॥२१॥

हलिनीकरवीरश्च कुष्ठदुष्टव्रणापहौ ।
कोषातकी कफार्शोघ्नी पक्वामाशयशोधनी ॥२२॥

हलिनी करवीर (कलिहारी, कनेर) कुष्ठ और दुष्ट व्रण को दूर करते हैं, कोषातकी कफ और अर्श रोग का हरनेवाली पक्व आमाशय शोधनी है॥२२॥

मेध्याज्योतिष्मतीतीक्ष्णव्रणविस्फोटनाशिनी ।
वयः संस्थापनी ब्राह्मी मेधायुर्बलवर्द्धिनी ॥२३॥

ज्योतिष्मती बुद्धिकारक तीक्ष्ण व्रण और विस्फोटक नाशनेवाली है। ब्राह्मी वय की स्थापन करनेवाली, मेधा आयु और बल को बढ़ाने वाली है॥२३॥

वचायुष्या वातकफतृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी ।
शक्राशनंतु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम् ॥२४॥

बच आयु की बढ़ानेवाली वात कफ तृष्णानाशक स्मृति बढ़ानेवाली है और शक्राशन (भांग) तीक्ष्ण, गरम, मोह करनेवाली तथा कुष्ठनाशक है॥२४॥

बलमेधाग्निकृत् श्लेष्मदोषहारिरसायनम् ।
शंखपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्याक्रिमिविषापहा ॥२५॥

बल बुद्धि और अग्नि की करनेवाली, श्लेष्मदोष हरनेवाली रसायन है। शङ्खपुष्पी तीक्ष्ण उष्ण पवित्र बुद्धि करनेवाली कृमि और विष हरनेवाली है॥२५॥

शिरीषो विषवीसर्पस्वेदत्वग्दोषशोथजित् ।
दूर्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥२६॥

सिरस विष विसर्प त्वचादोष तथा शोथरोग का जीतनेवाला है। दूर्वा रक्त पित्तनाशक खुजली और त्वचा का दोष नाश करती है॥२६॥

हरिद्रा कफपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ।
तद्वद्दार्वी विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥२७॥

हलदी कफ और पित्तनाशक है, खुजली और त्वचा के दोष को दूर करती है। इसी प्रकार विशेषकर दारु हलदी कफ अभिष्यन्द को दूर करती है॥२७॥

अवल्गुजो वातकफपित्तत्वग्दोषनाशनः ।
तद्वदेडगजो गुल्मोदरार्शःकुष्ठजित्कटुः ॥२८॥

सोमराजी बावची वात कफ पित्त और त्वचा के दोष को नष्ट करती है। इसी प्रकार चकवड़ गुल्म उदर अर्श कुष्ठजित् और कटु है॥२८॥

करञ्जनिम्बजफलं क्रिमिकुष्ठप्रमेहजित् ।
विडङ्गमीषत्तिक्तंतु क्रिमिघ्नं विषनाशनम् ॥२९॥

करंज और नीम के फल कृमि कुष्ठ और प्रमेहरोग को जीतते हैं, वायविडङ्ग कुछ तिक्त कृमि और विष की नाश करनेवाली है॥२९॥

रेणुकाकफवातघ्नी दीपनी पित्तकृल्लघुः ।
भूर्जो बल्यः कफास्रघ्नः शिंशपा वातनाशिनी ॥३०॥

रेणुका (विख्यात है) कफवातनाशक दीपनी पित्त करनेवाली तथा लघु है। भूर्जपत्र बलकारक कफ रुधिर विकारनाशक है, शीशम वातनाशक है॥३०॥

आस्फोता विषकुष्ठघ्नी तिनिशो दाहपित्तनुत् ।
घातकीकुसुमं शीतं रक्तपित्तातिसारनुत् ॥३१॥

आस्फोता (हापरमाली) विष कुष्ठनाशक है, तिनिश (तिरिच्छ) दाहपित्त का दूर करनेवाला है। धाय के फूल ठंड़े पित्त और अतिसार के दूर करनेवाले हैं।।३१।।

असनः कफपित्तघ्नः कदरो दन्तदार्ढ्यकृत् ।
निम्बः पित्तकफच्छादव्रणहृत् वातकुष्ठनुत् ।।३२।।

असन कफ पित्तनाशक है, श्वेत खैर दांतों को दृढ़ करनेवाला है नीम कफ पित्त छर्दि व्रण का हरनेवाला वातकुष्ठ को दूर करता है।।३२।।

महानिम्बः परं ग्राही कषायोऽम्लश्च शीतलः ।
भूनिम्बो वातलो रूक्षः कफपित्तज्वरापहः ।।३३।।

महानिम्ब अत्यंत ग्राही कसेला अम्ल शीतल है भूनिम्ब (चिरायता) वातकारक सूखा कफ पित्त और ज्वर का हरनेवाला है।।३३।।

पर्पटः पित्तहृद्दाहज्वरजित् कफशोषणः ।
पाठातिसारशमनी लघ्वीदोषत्रयापहा ।।३४।।

पित्तपापड़ा पित्त हरनेवाला दाह ज्वर का जीतनेवाला तथा कफ का शोषनेवाला है, पाठा अतिसार शांत करनेवाली लघु त्रिदोष दूर करनेवाला है।।३४।।

कुटजः कफपित्तास्रत्वग्दोषार्शोतिसारजित् ।
तद्बीजं ज्वरजित्तिक्तं रक्तपित्तातिसारजित् ।।३५।।

कुटज (इन्द्रजौ) कफ पित्त रुधिर त्वचादोष अर्श और अतीसार का जीतनेवाला है। उसका बीज ज्वर का जीतनेवाला तिक्त पित्त तथा अतीसार का जीतनेवाला है।।३५।।

ह्रीवेरं छर्दि हृल्लासतृष्णातीसारनाशनम् ।
मुस्तकं तिक्तकटुघ्नं वातघ्नं ग्राहिदीपनम् ।।३६।।

ह्रीवेर (सुगंधवाला) छर्दि हृल्लाम तृष्णा अतीसार का नाश करनेवाला है। मोथा तीखा कटु वातनाशक ग्राही और दीपन है।।३६।।

पाचन्यतिविषातिक्ता ग्राहिणी दोषनाशिनी ।
शृङ्गी कफानिलश्वासकासहिक्काज्वरापहा ।।३७।।

अतीस पाचन तीखा तथा ग्रहणी के दोष नाश करनेवाला है। काकड़ासींगी कफ वात श्वास कास हिचकी ज्वर की दूर करने-

वाली है।।३७।।

कट्फलं कफरोगघ्नं श्वासकासज्वरापहम् ।
कुष्ठं वातकफश्वासकासहिक्काज्वरापहम् ।।३८।।

कायफल कफ रोगनाशक, श्वास कास और ज्वर का नाशक है। कूठ वात कफ श्वास कास हिचकी और ज्वर का हरनेवाला है।।३८।।

शोभाञ्जनः कटुस्तिक्तः शोथविद्रधिगुल्मनुत् ।
योषः सरो ज्वरच्छर्दिश्लेष्मपित्तविसर्पजित् ।।३९।।

शोभाञ्जन (सैंजना) कटु तीखा शोथ विद्रधि और गुल्म का दूर करनेवाला है। दुरालभा सारक ज्वर छर्दि श्लेष्मा पित्त विसर्प रोगों को जीतनेवाला है।।३९।।

कटुकी तु सरारूक्षाकफपित्तज्वरापहा ।
रास्ना शोथामवातघ्नी त्रायन्ती कफवातनुत् ।।४०।।

कुटकी रूखी कफ पित्त तथा ज्वर की हरनेवाली है। रास्ना शोथ आमवात की नाश करनेवाली है। त्रायन्ती (त्रायमाण बला लता) कफ और वातनाशक है।।४०।।

वरुणोनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णोऽश्मरीहरः ।
पुष्पं वरुणजं ग्राहिपित्तघ्नमामवातजित् ।।४१।।

वरुण वातशूलनाशक भेदी गरम पथरी रोगनाशक है। वरने का फूल ग्राही पित्तनाशक आमवात का जीतनेवाला है।।४१।।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेहक्रिमीञ्जयेत् ।।४२।।

पारिभद्र (नीम) वात कफ सूजन प्रमेह कृमि का जीतनेवाला है।।४२।।

वासकः कासवैस्वर्यरक्तपित्तकफापहः ।
गुडूची ग्राहिणी बल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ।।४३।।

वासक (अडूसा) खासी विस्वरता रक्त पित्त और कफनाशक है। गिलोय ग्राहिणी बलकारक त्रिदोषनाशक और रसायनी है।।४३।।

दीपनी ज्वरतृट्छर्दिकामलारक्तपित्तनुत् ।
भेदनं पिप्पलीमूलं दीपनं कफनाशनम् ।।४४।।

दीपनी (अजवायन) ज्वर तृष्णा छर्दि कामला और रक्त पित्त की दूर करनेवाली है। पीपलामूल भेदन दीपन और कफ का नाश

करनेवाला है।।४४।।

चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत् स्मृते ।
चित्रकोऽग्निसमः पाके शोथार्शःक्रिमिकुष्ठहा ।।४५।।

चव्य, गजपीपल यह पीपला मूल की समान जानना। चीता पाक में अग्नि की समान सूजन बवासीर कृमि और कुष्ठरोग को दूर करता है।।४५।।

दन्तीसाष्ठीलिकाध्मानगुल्मोदरहरासरा ।
दूषीविषोदरप्लीहगुल्मकुष्ठप्रमेहजित् ।।४६।।

दन्ती अष्ठीलिका अफरा गुल्म उदररोग हरनेवाली सारक है। दूषी विष उदररोग प्लीहा गुल्म कुष्ठ और प्रमेह रोग को जीतनेवाली है।।४६।।

बहुदोषे प्रयोक्तव्यं वह्नितुल्यं सुधापयः ।
अर्कः क्रिमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शःकफदोषजित् ।।४७।।

सुधापय (सेंहुड का दूध) बहुत दोष में देना चाहिये यह अग्नितुल्य है। अर्क (आकवृक्ष) कृमि हरनेवाला तीक्ष्ण सारक और बवासीर कफ के दोषों का जीतनेवाला है।।४७।।

तत्पयः क्रिमिदोषघ्नं हितं कुष्ठोदरार्शसि ।
काणकं फलमुत्क्लेदितीक्ष्णमुष्णं विरेचनम् ।।४८।।

उसका दूध कृमिदोष का दूर करनेवाला कुष्ठ उदर और अर्शरोग में हितकारक है। काणक फल (जमालगोटा) उत्क्लेदि तीक्ष्ण गरम और विरेचन है।।४८।।

धुस्तूरो मदमूर्च्छाकृत्कफघ्नो वह्निपित्तकृत् ।
भल्लातकफलं स्निग्धं क्रिमिदुर्नामनाशनम् ।।४९।।

धुस्तूर (धतूरा) मद मूर्च्छा का करनेवाला है, कफनाशक अग्नि और पित्त का करनेवाला है। भिलावे का फल स्निग्ध कृमि और दुर्नाम (बवासीर) को दूर करनेवाला है।।४९।।

दन्तस्थैर्यकरं ग्राहिकषायं मधुरं च तत् ।
भल्लातवृन्तं मधुरं पक्वजम्बूफलोपमम् ।।५०।।

दांतों का स्थिर करनेवाला, ग्राही कसेला और मधुर है और इसका (कलीका) बंधन मधुर पक्की जामन के फल के समान होता है।।५०।।

गुग्गुलुर्दीपनस्तिक्तः सकषायो रसायनः ।
कटुर्मेदोनिलश्लेष्मकुष्ठघ्नः स्रंसनोलघुः ॥५१॥

गूगल दीपन है तीखा है कसेला और रसायन है कटु मेद वात श्लेष्मा कुष्ठनाशक, स्रंसन और लघु है॥५१॥

स्निग्धकाञ्चनसङ्काशः पक्वजम्बूफलोपमः ।
नूतनो गुग्गुलः प्रोक्तः सुगन्धीयश्च पिच्छलः ॥५२॥

नया गूगल चिकना सुवर्ण की समान पक्के जामन के फल सरीखा होता है और सुगंधिमान तथा पिच्छल होता है॥५२॥

पुराणः शुष्कोदुर्गन्धोमलानां नापकर्षकः ।
अरुणात्रिवृतास्वादुः कषाया मृदुरेचनी ॥५३॥

पुराना और सूखा गूगल दुर्गन्ध और मलों का नहीं खैंचता है। अरुण त्रिवृता (लाल निसोथ) स्वादु कसेली और मृदु रेचक है॥५३॥

रूक्षा च कटुका चैव पाके तिक्ता कफापहा ।
तस्याश्चाल्पान्तरगुणा विज्ञेया त्रिवृतासिता ॥५४॥

कटुका (कुटकी) रूखी पाक में तीखी तथा कफनाशक है। त्रिवृता (निसोत) में इससे बहुत थोड़े गुण हैं॥५४॥

ज्वरहृद्रोगवातासृगुदावर्त्तादिरोगनुत् ।
राजवृक्षोऽधिकः पथ्यो मृदुर्मधुरशीतलः ॥५५॥

राजवृक्ष (अमलतास) ज्वर हृद्रोग वात रुधिर उदावर्त आदि रोग का दूर करनेवाला है अधिक पथ्य मृदु मधुर और शीतल है॥५५॥

तत्फलं मधुरं वृष्यं वातपित्तहरं सरम् ।
रोहीतकोयकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः सरः ॥५६॥

उसका फल मधुर वीर्यकारक वात पित्त हरनेवाला सारक है। रोहित (रोहेडा) यकृत् प्लीहा गुल्म उदर रोग हरनेवाला सारक है॥५६॥

रसायनोवृद्धदारः शोथामवातरोगजित् ॥
अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः क्लेदनः स्रंसनःसर ॥५७॥

वृद्धदार रसायन है शोथ तथा आम वातरोग को दूर करता है। अपामार्ग (चिरचिरा) अग्नि की समान तीक्ष्ण क्लेदी स्रंसन और सारक है॥५७॥

सिन्धुवारो विषश्लेष्मकुष्ठव्रणविषापहः ।
तुलसीपित्तकृद्वातक्रिमिदौर्गन्ध्यनाशिनी ।।५८।।

सिन्धुवार (निर्गुंड़ी) विष श्लेष्मा कुष्ठ व्रण और विष का हरनेवाला है। तुलसीदल पित्तकारी कृमि और दुर्गन्ध का नाशक है।।५८।।

पार्श्वशूलारतिश्वासकासहिक्काविकारजित् ।
मूर्वा तु बृंहणीबल्या कफवातामयान् जयेत् ।।५९।।

पार्श्वशूल अरति श्वास कास हिचकी के विकार का जीतनेवाला है। मूर्वा (मरोरफली) बल मांसकारक है कफ और वात के रोगों को जीतनेवाली है।।५९।।

कषायामधुरारूक्षा वातघ्नी वंशलोचना ।
तुगाक्षीरी क्षयश्वासंकासघ्नी मधुरा हिमा ।
दिङ्मात्र दर्शितं ह्येतत् गृह्यतां पण्डितैः परम् ।।६०।।

वंशलोचन कसेला मधुर रूखा और वातनाशक है तवाखीर क्षय श्वास कासनाशक मधुर और शीतल है, यह औषधी वर्ग दिङ्मात्र दिखा दिया है विशेष पंडित लोग ग्रहणकर सकते हैं।।६०।।

इति श्रीमिश्रसुखानंदसूनुपंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतहिन्दीटीकायां
वनौषधिवर्गः समाप्तः
समाप्तोऽयं ग्रन्थः

कोकसार वैद्यक–नारायणप्रसाद मिश्रकृत तथा इच्छागिरिजीकृत काम कलासार सहित। वात्स्यायन कामसूत्र आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित विषयों को सरलता से समझने के लिये उक्त ग्रन्थ दो भागों में बनाया गया है। पूर्व भाग में स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों के निवारणार्थ उत्तम साधन बताये गये हैं, ईक्षागिरीजी ने कामशास्त्र तथा वैद्यक के अनुभव से कोकशास्त्रों में भी नहीं पाये जाने वाले साधनों का विशद रूप से संग्रह किया है।

गुणों की पिटारी–काशी निवासी स्वामी परमानन्द कृत–

चर्या चन्द्रोदय–हिन्दी टीका सहित

चरक संहिता–(महर्षिप्रवर चरक–ऋषि प्रणीत) मूलमात्र संस्कृत में सजिल्द

ज्वर तिमिर नाशक–क्या खूब चौबे रामप्रसादजीकृत हिन्दी टीका

डाक्टरी चिकित्सासार–पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य संग्रहीत

त्रिशती-(वैद्यवल्लभ) श्री शार्ङ्गधर रचित। संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित

नपुंसकामृतार्णव–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित। इसमें नपुंसकोपयोगी नाना प्रकार के तेल, लेप, घृत आदि वाजीकरण और औषधियां सर्वोत्तम हैं।

पशु चिकित्सा–(वृष कल्पद्रुम) छन्दवद्ध भाषा

पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश–हिन्दी टीका सहित

बालतंत्र–हिन्दी टीका सहित

बृहन्निघण्टु रत्नाकर–पञ्चम भाग–रोगों का कर्म विपाक

बृहन्निघण्टु रत्नाकर–षष्ठ भाग–रोगों का चिकित्सा विभाग

बोपदेव शतक–हिन्दी टीका सहित

भैषज्य रत्नावली–हिन्दी टीका सहित। मूल रचयिता श्री गोविन्ददासजीसेन हिन्दीटीकाकार–स्वं० वैद्य शंकरलालजी। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ट आदि वनस्पतिजन्य प्रयोग और रस, धातु आदि के द्वारा सिद्ध किये रसायन आदि के अनेक प्रयोग हैं।

भवनपाल निघण्टु–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीकासहित। औषधियों के नाम व गुणदोष वर्णित हैं।

महामारी विवेचन–हिन्दी टीका सहित

मानव संतति–प्रसूति शास्त्र अथवा युवतिसखा–कविराज बलवन्त सिंह मोहन वैद्यवाचस्पति कृत

योग महोदधि–(वैद्यक रत्न भंडार)

रसरत्न समुच्चय–वाग्भट्टाचार्य विरचित। भिषग् भूषण पं० शंकर लाल हर शंकर कृत हिन्दी टीका सहित। रस, भस्म आदि का अद्वितीय ग्रंथ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की वैद्य विशारद, परीक्षा में स्वीकृत सहायक पाठ्य ग्रन्थ

वैद्य कलाधर–आरोग्य संबधी उपदेश, निदान व उपाय

वैद्य मनोरमा और धारा कल्प–भिषग्वर कालीदासजी वैद्यकृत।

वैद्यकृत विनोद संहिता–शंकर भट्ट विरचित तथा भिषग्वर गदाधर त्रिपाठी कृत हिन्दी टिप्पणी सहित

वैद्य वल्लभ– हिन्दी टीका

वैद्य मनोत्सव–हिन्दी (नैन सुख वैद्यकृत)

वैद्यक रसराज महोदधि (प्रथम भाग)–भगत भगवानदास कृत। यूनानी हिकमत, यूनानी दवा, जड़ी बूटी और संतो की पुस्तकों का संग्रह।

वैद्यक रसराज महोदधि–द्वितीय भाग (उपरोक्त विषयानुसार शरवत पाक आदि की विधि सहित।

वैद्यक रसराज महोदधि–(तृतीय भाग) जड़ी बूटी द्वारा धातु आदि का शोधन, मारण, गुण तथा अनुपान

वैद्यक रसराज महोदधि (चतुर्थ भाग) इसमें सर्व रोगों के निदान, लक्षण, चिकित्सा और पथ्यापथ्य है।

वैद्यक रसराज महोदधि–(पञ्चम भाग) इसमें प्राचीन ग्रन्थों के अच्छे अच्छे नुस्खे व औषधियों का विचार है।

वैद्यक रसराज महोदधि–चारों भाग की एक जिल्द

शरीर पुष्टि विधान भाषा

शिशुपालन–(वालकों के पालन पोषण की विधि सचित्र और नक्शोंसहित) कविराज वलवन्त सिंह मोहर वैद्य वाचस्पति कृत

शीतला परिहार अर्थात् आरोग्यमृतबिन्दु–हिन्दी में

शुभ सन्तति योग प्रकाश–हिन्दी टीका सहित। वैद्यराज पं० राम प्रसाद राजवैद्यकृत

हितोपदेश वैद्यक–हिन्दी टीका सहित। जैनाचार्य श्रीकण्ठजी कृत। इसमें ज्वरादि रोगों के विलक्षण लक्षण तथा सविस्तार चिकित्सा लिखी है।

होम्योपैथी–(हिन्दी में)–लेखक डा० मुकेश वत्रा

हिन्दी मटेरिया मेडिका–द्वितीय भाग

अपवित्र मोरस चीनी–स्वामी भास्करानन्द प्रणीत

चरक संहिता–वैद्यरत्न पं० राप्रसाद राजवैद्यकृत हिन्दीटीका एव विद्यालंकार आयुर्वेदाचार्य प० शिवशर्माजी द्वारा संशोधित। चरक के आठों स्थान एक से एक अपूर्व होने पर भी 'चिकित्सास्थान' तो अद्वितीय ही है। प्रथम भाग पृष्ठसंख्या ९१६ तथा द्वितीय भाग पृष्ठसंख्या ११३६ है। सुनहरे अक्षरों से मुद्रित सुंदर प्लास्टिक कवर से मंडित संपूर्ण दो जिल्दों में है।

भावप्रकाश–तीनो खण्ड भावमिश्र संग्रहीत। हिन्दीटीकासहित। हिन्दीटीकाकार गो० वा० लालाशालिग्रामजी। संशोधक–डा० कान्तिनारायणजी मिश्र आयुर्वेद विशारद। ए० एल० आई० एम० (मद्रास) डाइरेक्टर ऑफ आयुर्वेद (पंजाब)। इसमें शारीरिक निदान, नाड़ीज्ञान, रस प्रकरण और अष्टांग चिकित्सा आदि वैभव संवधी सभी विषय वर्णित हैं।

माधवनिदान–पं० दत्तरामजी चौवेकृत हिन्दीटीकासहित। इसमें संपूर्ण रोगों का कारण, उत्पत्ति, लक्षण, संप्राप्ति इत्यादि का वर्णन है।

योगचिन्तामणि–पं० दत्तराम चौवेकृत हिन्दीटीकासहित

मुद्रक व प्रकाशकः-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बम्बई.